खण्ड-315, अंक-1
मंगलवार, 11 चैत्र, शक संवत् 1897
(1 अप्रैल, 1975 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 315 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1975

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	1–5
प्रश्नोत्तर	5–41
वित्त मन्त्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना ..	41
गन्ना विकास मन्त्री के बिरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना	42
उच्च शिक्षा मन्त्री तथा माध्यमिक शिक्षा मन्त्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना (जारी)	42–44
कार्य–स्थगन प्रस्तावों की सूचनायें (जारी)	44
उच्च शिक्षा मंत्री तथा माध्यमिक शिक्षा मन्त्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना	44–45
कार्य–स्थगन प्रस्तावों की सूचनायें	45–47
1975–76 के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान–अनुदान संख्या 28–शिक्षा तथा अनुदान संख्या 87–ऋण और अग्रिम शिक्षा (स्वीकृत)	47–102
नियम 51 के अन्तर्गत सूचनायें	103–104
बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर द्वारा हरिजन छात्रों को कापियों को वितरित न करने तथा छात्रवृत्ति के दुरुपयोग आदि के संबंध में नियम 49 के अन्तर्गत चर्चा	104–112
नत्थियां	113–114

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, 1 अप्रैल, 1975

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री बासुदेव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य--357

अंगने लाल, श्री
अजीजुर्रहमान,श्री
अजीत प्रताप सिंह, श्री
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार जमील उर्फ जिमी मियां, श्री (एडवोकेट)
अब्दुल बाकी, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल रहमान खां 'नश्तर', श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
अवधेश कुमार, श्री
आगा जैदी, श्री
आबिद अली, श्री
आशा राम यादव, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
इन्द्र लाल, श्री
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए० सी० ग्राइस ,श्री
ओम प्रकाश, श्री (जिला शाहजहांपुर)
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री
ओम प्रकाश सिंह, श्री
कन्हैयालाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
का० मु० मुहीउद्दीन, श्री
काली चरण यादव, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशी नाथ मेहरोत्रा, श्री
काशी प्रसाद, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र ,श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण दत्त ,श्री (उर्फ बलराज)
कृष्णवीर सिंह,श्री
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्णा राय ,श्री
केदार नाथ अग्रवाल, श्री
केशरीलाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
कैलाश सिंह, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
खूब चन्द्र, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा प्रसाद, श्री
गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री

गया सिंह, श्री
गायत्री देवी, श्रीमती
गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गिरिजा शंकर पाठक, श्री
गुलाब चंद, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोरे लाल शाक्य, श्री
गोविन्द प्रसाद गैरोला, श्री
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
गोविन्द सिंह महरा, श्री
गौरी शंकर, श्री (एडवोकेट)
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्दन सिंह, श्री
चन्द्र नारायण सिंह, श्री
चन्द्र पाल सिंह, श्री
चन्द्र भान आजाद, श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह, डाक्टर
चेतराम गंगवार, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जंगबहादुर, श्री (अतरौलिया, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, श्री (मेहनगर, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर वर्मा, श्री (जिला बाराबंकी)
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदीश मिश्र, श्री
जगदीश अवस्थी, श्री
जगदीश नरायन त्रिपाठी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जफर आजमी, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराज गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
जुगल किशोर यादव, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
झाम लाल अहिरवार, श्री
झिलमिट, श्री
तीरथ राम कोहली, श्री
तेज नरायन त्रिवेदी, श्री
तेज बहादुर, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
त्रिवेनी, श्री
दधीच सिंह, श्री
दया किशन पांडेय, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनारायण पांडेय, श्री
दीपनारायण बन महन्थ, श्री
दुर्योधन, श्री
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री
धर्मपाल सिंह, डाक्टर
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजीर अहमद, श्री
नजुराम, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हे लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नियाज हसन खां, श्री
निर्भय नरायन सिंह, श्री (उर्फ लाल बाबू)
निसार अहमद अन्सारी, श्री
पुरुषोत्तम कौशिक, श्री
पुरुषोत्तम दास, चौधरी
पुरुषोत्तम लाल बधवार, श्री (उर्फ राजा जी)
पूरन चन्द, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला अलीगढ़)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्यारे लाल वर्मा, श्री (जिला एटा)
प्रकाश नारायण गुप्ता डाक्टर

प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभु नारायण, श्री
प्रभु दयाल, श्री
प्रियदर्शी जेटली, श्री
प्रम दत्त, श्री
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री
बंशीधर, श्री
बच्चा पाठक, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बलवीर सिंह यादव, श्री
बलवान सिंह, श्री
बल्देव, श्री
बाके लाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबलाल तिवारी, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू सिंह यादव, श्री
बाल कृष्ण सनवाल, श्री
बृजपाल सिंह यादव, श्री
बैचन राम, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ यादव, श्री
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीषम, श्री
भूपसिंह केन, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मंजर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मनीराम, श्री
मन्ना लाल, श्री
मन्नी लाल, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री

मलखान सिंह, डाक्टर
मलखान सिंह सैनी, श्री
मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महाबीर प्रसाद, श्री
महाबीर सिंह, श्री
महेश सिंह, श्री
माखन लाल मिश्र, श्री
माता प्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मानबहादुर सिंह, श्री
मुन्शी लाल, श्री
मुमताज मोहम्मद, खां
मुलतान सिंह यादव, चौधरी
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मूल चन्द्र राजपूत, श्री
मेघ नाथ सिंह शिशोदिया, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहम्मद अयूब सिद्दीकी, श्री
मोहम्मद असलम, श्री
मोहम्मद महमूद अली खां, श्री
मोहम्मद शकील अहमद, श्री
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यशपाल सिंह, श्री
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ लल्लन जी)
रघुनाथ, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)
रघुराज सिंह, श्री (जिला देवरिया)
रणंजय सिंह, राजा
रणजीत सिंह, "जूदेव", श्री
रणधीर सिंह, श्री
रफीउल्ला, श्री
रमा पन्त, कुमारी
रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राघवेन्द्र सिंह, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राज बहादुर, श्री

राज ब्रजराज सिंह, श्री
राज मंगल पांडेय, श्री
राजेन्द्र कुमार गर्ग, श्री
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद दौनेरिया, श्री
राजेन्द्र शाह, श्री
राधा चरण सिंह, ठाकुर
राम अधार, श्री
राम अौतार सिंह भदौरिया, श्री
रामचन्द्र बक्श सिंह, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी सिंह, श्री
राम दयाल सिंह, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
रामदेव यादव, श्री
राम नाथ, बाबा
राम नारायण पाठक, श्री
राम निहोर, श्री
राम पति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
राम पाल सिंह, श्री
राम पाल सिंह यादव, चौधरी
राम प्यारे तिवारी, श्री
राम प्रकाश यादव, श्री
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री
राम बचन, श्री
राममूर्ति, श्री
राम रतन सिंह, श्री
राम रति बिन्द, श्री एडवोकेट
रामरती देवी, श्रीमती
राम रेखा यादव, श्री
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लखन, श्री (जिला बस्ती)
राम लाल राही, श्री
रामशिरोमणि दुबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
राम समुझ तिवारी, श्री
राम सुन्दर पांडेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम स्वरूप भारतीय, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रामायण राय, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूप राम, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्ष्मी नारायण पांडेय, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लालन शर्मा, श्री
लालू राम, श्री
लोकपति, श्री
विजय कुमार, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विमल प्रसाद तिवारी, श्री
विश्राम, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वीर सिंह सेंगर, श्री
वीरेन्द्र कुमार, चौधरी
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शतरुद्ध प्रकाश, श्री
शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिव कुमार पांडेय, श्री
शिव कुमारी दुबे, श्रीमती
शिवचरन लाल, श्री
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिव प्रसाद, श्री
शिव प्रसाद गुप्त, श्री
शिव लाल, श्री
शिव शंकर सिंह, श्री
शिव सम्पत्ति राम, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम मिश्रा, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा दवी, श्रीमती
श्रीनारायण, श्री (उर्फ भुलई भाई)
श्रीपाल सिंह, कुंवर
श्रीशचन्द्र, श्री
सच्चिदानन्द बाजपेयी, श्री
सत्तार अहमद, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री

सत्य प्रकाश, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय, श्री
सत्यवीर सिंह, श्री
सन्तोष कुमारी पाठक, श्रीमती
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री
सलाहउद्दीन उस्मानी, श्री (उर्फ नब्बन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदराज सिंह, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री
सुल्तान सिंह यादव, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सैयद मुर्तजा अली खां, नवाब
सोहन लाल, श्री (जिला बदायूं)
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
हरिकेवल, श्री
हरिराम, श्री
हरीश कुमार गंगवार, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम सिंह, श्री
हुब राज, श्री
हेमराज, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

नोट--स्वायत्त शासन मंत्री, श्री जगदीश शरण अग्रवाल भी सदन में उपस्थित थे।

प्रश्नोत्तर

तारांकित प्रश्न

मंगलवार, 1 अप्रैल, 1975

[उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली, 1958 के नियम 38 (2) के अन्तर्गत प्राथमिकता प्राप्त तारांकित प्रश्न।]

आजमगढ़ जिले के कतिपय विकास खण्डों की हरिजन वस्तियों में कूप निर्माण

*1--श्री राम सुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)--

क्या समुदायिक विकास मन्त्री दिनांक 17 दिसम्बर, 1974 के तारांकित प्रश्न संख्या 13 के उत्तर के सन्दर्भ में बताने की कृपा करेंगे कि सम्बन्धित कुओं का निर्माण दिसम्बर, 1974 में पूरा हो गया है तथा फतेहपुर मड़ाव विकास खंड के अन्तर्गत ग्राम मस्तफाबाद के पुराने कुओं की मरम्मत करके नवीन कुआं दिखा कर धन प्राप्त करने वाले कर्मचारी के विरुद्ध कौन सी कार्यवाही की गयी ?

समुदायिक विकास मंत्री (श्री बलदेव सिंह आर्य)--

हरिजन सहायक विभाग के अनुदान से बनने वाले 10 कूपों में से एक कूप पूर्णतया निर्मित हो चुका है। शेष 9 भी जगत स्तर तक पूर्ण हो चुके है।

सभी कुएं नव निर्मित हैं। पुराने कुओं की मरम्मत करके नवीन कुएं नहीं दिखाए गये हैं। इसकी जांच करा ली गयी है। अतः किसी कर्मचारी के विरुद्ध कार्यवाही करने का प्रश्न नहीं उठता।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)--

मान्यवर, आज पहली अप्रैल है। पहला सवाल आपका ही लगा दिया गया है।

श्री अध्यक्ष--

माननीय सदस्य आज पहले से ही बहुत जागृत है। (हंसी)

श्री राम सुन्दर पाण्डेय—

क्या मंत्री जी बतायेंगे कि जब पिछली बार इन पुराने कुओं को पूरा कराने की बात कही गई थी तो अब तक पूरा न होने का क्या कारण है ?

श्री बलदेव सिह आर्य—

मान्यवर, जो हरिजन सहायक विभाग द्वारा बनाये गये,दस कुओं का प्रश्न है, उनको यह विभाग अनुदान देता है। इससे कोई भी कुआं नहीं बन सकता है। इसमें जो अनुदान ग्रहीता है, उनको भी अपनी ओर से कुछ योगदान करना पड़ता है। विभाग ने जगत स्तर तक कुओं को पूरा कर दिया है। बाकी के लिये कहा जा रहा है कि वे उनको बना दें।

श्री राम सुन्दर पाण्डेय—

क्या मंत्री जी बतायेगे कि इसकी जांच किसके द्वारा कराई गयी है और जिनके नाम से कुयें बनाये गये हैं उनको पैसा न देकर ग्रामसेवक आदि कर्मचारी को पैसा दे दिया गया है, जिससे कुयें अपूर्ण है ?

श्री बलदेव सिह आर्य—

मान्यवर, इसकी जांच अवर अभियन्ता द्वारा करायी गयी थी। उनकी रिपोर्ट के आधार पर ही मैं जवाब दे रहा हूं कि कुयें जगत स्तर तक पूरे हो गये है। एक की जगत भी बन गयी है। 9 की शेष है।

श्री राम सुन्दर पाण्डेय—

मान्यवर, इन कुओं की कीमत हरिजन विभाग द्वारा विकास खण्ड को दे दी गयी थी और सारे का सारा पैसा कर्मचारियों ने ले लिया। हरिजनों को पैसा नहीं दिया गया। उनको सूचना गलत दी गयी है और इसमें 4/5 ग्राम सेवक मुअत्तिल है और पैसा हड़प लिया गया है। इसलिये सरकार को गलत सूचना दी गयी है क्या मंत्री जी हमारी सूचना को सही मानकर जांच करायेंगे किसी बड़े अधिकारी से जिससे असलियत का पता चल जाय कि हमारी सूचना सही है या उनकी सूचना सही है ?

श्री बलदेव सिह आर्य—

माननीय सदस्य जो कह रहें है ,उसकी सूचना मेरे पास नहीं है उनकी सूचना को सूचना मानकर इस सम्बन्ध में आगे कार्यवाही करने का प्रयत्न करूंगा।

[1 अप्रैल, 1975 के लिये निर्धारित तारांकित प्रश्न]

ए० डी० ओ० (डब्लू) के नये वेतन-क्रम का निर्धारण

*श्री मुहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)—

क्या सामुदायिक विकास मंत्री बतायेगे कि क्या यह सही है कि 1967–68 में प्रदेश के समस्त ए0 डी0 ओ0 (डब्लू) का पद समाप्त कर दिया गया था और उनमें से कुछ की सेवायें परिवार नियोजन एवं शिक्षा विभाग को स्थानान्तरित कर दी गयी थी ? यदि हां, तो सेवारत ए0 डी0 ओ0 (डब्लू) को नये वेतन-क्रम के अन्तर्गत उनके वेतन का फिक्सेशन कर दिया गया है ? यदि हां, तो कब? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री बलदेव सिह आर्य—

जी हां, सेवारत ए0 डी0 ओ0 (डब्लू) के नये वेतन क्रम अन्तर्गत उनके वेतन के निर्धारण के सम्बन्ध मे 37 जिलों से सूचना प्राप्त हो चुकी है शेष से अपेक्षित है जो सूचना आयी है उसके अनुसार 33 सहायक विकास अधिकारी (महिला) का वेतन निर्धारण वर्ष 1974–75 तक हो चुका है, 20 मामलों पर कार्यवाही की जा रही है।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

क्या मंत्री जी बतायेंगे कि इन 37 जिलों के अलावा जिलों से अब तक सूचना क्यों नहीं आ पाई ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

मान्यवर, यह महिलायें दूसरे विभाग में काम करती थीं वहां से उनकी सेवा-पुस्तिका मिलने में विलम्ब हो रहा है, जिससे इन जिलों से सूचना प्राप्त नहीं हुई है ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

यह जो उनके करेक्टर रोल हैं और उनकी जितनी सर्विस बुक हैं एक जगह से दूसरी जगह जाती हैं, तो मैं जानना चाहता हूं कि विभाग ने जिससे सम्बन्ध था उनका करेक्टर रोल, सर्विस बुक आदि क्यों नहीं भेजा ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

मान्यवर, इस सम्बन्ध में तो उन विभागों के साथ जिलाधिकारी जिसे वेतन निर्धारण का कार्य करना है, वे लिखापढ़ी करके प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

सन् 67 से यह मामला चल रहा है और आज 8 वर्ष हो रहे हैं, 37 जिलों से जो सूचना आई है, उनमें से 33 का तो मामला तय कर दिया और 20 मामले अभी विचाराधीन हैं । यह लिखा हुआ है कि विचाराधीन हैं सन् 75 तक । 31-3-75 तक सिर्फ 33 का मामला तय हुआ है और 20 का शेष है । तो इनके 20 का जो बाकी है, उनमें तय करने में क्या आपत्ति है ? क्यों नहीं हो रहा है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

मान्यवर, जो जिलों से सूचना मिली है उसके अनुसार मैं माननीय सदस्य को आपके द्वारा बताना चाहता हूं कि जिन विभागों में ये महिलायें पहले काम करती थीं वहां से अभी तक विवरण जिले के अधिकारियों को प्राप्त नहीं हो सके हैं इसलिए इसमें विलम्ब हो रहा है । कुछ का आ गया है, वह जल्दी ठीक हो जायगा, कुछ का अभी नहीं आया है इसलिये विलम्ब हो रहा है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)--

मान्यवर, ऐसा देखा गया है कि जब एक सरकारी कर्मचारी एक जगह से दूसरी जगह स्थानान्तरित होकर जाता है तो उसकी सर्विस बुक, एल0 पी0 सी0 आदि महीनों नहीं पहुंचती है, तो क्या इस कठिनाई को देखते हुए कि यह शिकायत 90 प्रतिशत केसेज में रहती है, सरकार कोई आदेश जारी करेगी कि तबादला होने के 15 दिन तक वह सर्विस बुक, एल0 पी0 सी0 आदि उसके स्थानान्तरित स्थान पर पहुंच जाय ।

श्री बलदेव सिंह आर्य--

मान्यवर, सुझाव बहुत अच्छा है । इस सम्बन्ध में फिर से आदेश प्रसारित कर दिये जायेंगे ।

श्री रामचन्द्र बक्श सिंह (जिला बाराबंकी)--

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि कितने कर्मचारियों को सेवाओं में ले लिया गया है और कितने कर्मचारियों को सेवाओं में नहीं लिया गया है, और उन्हें निकाल दिया गया है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य—

मान्यवर, इसके लिए तो सूचना नहीं मांगी गई थी अतः मेरे पास सूचना नहीं है। अगर माननीय सदस्य सूचना मागेंगे तो वह सूचना पुनः दे दी जायगी।

श्री मुहम्मद असरार अहमद—

यह किस-किस जिले से सूचना अब तक नहीं आई है माननीय मंत्री जी कृपया उनका नाम बता दें ?

श्री बलदेव सिंह आर्य—

मान्यवर, उन जिलों के तो नाम नहीं हैं। जिन जिलों से सूचना आई है, उनके नाम मालूम हैं।

श्री मुहम्मद असरार अहमद—

जिन जिलों से सूचना नहीं आई वह मैं चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष—

वह तो देर लगेगी। यह तो ब्योरे का हो गया।

श्री बलदेव सिंह आर्य—

मान्यवर, बदायूं की सूचना आ गई है और जिलों की सूचना के बारे में नहीं मालूम।

इलाहाबाद के नैनी क्षेत्र में अस्पताल की स्थापना एवं महिला अस्पताल की स्थापना की मांग

*2—श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

क्या सरकार बतलाने की कृपा करेगी कि इलाहाबाद में नैनी क्षेत्र में सरकार कोई अस्पताल तथा जच्चा-बच्चा अस्पताल की स्थापना करने पर विचार कर रही है ? यदि हां, तो दोनों अस्पताल कब तक चालू हो जायेंगे ? यदि नहीं, तो क्यों ?

स्वास्थ्य मंत्री (श्री प्रभु नारायण)—

नैनी क्षेत्र इलाहाबाद में मेडिकल केयर यूनिट 10 शैय्यायुक्त (अस्पताल) की स्थापना दिनांक 26-1-74 को हो चुकी है। जच्चा-बच्चा अस्पताल उक्त क्षेत्र में स्थापित करने का कोई प्रस्ताव नहीं है। क्योंकि उक्त स्थापित अस्पताल में 4 जनाना शैय्या है और महिलाओं का उपचार करने के हेतु महिला डाक्टर नियुक्त है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करें कि इस मेडिकल यूनिट या जिसमें कहा गया है कि 10 शैय्या युक्त है, उस अस्पताल में डाक्टर, कम्पाउन्डर, वार्ड ब्वाय, आया और स्वीपर आदि हैं, इस भवन में बिजली या नल है कि नहीं है ?

श्री प्रभुनारायण—

इस सम्बन्ध में तो सूचना की जरूरत पड़ेगी। वैसे पुरुष चिकित्सक और महिला चिकित्सक वहां पर हैं। यह मेरी जानकारी है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि सिवाय 10 पलंग के वहां पर कुछ नहीं है। न वहां पर नल है, न बिजली है और न कभी किसी मरीज को दवा मिलती है। यह अस्पताल

मेरे क्षेत्र में है। नैनी एक औद्योगिक क्षेत्र है। तो मेरी जानकारी है। तो क्या माननीय मंत्री जी ऐसी व्यवस्था करेंगे जिसके जरिए वहां पर कम से कम दवाएं मिलें। दूसरी चीज मैं कहना चाहता हूं कि इस जगह पर जच्चा-बच्चा अस्पताल की बहुत बड़ी आवश्यकता है और उसके सम्बन्ध में श्री सालिग राम जैसवाल जी जब मंत्री थे तो मैंने लिखकर भी दिया था। तो क्या मंत्री जी उसके सम्बन्ध में कोई कार्यवाही करेंगे ?

श्री प्रभुनारायण--

वहां डाक्टर हैं और मालवीय जी स्वयं कहते कि थोड़े समय रहते हैं। तो जहां तक अस्पताल की और चीजों को देखने की बात है उनको देखा जायगा। वहां पर दवाओं की व्यवस्था आवश्यक है। जैसा माननीय मालवीय जी ने कहा मैं उसकी जांच करा लूंगा और जो भी सुधार अपेक्षित है, उनको किया जायगा। मैं एक बात और बता देना चाहता हूं कि वहां पर 100 बेड का अस्पताल बनने जा रहा है जिसके लिये जमीन एक्वायर की जा रही है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय--

26 जनवरी, 1974 से अब तक कितने मरीज भरती रहे ?

श्री अध्यक्ष--

यह ब्योरे का प्रश्न है।

प्रदेश के अस्पतालों को सप्लाई की गयी दवाइओं की कीमत का भुगतान और अस्पतालों में दवाइयों की कमी

*3--श्री मोहम्मद रफी खां (जिला शाहजहांपुर) (अनुपस्थित)--

क्या यह सही है कि प्रदेश के अस्पतालों में साल 1973-74 में मुख्तलिफ फर्मों ने जो दवाइयां सप्लाई की थीं उनकी कीमत का भुगतान अभी बाकी है ? यदि हां, तो उनके भुगतान के संबंध में क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री प्रभुनारायण--

सूचना एकत्र की जा रही है।

*4--श्री मोहम्मद रफी खां (अनुपस्थित)--

क्या यह सही है कि इस वक्त प्रदेश के अधिकतर अस्पतालों में जिनमें बलरामपुर अस्पताल, लखनऊ भी शामिल है, दवाओं की सख्त कमी है ? सरकार दवाओं की रेगुलर सप्लाई बनाये रखने के लिये क्या करने जा रही है ?

श्री प्रभु नारायण--

सूचना एकत्र की जा रही है।

कानपुर जिले के विकास खण्ड रसूलाबाद के बी० डी० ओ० के विरुद्ध जांच रिपोर्ट

*5--चौधरी रामपाल सिंह यादव (जिला कानपुर)--

विधान सभा के तृतीय सत्र 1974 के दूसरे मंगलवार के ता0 प्रश्न संख्या 28 के उत्तर के सन्दर्भ में क्या सामुदायिक विकास मंत्री कृपया बतायेंगे कि कानपुर जिले के विकास खण्ड रसूलाबाद के बी0 डी0 ओ0 के सम्बन्ध में जांच अधिकारी ने अब तक क्या कार्यवाही की है ? परगना अधिकारी की जांच रिपोर्ट के आधार पर उक्त बी0 डी0 ओ0 को दोषी पाया गया है ? यदि हां, तो उक्त बी0 डी0 ओ0 को अब तक निलम्बित क्यों नहीं किया गया ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

जांच अधिकारी ने बी0 डी0 ओ0 के विरुद्ध आरोप-पत्र बनाकर कृषि उत्पादन आयुक्त के अनुमोदनार्थ भेजा है, जिसका परीक्षण किया जा रहा है । परीक्षण के उपरान्त अनुमोदित आरोप-पत्र नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही हेतु जांच अधिकारी को भेजा जायेगा । ऐसी स्थिति में बी0 डी0 ओ0 को निलम्बित करना उचित नहीं समझा गया ।

चौधरी राम पाल सिंह यादव--

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जांच अधिकारी ने जो आरोप-पत्र बनाकर कृषि आयुक्त को भेजा है वह क्या है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य---

परगनाधिकारी ने कोई आरोप-पत्र नहीं भेजा है । इस मामले में तो अतिरिक्त जिलाधिकारी (नियोजन) जांच अधिकारी थे उन्होंने जो आरोप-पत्र भेजा है वह इस प्रकार है । मान्यवर यह लम्बा है । आपकी इजाजत हो तो पढ़ूं ।

श्री अध्यक्ष---

एक दो बातें पढ़ दीजिए बहुत लम्बा तो नहीं है ।

श्री बलदेव सिंह आर्य---

जांच में यह कहा गया है कि राम स्वरूप वर्मा ने तकाबी का रुपया लिया था उस रुपये को वापस करने के लिये 12-9-73 को बी0डी0ओ0 के यहां गये और 1,280 रु0 दिए और उनसे रसीद मांगी उन्होंने कहा था कि आज अमीन मौजूद नहीं है। दूसरे रोज आकर रसीद ले लेना। दूसरे दिन जब वह गया तो एक कच्ची रसीद टाइप कराकर बी0 डी0 ओ0 ने दे दी । फिर बाद में वह कई बार गया लेकिन पक्की रसीद नहीं मिली । परगना अधिकारी को जांच में उन्होंने कहा था कि मेरे दस्तदखत किसी कागज पर थे, उस पर किसी ने गलत टाइप कर दिया है और टिकट लगा दिया है । और किसी के बयान नहीं लिए हैं । उस पर हाकिम इलाका ने जिलाधिकारी को यह कहा कि इसमें विभागीय जांच होनी चाहिए तो उसके बाद अतिरिक्त जिलाधिकारी (नियोजन) इसके जांच अधिकारी बनाये गये और उन्होंने ही एक आरोप-पत्र लिखकर कृषि उत्पादन आयुक्त को भेजा है । वे उसका परीक्षण करके उस आरोप-पत्र को वापस भेजेंगे ।

श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी गढ़वाल)---

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि प्रारम्भिक जांच के बारे में जो रिपोर्ट आई वह कब प्राप्त हुई? कब ए0 डी0 एम0 (प्लानिंग) ने आरोप-पत्र ए0 पी0 सी0 को भेजा और उसे निलम्बित करने में सरकार को क्या कठिनाई रही ?

श्री बलदेव सिंह आर्य---

1 अगस्त, 1974 का पत्र है जिसके द्वारा जिलाधिकारी ने हाकिम इलाके की जांच रिपोर्ट को शासन को भेजा है ।

श्री गोविन्दसिंह नेगी---

मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं आया है । मैंने पूछा था कि परगना अधिकारी ने, जो जांच की, उसकी रिपोर्ट कब दी और कब आरोप-पत्र एस0 पी0 के यहां दिया गया और उसे निलम्बित करने में सरकार को क्या दिक्कत है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य---

तिथि की सूचना नहीं है कि किस तिथि को उन्होंने जांच की है ।

श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)--

मंत्री जी ने अभी कहा कि कोई आरोप नहीं हैं । सत्य उसमें नहीं पाया गया । मैं जानना चाहता हूं कि जो कागज शासन के पास आया, उसमें बी० डी० ओ० के खिलाफ टिप्पणी है या नहीं ? एक प्रश्न के उत्तर में माननीय मंत्री जी ने कहा कि उसमें कोई आरोप नहीं है और फिर वे कहते हैं कि आरोप-पत्र ए० पी० सी० के यहां दिया गया। सरकार के पास जो रिपोर्ट आई है, क्या उसमें बी० डी० ओ० के खिलाफ कोई बात सिद्ध होने की बात कही गई है या नहीं ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

परगना अधिकारी ने यह कहा है कि पूरी तरह से साबित नहीं हो पाया कि यह अपराध हुआ है। उन्होंने कहा है कि विभागीय जांच होनी चाहिए ताकि आगे की कार्यवाही चालू रहे ।

श्री हरीश कुमार गंगवार--

जो रिपोर्ट सरकार के पास आई है, वह क्या है और किस अधिकारी की है ? जो आरोप-पत्र है और जो नीचे के अधिकारी ने जांच करके रिपोर्ट भेजी है, उसमें बी० डी० ओ० क खिलाफ क्या-क्या आरोप लगे हैं ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

जो आरोप-पत्र है जिलाधिकारी ने उसे ए० पी० सी० के अनुमोदन के लिये भेजा है।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)--

जिस आदमी ने अनाज के बारे में, ब्याज और तकावी वगैरह ली जब वह जमा करने गया तो उसे कहा गया कि जमा कर दो, अमीन नहीं है । (रसीद दिखाते हुए) यह मेरे पास रसीद है जिसमें लिखा है:

> "आज दिनांक 28-10-72 को श्री राम स्वरूप पुत्र श्री भजन लाल निवासी गहल से बावत तकावी खाद बीज खरीफ 71--72 बकाया मुब्लिक 1,280 रु० प्राप्त किया । छपी रसीद अमीन के मिलने पर दे दी जावेगी ।"

यह है । इस पर टिकट भी लगा हुआ है, मुहर भी है, क्षेत्र विकास अधिकारी के हस्ताक्षर हैं । उसके बारे में आपको क्या कहना है और इसके बारे में ए० डी० एम० (पी०) या परगनाधिकारी ने क्या रिपोर्ट दी है, यह जानना चाहता हूं ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

मान्यवर, परगनाधिकारी ने जो कहा उसका उल्लेख पहले कर दिया है । उसने अन्त में जो लिखा है वह यह है कि इस सम्बन्ध में यह उचित होगा कि विकास खण्ड अधिकारी के विरुद्ध इस प्रारम्भिक जांच के आधार पर विभागीय कार्यवाही आरम्भ करने का कष्ट किया जाय ।

चौधरी रामपाल सिंह यादव--

जैसा अभी माननीय सदस्य ऊदल ने कहा कि यह रसीद की फोटो कापी है जिसमें बी० डी० ओ० ने रुपया लेने के दस्तखत किये हैं और 1972 का मामला है तो उस बी० डी० ओ० को मुअत्तल करने में शासन को क्या कठिनाई है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

जांच अधिकारी ने जो प्रक्रिया अपनाई है, उसमें उसने आरोप-पत्र कृषि उत्पादन आयुक्त के पास भेजा है, देखने के लिये। यहां की स्वीकृति के बाद वह आरोप-पत्र जायगा। उसका जवाब आने के बाद ही उसका निलम्बन करना सम्भव होगा तो कर दिया जायगा।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

माननीय गंगवार ने पूछा था कि आरोप क्या है, उनको पढ़ कर क्यों नहीं सुना देते हैं ?

श्री अध्यक्ष--

वह बहुत लम्बा है। उन्होंने संक्षेप में बता दिया है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

उन्होंने कहा है कि ए0 पी0 सी0 के पास भेजा जाय, उसका अनुमोदन करें---वह क्या है ? दूसरे, इसी के साथ यह बतला दें कि दो वर्ष हो गये, जिस गरीब आदमी ने पैसा दिया उसका पोस्टिंग नहीं हुआ और दो-तीन वर्ष से उससे वसूल हो रहा है तो आप क्या कार्यवाही करेंगे उस सौ-दो-सौ रुपये की जांच के बारे में ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

आरोप-पत्र यह है, मैं पढ़ देता हूं :--

"श्री प्रियव्रत त्रिपाठी, खण्ड विकास अधिकारी, मैथा (कानपुर)---

आपके विरुद्ध निम्नांकित रुपया विकास खण्ड रसूलाबाद के कार्यकाल से सम्बन्धित श्री रामस्वरूप वर्मा, कृषक, निवासी ग्राम गहलू, विकास खण्ड रसूलाबाद के शिकायती-पत्र की जांच के अनुसार लिखित हैं :--

आरोप संख्या 1--आपने श्री रामस्वरूप वर्मा निवासी ग्राम गहलू, विकास खण्ड रसूलाबाद से दिनांक 28-10-72 को मु0 1,279 रु0 45 पै0 खाद एवं बीज तकावी की धनराशि प्राप्त की। बाद में श्री वर्मा के पुनः रसीद हेतु विकास खण्ड कार्यालय आने तथा रसीद की मांग करने पर आपने अपने हस्ताक्षर की एक रसीद उक्त धनराशि की प्राप्त करने की दी, किन्तु उक्त धनराशि को सरकारी खजाने में न जमा कर अपहृत कर लिया। इस पर उक्त सरकारी धनराशि के सम्बन्ध में बदनीयती का आरोप आपके विरुद्ध संयोजित किया जाता है

उपरोक्त आरोप की पुष्टि में निम्नांकित साक्ष्य प्रस्तुत हैं :-- .....

श्री त्रिवेणी सहाय --

मैं पूछना चाहता हूं कि (व्यवधान) मामला बी0 डी0 ओ0 के खिलाफ है उससे साफ जाहिर है कि रुपया लेकर एक नकली रसीद बनायी गयी। वह रुपया खजाने में जमा हुआ ?

श्री अध्यक्ष--

यह तो पहले ही बता दिया गया।

चौधरी रामपाल सिंह यादव--

जब स्पष्ट है कि बी0 डी0 ओ0 ने गबन किया तो उसको आज तक मुअत्तिल क्यों नहीं किया ? सरकार कब तक मुअत्तिल करेगी और 420 का मुकदमा कब दायर करेगी ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

मुअत्तिल ही नहीं, अगर उसके खिलाफ यह आरोप साबित हो गया कि उसने .....

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

सुनाई नहीं पड़ता।

फैजाबाद जिले के बेसिक हेल्थ वर्करों के बकाये वेतन का भुगतान

*6--श्री वेद प्रकाश अग्रवाल (जिला फैजाबाद) (अनुपस्थित)--

क्या चिकित्सा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि फैजाबाद जिले में मया स्वास्थ्य केन्द्र पर कुछ ऐसे भी बी0एच0डब्लू0 हैं जिन्हें अभी तक दिसम्बर, 1966 से 1969 वर्ष के वेतन के एरियर नहीं मिले हैं ? यदि हां, तो ऐसे बी0 एच0 डब्लू0 कौन-कौन हैं तथा एरियर न देने का कारण क्या हैं और कब तक दे दिये जायेंगे?

श्री प्रभु नारायण--

जी हां । ऐसे बेसिक हेल्थ वर्कर निम्नलिखित हैं:--

1--श्री राजा राम लाल श्रीवास्तवा

2--श्री राम जोश शर्मा

3--श्री राम लोट वर्मा

प्रथम दो बी0एच0 डब्लू0 के बकाया वेतन भुगतान हेतु नियमानुसार महालेखाकार की पूर्व सम्परीक्षा स्वीकृति अपेक्षित हैं जिनके वेतन दावे महालेखाकार को भेजे जा चुके हैं । श्री राम लोट वर्मा का बकाया वेतन बिल फैजाबाद में उनके सम्पूर्ण सेवा अभिलेख उपलब्ध न होने के कारण तैयार नहीं किया जा सका है । इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही प्राथमिकता के आधार पर की जा रही है।

महालेखाकार, उत्तर प्रदेश की स्वीकृति के बाद भुगतान की कार्यवाही हो जायेगी ।

केन्द्रीय सरकार द्वारा वाणी एवं श्रुति केन्द्रों की स्थापना का सुझाव

*7--श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

क्या चिकित्सा एवं जन स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वित्तीय वर्ष 1969-70 में केंद्रीय सरकार द्वारा राज्य सरकार को इस आशय का कोई निर्देश प्राप्त हुआ था कि वाणी रोग से पीड़ितों के इलाज के लिये कोई संस्थान खोला जाय और केंद्रीय सरकार सहायता भी देने के लिये तैयार थी ? यदि हां, तो अब तक उक्त संस्थान न स्थापित करने का कारण क्या है?

श्री प्रभु नारायण--

जी हां, वर्ष 1969-70 में भारत सरकार से वाणी एवं श्रुति केंद्रों की स्थापना का सुझाव प्राप्त हुआ था लेकिन उसमें इन केंद्रों के लिये केंद्रीय सहायता देने की बात नहीं कही गयी थी । धनाभाव के कारण अभी तक इन केंद्रों को स्थापित करना राज्य सरकार के लिये संभव नहीं हो सका है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

यह हम सब को मालूम है कि कितने लोग वाणी रोग से पीड़ित हैं । मुझे सूचना है कि केंद्रीय सरकार ने सुझाव भी दिया था और किसी रूप में सहायता, सरकार को दी थी ऐसा संस्थान खोलने के लिये जो लैप्स हो गयी । क्या वह सही है या नहीं? और नहीं तो यह देखते हुए कि बहुत आवश्यक है कि वाणी रोग से पीड़ित व्यक्तियों के इलाज के लिए संस्थान खोला जाय, क्या निकट भविष्य में ऐसा करने का सरकार विचार कर रही है ?

श्री प्रभुनारायण--

जो सूचना मुझे उपलब्ध हुई है उस संबंध में कोई सहायता का आश्वासन इस तरह का किसी शक्ल में प्राप्त नहीं हुआ ?

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

किसी शक्ल में भी आपको केंद्रीय सरकार से कोई धनराशि ऐसी प्राप्त हुई या नहीं और वह लैप्स हुई या नहीं ? अगर यह गलत है और नहीं प्राप्त हुई, तो क्या निकट भविष्य में ऐसी व्यवस्था सरकार करने जा रही है जिसमें वाणी रोगों से पीड़ित लोगों का इलाज हो सके ?

श्री प्रभु नारायण--

इसकी सूचना इस समय उपलब्ध नहीं है हमारे पास कि कोई ग्रांट इस तरह की लैप्स हुई हो । मैंने आज भी क्वैश्चंस को तैयार करते समय इस बात की जानकारी चाही लेकिन जो जानकारी प्राप्त हुई है वह यही है कि केंद्रीय सरकार ने कोई इस तरह की सहायता की बात . . . यह जरूर है कि उनका सुझाव यह जरूर था कि इस संबंध में कोई व्यवस्था की जाय तो उचित होगा । यह केंद्रीय सरकार ने बात कही थी, लेकिन सहायता की बात नहीं रही है, और चूंकि धनाभाव रहा है, इसलिए इस समय संभव नहीं है ।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

मैं सूचना दे रहा हूं, फिर से पता लगावें कि किसी शक्ल में, जिसका नाम नहीं ले पा रहा हूं, आपको कुछ धन मिला केंद्रीय सरकार से ?

श्री अध्यक्ष--

आप प्रश्न कर सकते हैं ।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)--

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि आपके विभाग ने इस बात का सर्वेक्षण कराया है कि उत्तर प्रदेश के किस क्षेत्र में वाणी रोग से ग्रसित ज्यादा लोग बसते हैं और वहीं यह संस्थान खोला जायगा ?

(उत्तर के लिये मंत्री जी को नहीं पुकारा गया ।)

मेरठ जिले में अनियमित ढंग से एलोपैथिक दवाएं बनाने का कारखाना

*8--श्री मुहम्मद असरार अहमद--

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि मेरठ जनपद में कोई अनियमित ढंग से एलोपैथिक दवाएं बनाने का कारखाना जुलाई, 74 में पकड़ा गया था ? यदि हां, तो कितना माल अब तक पकड़ा गया और कितने और कौन-कौन व्यक्ति इस सिलसिले में गिरफ्तार किये गये तथा इस संबंध में अब तक क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री प्रभु नारायण--

जी हां । उक्त कारखाने में निम्नलिखित वस्तुऐं पाई गईं:--

(1)	जिन्क आक्साइड	13 पौंड
(2)	बोरिक एसिड	15 पौंड
(3)	ग्राइप वाटर	13 शीशी
(4)	मैग सल्फ	1 पैकेट

तथा लेबिल, कारटन व बिल बुक आदि ।

इस संबंध में फर्म के मालिक श्री बाबूराम शर्मा को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया है ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

इस संबंध में अगर एफ0आई0 आर0 लिखायी गयी तो वह क्या है और किस-किस के खिलाफ है और अब तक इस मामले में चार्जशीट दी गयी या नहीं ?

श्री प्रभु नारायण--

मान्यवर, इस संबंध में अभी चार्जशीट तो नहीं गयी है, लेकिन जो जांच जारी है, उसकी स्थिति यह है कि चार तरह की जो दवाइयां मिलीं वहां पर, उनमें से दो पर लेबिल गलत लगे हुए थे और साथ ही साथ वह दवाइयां एक तरह से सब-स्टैंडर्ड है । दो दवाइयों के सिलसिले में और प्रयास हो रहा है । फिर आगे की कार्यवाही की जायगी ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

मैंने यह पूछा था कि एफ0आई0आर0 में क्या लिखा है और चार्ज-शीट देने में क्या कठिनाई है और किस-किस के खिलाफ एफ0 आई0 आर0 है ?

श्री प्रभु नारायण--

इस संबंध में तो विभाग के माध्यम से ही कार्यवाही होनी है। उसके संबंध में जांच चल रही है । लैबोरेटरी में जो जांच हुई थी, उसमें दवायें सब-स्टैंडर्ड पायी गयीं । ये औषधियां औषधि एवं सौन्दर्य सामग्री अधिनियम, 1940 की धारा 17 के अनुसार सब-स्टैंडर्ड हैं, जो उक्त ऐक्ट की धारा 27 के अनुसार दंडनीय हैं । पुलिस द्वारा श्री बाबूराम शर्मा को पकड़ लिया गया है । इस संबंध में जो और सूचना उपलब्ध है, वह यह है कि ग्राइप वाटर और मैगसल्फ पर जो लेबिल लगाये थे, वह गलत लगाये गये थे और सबस्टैंडर्ड हैं । इसके अलावा इस फर्म ने जो लाइसेंस लेना चाहिये था वह भी नहीं लिया है । इसमें अभी थोड़ी सी और जांच की जरूरत है क्योंकि दो और दवाइयां जो पायी गयीं उनकी जांच अभी पूरी नहीं हुई है ।

श्री गोविन्द सिंह नेगी--

यह फर्म किन किन अस्पतालों को दवायें सप्लाई करती थी? ऐसा तो नहीं था कि सरकारी अस्पतालों को यही फर्म दवायें सप्लाई करती थी?

श्री अध्यक्ष--

यह आप अटकल लगा रहे हैं।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--

इस मामले में कोई एफ0 आई0 आर0 दर्ज कराया गया था या नहीं? अगर दर्ज कराया गया था तो उसमें क्या लिखाया गया और कौन-कौन से लोग मुल्जिम बनाये गये और जो मुल्जिमान गिरफ्तार हुए, वे जमानत पर बाहर हैं या अभी तक जेलों में हैं ?

श्री प्रभु नारायण--

जहां तक रपट का प्रश्न है रपट तो पहुंची । मैंने साफ तौर से बताया कि पुलिस के माध्यम से गिरफ्तारी करायी गयी है । तो रपट के बाद ही कार्यवाही हुई है । रपट में साफ तौर से यह कहा गया है कि वह अनाधिकारिक तौर से दवायें बना रहे हैं और सब-स्टैंडर्ड बना रहे है और लेबिल भी फौर्ज्ड लगा रहे हैं ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी--

हमें अन्दाज वाला जवाब नहीं चाहिये । मैं तो यह पूछ रहा हूं कि उसमें कौन-कौन से मुल्जिम हैं ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री चेतराम गंगवार (जिला बरेली)--

बाबूराम शर्मा के अतिरिक्त और कितने लोग कार्यकर्ता थे और उनमें से कितने लोगों की गिरफ्तारी की गयी और न गिरफ्तार करने की वजह क्या है?

श्री प्रभु नारायण--

इस सम्बन्ध में सूचना की आवश्यकता एड़ेगी ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

एफ0 आई0आर0 में कितने लोगों के नाम हैं ?

श्री अध्यक्ष--

वह सूचना उनके पास इस समय नहीं है, यह तो उन्होंने अभी बताया है ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--

जानबूझ कर इस मामले को खत्म करने की कोशिश की जा रही है, इसको स्थगित किया जाय और दोबारा लिया जाय।

श्री चेतराम गंगवार--

इस फर्म के मालिक को छोड़ दिया गया है और एक नौकर बाबूराम शर्मा को पकड़ लिया गया है, तो क्या मंत्री जी इसकी दोबारा जांच कराने के आदेश देंगे ताकि दोषी व्यक्ति पकड़े जा सकें ?

श्री प्रभु नारायण--

ड्रग्स ऐक्ट के अन्तर्गत इस पर कार्यवाही हो रही है । दो दवाओं के बारे में एनालीसेस कम्पलीट हो चुकी है, उसमें यह फर्म दोषी पायी गयी है, लाइसेंस न लेने के लिये भी यह फर्म दोषी है । जो और बातें माननीय सदस्यों ने कही हैं उसके साथ ही मैं भी यह महसूस करता हूं कि इसमें और आवश्यक जानकारी प्राप्त करने की जरूरत है और उसे मैं प्राप्त करके सदन के सामने रख दूंगा ।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)--

क्या मंत्री जी ने अपने सेक्रेटरिएट से यह पूछा कि 9 महीने हो गये, इसकी तहकीकात पूरी क्यों नहीं हुई?

श्री प्रभु नारायण ---

मैंने पूछा, तभी मालूम हुआ कि दो की एनालिसेस पूरी हो चुकी है । मेरा स्वयं का विचार है कि इसमें देरी हुई है, इसीलिये मैंने कहा है कि मैं और सरकारी जानकारी प्राप्त करके सदन को पूरी स्थिति बता दूंगा।

चौधरी चरण सिंह--

जब दो में दोषी पाये गये हैं तो इनका चालान क्यों नहीं किया गया, बाकी की तहकीकात बाद में चलती रहती ?

श्री प्रभु नारायण--

चार्जशीट तो पूरी उसी समय दी जायेगी जब तहकीकात पूरी तरह से कम्पलीट हो जायेगी । आधी तो नहीं दी जायेगी ।

(श्री रामायणराय को पुकारे जाने पर)

श्री मुहम्मद असरार अहमद---

मंत्री जी कृपया कानून पढ़ लें, चार्जशीट थोड़े पर भी दी जा सकती है । उनको बचाने के लिये विलम्ब किया जा रहा है । इस सत्र में क्या उत्तर मंत्री जी दे देंगे ?

श्री अध्यक्ष---

उन्होंने स्वयं कहा है कि वे सदन को सूचित करेंगे ।

श्री रामायण राय (जिला देवरिया)---

मैं यह जानना चाहता हूं कि जो भी औषधियां बरामद की गयीं क्या वे सभी एक साथ जांच के लिये भेजी गयीं, या बारी बारी से एक एक करके भेजी गयीं तथा 2 में जो अभी तक जांच नहीं हुई है उसमें बिलम्ब का क्या कारण है ?

श्री प्रभु नारायण---

मान्यवर, मैंने स्वतः कहा है कि इस स्थिति से मैं स्वतः सन्तुष्ट नहीं हूं और इसीलिये मैंने यह बात कही कि इस संबंध में पूरी जानकारी मैं सदन को स्वतः देना चाहता हूं । इस संबंध में माननीय असरार अहमद साहब ने जो बात कही, मैं उनको आश्वासन देना चाहता हूं कि किसी को भी बचाने का प्रयास नहीं होगा । अवश्य इस पर कार्यवाही होगी और हर तरह की कार्यवाही होगी ।

कानपुर जिले के सुपर मार्केट चुन्नीगंज के हानि व लाभ के आंकड़े

*9---चौधरी रामपाल सिंह यादव---

क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेंगे कि कानपुर के सुपरमार्केट, चुन्नीगंज में राज्य सरकार की कुल कितनी पूंजी लगी है और इसमें वर्ष 1972-73 एवं 1973-74 में प्रति वर्ष अलग-अलग कितने रुपये का घाटा या लाभ हुआ ? इस समय उसमें कितने कर्मचारी कार्य करते हैं और उन सबको कुल कितना वेतन प्रतिमास दिया जा रहा है और क्या मंत्री जी को यह भी जानकारी है कि इस सुपर मार्केट में घटिया और मिलावट के माल की बिक्री तथा चोर-बाजारी होती है? यदि हां, तो उसके संबंध में सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की जा रही है ?

सहकारिता एवं पशुपालन मंत्री (श्री नारायण सिंह)---

कानपुर के सुपर मार्केट चुन्नीगंज के लिये कुल 10,25,000 रु0 की राज्य सहायता दी गयी है ।

हानि-लाभ के आंकड़े उक्त सुपर मार्केट में अलग नहीं उपलब्ध हैं । इस सुपर मार्केट का संचालन थोक केंद्रीय उपभोक्ता सहकारी भंडार लि0, कानपुर द्वारा होता है । उक्त संस्था को 1972-73 में 26,000रु0 की हानि तथा 1973-74 में 1,89,000 रु0 का लाभ हुआ ।

सुपर मार्केट चुन्नी गंज के कर्मचारियों की संख्या 47 है । इनके वेतन पर होने वाले व्यय के आंकड़े अलग उपलब्ध नहीं हैं । केंद्रीय उपभोक्ता सहकारी भंडार लि0, कानपुर जो इस सुपर मार्केट को संचालित करता है अपनी सेवा में कुल 75 कर्मचारी रक्खे हैं जिनका मासिक व्यय 21,490 रु0 है ।

शासन को कानपुर सुपर मार्केट में केवल कन्फिस्केटेड माल में गड़बड़ी के बारे म सूचना मिली है जिसकी जांच हो रही है ।

चौधरी रामपाल सिंह यादव---

अभी माननीय मंत्री जी ने कहा कि शासन को कानपुर सुपर मार्केट में केवल माल में गड़बड़ी की सूचना मिली है जिसकी जांच हो रही है, तो क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि माल में गड़बड़ी की क्या सूचना मिली और इसकी जांच कौन कर रहा है?

श्री नारायण सिंह---

कस्टम विभाग ने 22-2-75 को कानपुर सुपर मार्केट पर छापा मारा और इस सिलसिले में उन्होंने 3 लाख 80 हजार रुपये का माल सीज किया । अभी इसकी कोई फाइनल रिपोर्ट नहीं मिली है । बीजक और अन्य सब चीजें देखने पर दो तीन रोज पहले ही कागजात उपलब्ध कराये गये हैं । वे सब मिल गये हैं । जिस वक्त मैंने जबाब के संबंध में सूचना प्राप्त की तो मुझे मालूम हुआ कि उसमें कोई गड़बड़ी नहीं है। उसके सब आंकड़े सही दिये गये हैं ।

श्री गोविन्द सिंह नेगी---

माननीय मंत्री जी ने अभी कहा कि हानि लाभ के आंकड़े अलग-अलग नहीं हैं । माननीय मंत्री जी को विदित होगा कि इस सुपर मारकेट में जो सामान बिकता है, उसके ऊपर सेल्स टैक्स भी लगता होगा उसके ऊपर इनकम टैक्स भी लगता होगा, दोनों चीजें लगती होंगी, तो फिर हानि लाभ के आंकड़े आपके पास क्यों नहीं उपलब्ध हैं ?

श्री नारायण सिंह---

कानपुर में जो हमारा उपभोक्ता सहकारी संघ है, इसकी चुन्नीगंज, लाल बंगला, अरमापुर पनकी, एच0 ए0 एल 0 और आई0 आई0 टी0, इस तरह से 6 संस्थायें हैं जिनके अलग-अलग मार्केट हैं । उन सभी का गोदाम एक है और उसी गोदाम से सब मार्केट को अलग-अलग सामान जाता है लेकिन हिसाब सब का अलग-अलग नहीं रहता है, इसलिये उसके आंकड़े नहीं रखे गये हैं ।

श्री ऊदल---

क्या माननीय मंत्री जी इस बात को हिदायत देंगे कि भविष्य में इन 6 संस्थाओं का हिसाब किताब जो एक ही माध्यम से चल रही हैं, अलग-अलग रखा जायेगा ?

श्री नारायण सिंह---

माननीय सदस्यों की जानकारी के लिये मैं बतला दूं कि आज सुबह अपने सवाल को देखते ही मैंने आदेश पारित कर दिया कि आयन्दा को जब इस तरह के क्वेश्चन्स आवें तो सभी के आंकड़े अलग-अलग आने चाहिये ।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)---

अभी माननीय मंत्री जी ने बतलाया है कि कस्टम विभाग ने छापा मारा और साढ़े 3 लाख रुपये के सामान की गड़बड़ी पायी गयी जो मिली जुली थी । सहकारिता में लोगों का विश्वास ऐसे भी घटता जा रहा है, यदि आये दिन इसी तरह की गड़बड़ी होती रही तो उसकी प्रतिक्रिया लोगों पर क्या होगी क्या इस पर माननीय मंत्री जी ने विचार किया है ? साथ ही जिस व्यक्ति पर इस गड़बड़ी का दायित्व है उसको गिरफ्तार किया गया ?

श्री नारायण सिंह--

मुझको स्वयं सहकारिता विभाग की इस बात पर चिन्ता है कि इस किस्म का छापा मारा गया। लेकिन मुझको खुशी इस बात की है कि जो कस्टम के अधिकारियों ने छापा कानपुर मार्केट में मारा तो वहां के हिसाब किताब को देखने से कोई गड़बड़ी या किसी किस्म की अनियमितता नहीं मिली । इसके विषय में मैं विचार कर रहा हूं कि भारत सरकार को लिखूं

कि अगर ऐसी कोई बात नहीं थी, मार्केट की बदनामी अवश्य हुयी है और आम जनता का विश्वास इससे हटा है, तो आगे के लिये कार्यवाही की जाय जिससे दूसरी बार यह गड़बड़ी न की जा सके।

चौधरी रामपाल सिंह यादव---

क्या मंत्री जी जो इस तरह के मार्केट हैं और जहां पर चोर बाजारी, गबन और माल में घपला होता है तो क्या इसकी जांच करायेंगे ?

श्री नारायण सिंह---

मान्यवर, अगर माननीय सदस्य इस सिलसिले में लिखकर दें तो अवश्य जांच कराऊंगा। ऐसी बातों का आभास हो जाय और मुझको इसकी सूचना मिल जाय तो मैं जरूर प्रयत्न करूंगा कि इसकी जांच कराऊं।

श्री चेतराम गंगवार---

अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी ने अभी बताया कि 72-73 में 26 हजार का घाटा हुआ है, तो मैं जानना चाहता हूं कि इस घाटे का क्या कारण है। आपने यह भी कहा कि इसके अगले वर्ष 1 लाख कुछ रुपये का मुनाफा हुआ। तो यह जो घाटा हुआ इसका क्या कारण है ?

श्री नारायण सिंह-

मान्यवर, मैं माननीय सदस्य को सूचना देना चाहूंगा कि यह जो 1 लाख 89 हजार का घपला हुआ दिखलाया गया है। तो जो कस्टम विभाग द्वारा छापे मारे जाते हैं और बम्बई, कलकत्ता, मद्रास आदि एयरपोर्टों, आदि जगहों पर जो माल बरामद किया गया, तो यह सब माल बिकने आने लगा इसी कारण से यह लाभ हुआ। इससे पहले घाटा था। इस माल के बिकने के कारण लाभ हुआ जब कि पहले घाटा था।

उप मंत्री, शहीद स्मारक समिति, शहीद नगर, जिला गाजीपुर द्वारा दिया गया तथाकथित ज्ञापन

*10---श्री मधुकर दिघे (जिला गोरखपुर)---

क्या मुख्य मंत्री को श्री रघुपति राय, उप मंत्री, शहीद स्मारक समिति, शहीद नगर, गाजीपुर द्वारा माह दिसम्बर, 74 में एक ज्ञापन प्राप्त हुआ है जिसमें गाजीपुर जिले की तहसील मुहम्मदाबाद में शहीद कृषि विश्वविद्यालय, शहीद नगर, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश के नाम से स्थापित करने का निवेदन किया गया है ? यदि हां, तो अब तक इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गयी ?

कृषि मंत्री (श्री वीरेन्द्र वर्मा)---

कथित ज्ञापन शासन में उपलब्ध नहीं है। अतः प्रश्न के शेष भाग की वांछित सूचना देना सम्भव नहीं है।

श्री मधुकर दिघे---

मान्यवर, गाजीपुर जिला क्रांतिकारियों का जिला रहा है और वहां पर जिस संबंध में मैंने प्रश्न भेजा है, कई बार सत्याग्रह हुये हैं, अनशन हुये हैं और सरकार तथा मुख्य मंत्री जी को कई बार ज्ञापन दिया गया। मेरी सूचना के अनुसार, क्या मंत्री महोदय, इन गाजीपुर की क्रान्तिकारी परम्पराओं को ध्यान में रखते हुये मुहम्मदाबाद की जनता की जो मांगें हैं उन पर विचार करने के लिये कोई प्रस्ताव सरकार के सामने रखेंगे ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा---

मान्यवर, मुहम्मदाबाद की जनता की क्या मांगें हैं, इस प्रकार का कोई आवेदन पत्र प्राप्त ही नहीं हुआ है। इसलिये क्या मांगें हैं, किस पर विचार किया जाय ?

(कई सदस्यों के बोलने से शोर)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

आपने तो कहा कि उत्तर उपलब्ध नहीं है।

श्री वीरेन्द्र वर्मा---

मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि मुझे कोई आवेदन पत्र प्राप्त ही नहीं हुआ कि क्या मांगे हैं। हां---आपका प्रश्न अवश्य प्राप्त हुआ। मैंने खोज की, कृषि निदेशक के यहां, कृषि उत्पादन आयुक्त के यहां, मुख्य मंत्री के यहां लेकिन पत्र नहीं मिला। इसलिये अलग से लिखकर अगर सब बातें दें तो अवश्य विचार करूंगा।

सहकारिता विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार की सहकारिता विभाग की विशेष अनुसंधान शाखा द्वारा जांच

*11---श्री मुलायम सिंह यादव (जिला इटावा)---

क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश के सहकारिता विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं लाखों रुपये के गोलमाल के सम्बन्ध में कोई शिकायती-पत्र अगस्त, 74 में शासन को प्राप्त हुआ? यदि हां, तो इस संबंध में क्या कार्यवाही की गयी? यदि नहीं, तो क्यों?

श्री नारायण सिंह---

जी हां।

जांच सहकारिता विभाग की विशेष अनुसंधान शाखा द्वारा करायी गयी। आरोप निराधार पाये गये। अतः कार्यवाही का प्रश्न नहीं उठता फिर भी सुपरवाइजर को इटावा से किसी अन्य जिले में स्थानान्तरित किये जाने के लिये पी० सी० यू० से अनुरोध किया गया है।

श्री मुलायम सिंह यादव---

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले वर्ष मैंने जब कटौती का प्रस्ताव रखा तो 14 करोड़ से ऊपर के आरोप थे। हमारे मंत्री जी ने कहा था कि अगर लिखकर दे दें तो जांच कराऊंगा उनके विरुद्ध कार्यवाही करूंगा। इसी सिलसिले में मैंने प्रार्थना-पत्र दिया और उसमें 22 आरोप हैं। 22 आरोपों की जांच हो गयी तो क्या मंत्री महोदय बतलाने की कृपा करेंगे कि किस अधिकारी ने जांच की और इन आरोपों के सम्बन्ध में मुझसे पूंछतांछ की?

श्री नारायण सिंह---

मान्यवर, इसकी जांच हमारे शेर दिल सिंह, डी० वाई० एस० पी० ने तहकीकात की। मैं नहीं कह सकता कि इस सिलसिले में उन्होंने आपसे बात की या नहीं। लेकिन सुपरवाइजर महोदय से तथा जो मेम्बर थे उनसे बातचीत की।

श्री मुलायम सिंह यादव---

अध्यक्ष महोदय, मुझसे कोई पूंछ-तांछ नहीं की गई। मैंने एक प्रश्न किया था कि पी० सी० एफ० की तरफ से श्री बीरपाल ने सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर किया और उसका खर्चा पी० सी० एफ० ने 80 हजार रु० श्री बीरपाल को दिया तथा 50 हजार रु० श्री छोटेलाल, सचिव को हवाई जहाज से यात्रा मुकदमे की पैरवी करने के लिये दिया। जब कि सहकारिता विभाग में नियम है कि हवाई जहाज से नहीं जा सकते हैं। तो वह क्यों गये? एक तरफ विरोध में जो लड़ रहे हैं उन्होंने 50 हजार रु० लिये और पक्ष में जो लड़ रहे हैं उन्होंने 80 हजार रु० लिये। तो यह क्यों?

श्री नारायण सिंह---

मान्यवर, माननीय सदस्य ने एक नया सवाल मेरे सामने रखा है। आपका जो प्रार्थना-पत्र 16-8-74 का था उसमें इस सवाल का जिक्र नहीं है और न मुझे कोई इसकी सूचना है।

श्री मुलायम सिंह यादव--

मान्यवर, मैंने 14 करोड़ रुपये का आरोप लगाया था।

श्री काशी नाथ मिश्र--

मान्यवर, श्री मुलायम सिंह ने जो प्रश्न किया है इसमें सहकारिता विभाग और रोशनलाल कमेटी की तरफ से एक रिपोर्ट छपी है। पी0 सी0 एफ0 ने जांच किया और उसमें 14 करोड़ की घपलेबाजी का जिक्र किया। इसमें श्री ओम प्रकाश त्यागी और श्री छोटेलाल को जिम्मेदार ठहराया है। रोशनलाल कमेटी ने गबन साबित किया तो कैसे उत्तर आया कि आरोप निराधार पाये गये? इसका जवाब दिलवायें?

श्री नारायण सिंह--

मान्यवर, मैं सूचना देना चाहूंगा कि जो प्रार्थना पत्र 16-8-74 का है उसमें तहकीकात की गई और उसकी जानकारी दे रहा हूं। दूसरी बात जो आप कहते हैं उसकी सूचना मुझे नहीं है।

श्री काशीनाथ मिश्र--

मान्यवर, गवर्नमेंट की रिपोर्ट है, रोशन लाल कमेटी की रिपोर्ट छपी है, यह तो विभागीय लोगों की जानकारी में होगा। यदि मंत्री जी की जानकारी में यह बात नहीं आयी तो क्या अधिकारियों को दण्डित करेंगे?

श्री नारायण सिंह--

मैं अवश्य मालूम करने की कोशिश करूंगा कि क्या रिपोर्ट है? यदि जरूरी होगा तो उनको दण्डित भी किया जायेगा।

श्री मुलायम सिंह यादव--

मान्यवर, मेरा आरोप था कि श्री छोटेलाल जो पी0 सी0 एफ0 के सचिव हैं और श्री श्याम बिहारी लाल जो सहकारिता विभाग के संयुक्त सचिव हैं, तो जब चौधरी साहब मुख्य मंत्री थे उस समय श्री श्याम बिहारी लाल झांसी के डी0 एम0 थे। चौधरी साहब ने श्री श्याम बिहारी लाल के विरुद्ध विजीलेन्स की जांच नियुक्त की थी लेकिन जब मुख्य मंत्री पद से चौधरी साहब हटे तो उसके बाद जांच क्यों नहीं करायी गयी? यदि करायी गई तो क्या आरोप सिद्ध हुये?

श्री अध्यक्ष--

यह अलग प्रश्न है। इस प्रश्न से हट करके प्रश्न है।

चौधरी चरण सिंह--

अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने न तो वह आरोप पत्र पढ़ा है जो श्री मुलायम सिंह ने भेजा था और न रोशनलाल कमेटी की रिपोर्ट को ही पढ़ा है क्योंकि उन्हें समय नहीं मिला होगा। क्या मैं आपके जरिये से मंत्री जी को सुझाव दे सकता हूं कि आज प्रश्न को स्थगित करा दें और पूरी स्टडी कर लें तब उसके बाद जवाब दे दें?

श्री नारायण सिंह--

मान्यवर, आपका कोई शिकायती पत्र 16-8-74 के अलावा नहीं प्राप्त हुआ। 16-8-74 के पत्र के सम्बन्ध में जानकारी दिया है। यदि दूसरा पत्र है तो उसकी जानकारी भी अवश्य दूंगा।

श्री अध्यक्ष--

मंत्री जी ने एक पत्र के बारे में सूचना दी है और दूसरा पत्र उन्हें नहीं प्राप्त हुआ है।

श्री मुलायम सिंह यादव--

मान्यवर, 16-8-74 को मुख्य मंत्री जी को प्रार्थना पत्र दिया है जिसमें 22 आरोप हैं। उसमें यह भी आरोप है कि जब यह झांसी में डी0 एम0 थे तो इनके विरुद्ध विजिलेंस की जांच चल रही थी और जैसे ही माननीय चौधरी साहब मुख्य मंत्री पद से हटे, यह जांच दबा दी गई। जिस अधिकारी के विरुद्ध यह जांच थी वह सन् 1966 से यहीं पर है और उसको प्रमोशन दिया जाता रहा है। श्री छोटेलाल ने सुपर मार्केट को चौपट कर दिया और उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही की नहीं गई बल्कि उनको सचिव पी0 सी0 एफ0 बना दिया गया। इसके बाद भी भ्रष्टाचार के आरोप लगाये गये। तो क्या माननीय मंत्री जी लखनऊ से श्री श्यामबिहारी लाल जो 6--7 वर्ष से हैं, उनको स्थानान्तरण करेंगे और जो आरोप पत्र मैंने दिया है उसके सम्बन्ध में जांच कराने की कृपा करेंगे ?

श्री नारायण सिंह---

मुझे एक ही पत्र आपका मिला है वह भी 16 अगस्त का, दूसरा कोई पत्र मुझे नहीं मिला। यह पत्र आपने फारवर्ड किया है, मेरे पास और उसमें सिर्फ रामजीत सिंह सुपरवाइजर के विरुद्ध एलीगेशन्स हैं। दूसरा कोई पत्र नहीं मिला।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)--

वह आपके अधिकारी पचा गये।

श्री मुहम्मद असरार अहमद---

यहां पर दस्तखत हैं।

(व्यवधान)

श्री मधुकर दिघे--

जो ज्ञापन आपको दिया गया है उसमें पृष्ठ 7 से लेकर 23 तक आरोप हैं। तो क्या यह ज्ञापन आपके पास है ? यदि नहीं, तो जैसा नेता विरोधी दल ने प्रस्ताव रखा है, उसको स्वीकार करते हुये आप पुनः इस प्रश्न पर पूरी जांच कराकर सदन के सम्मुख रखने की कोशिश करेंगे ?

श्री नारायण सिंह---

वह ज्ञापन मेरे पास है नहीं, लेकिन जैसा नेता विरोधी दल ने कहा है, उसको मैं जरूर मालूम करूंगा।

श्री काशीनाथ मिश्र--

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है ? मान्यवर, मैं आपका ध्यान इस प्रश्न की ओर खींचना चाहता हूं जिसमें लिखा है कि "क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश के सहकारिता विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार..." जब प्रदेश में व्याप्त भ्रष्टाचार का प्रश्न आ गया तो वहीं पर रोशनलाल कमेटी का जिक्र आ जाता है, जो सहकारिता विभाग के भ्रष्टाचार से सम्बन्धित है, तो क्या जो जवाब मंत्री जी ने दिया है, वह प्रश्न का पूरा जवाब है, और अगर है, तो उसमें रोशनलाल कमेटी का जिक्र क्यों नहीं आया ?

श्री अध्यक्ष---

इसमें व्यवस्था का क्या प्रश्न है ? आपने तो इस प्रश्न को अत्यधिक स्पष्ट कर दिया है।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा---

इस पर आप दो घंटे की चर्चा करवा दें ।

श्री मुहम्मद असरार अहमद---

मान्यवर, इसी सदन में रोशनलाल कमेटी की रिपोर्ट आई थी, समय खत्म होने के कारण उसे आखिर के लिये रख दिया गया था । फिर सदन उठ गया । उस समय विभाग के सभी कर्मचारी यहां उपस्थित थे और रोशनलाल कमेटी की रिपोर्ट हाउस में रखी गयी थी और उस पर चर्चा भी 15, 20 मिनट हुई थी । फिर उन्होंने कैसे बतलाया, माननीय मंत्री जी को कि रोशनलाल कमेटी की कोई रिपोर्ट ही सदन में नहीं रखी गयी और इसका जिक्र विभाग ने उनसे क्यों नहीं किया ?

श्री अध्यक्ष---

काशीनाथ जी भी यही कह रहे थे कि सहकारिता विभाग में लाखों रुपये का गोलमाल हुआ है और यह प्रश्न उसी से सम्बन्धित है, उसका आप जवाब दे दें ।

चौधरी चरण सिंह---

मैंने यह सुझाव दिया था मालूम होता है उनको पूरी जानकारी नहीं है लिहाजा इसे वह मुल्तवी करालें, लेकिन वह कराना नहीं चाहते । 73 में यह सवाल उठा था । जब सहकारिता विभाग पर बहस थी, तो इस रोशनलाल कमेटी का जिक्र भी उठा था । गोपीनाथ दीक्षित गालिबन उस समय मिनिस्टर इनचार्ज थे । उन्होंने वायदा किया था कि मैं सवा-डेढ़ महीने के अन्दर तहकीकात करा कर इस पर फिर से कार्यवाही करूंगा, लेकिन यह बात शायद सहकारिता विभाग के अधिकारियों ने उनको बताई नहीं । इस विभाग का सबसे बड़ा स्कैन्डल यह है लेकिन माननीय मंत्री जी को कुछ मालूम नहीं है । जिस खत की बात कही जा रही है उसमें 22, 23 चार्जेज हैं । वह कहते हैं उनको वह मिला ही नहीं है ।

श्री नारायण सिंह---

मैं माननीय नेता विरोधी दल को यह सूचना देना चाहूंगा कि असल बात यह हुई कि माननीय मुलायम सिंह ने क्वेश्चन दिया था तो यह स्वाभाविक समझा गया कि जो आपकी खुद की दी हुई दरखास्त है उसी के सिलसिले में आप पूछना चाहते हैं । रोशनलाल कमेटी की जो रिपोर्ट है । (व्यवधान---शोरगुल)

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा---

इस पर दो घंटे की चर्चा करा दी जाय ।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक---

सारे सदन की आंखों में माननीय मंत्री धूल झोंक रहे हैं । (व्यवधान)

श्री चेतराम गंगवार---

दो घंटे की चर्चा इस पर करा दी जाय ।

श्री मुलायम सिंह यादव---

मेरा एक प्रश्न है उसे जरा कर लेने दीजिये । उत्तर में यह नहीं बताया गया है कि प्रार्थना-पत्र नहीं मिला । ये जो दो अधिकारी हैं इसको वह छुपाये हुए हैं । मेरी जानकारी है कि यह प्रार्थना-पत्र छोटे लाल के पास पहुंच गया है । जिसके विरुद्ध आरोप थे उसी के पास यह पहुंच गया है जांच के लिये, लिहाजा उन्होंने छिपा लिया है । इसलिये सवाल को स्थगित करके दुबारा इसकी फिर चर्चा के लिये ले लिया जाय ।

श्री अध्यक्ष---

अब्दुल रऊफ लारी के तारांकित प्रश्न का उत्तर वित्त मंत्री ने 31-3-75 को दिया था।

श्री मधुकर दिघे---

व्यवस्था का प्रश्न है। आपने क्या व्यवस्था दी जो बात मुलायम सिंह जी ने उठाई थी ....

श्री अध्यक्ष---

अब प्रश्नों का समय समाप्त हो चुका है। विधि जो है उसके अनुसार आप सूचना देंगे।

चौधरी चरण सिंह---

सवाल खत्म माना जाय?

श्री अध्यक्ष---

आधे घंटे की चर्चा की विधि है। उसे आप कर सकते हैं।

सचल खाद्य अपमिश्रण इकाई द्वारा कुमायूं तथा गढ़वाल मण्डलों में खाद्य अपमिश्रण की देख रेख

*12---श्री फिरंगी प्रसाद विशारद (जिला गोरखपुर)---

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश में खाद्य पदार्थों में मिलावट को रोक-थाम हेतु शासन ने वर्ष 1972-73 में 11 पद मुख्य सफाई निरीक्षक, एक मुख्य खाद्य निरीक्षक तथा 46 पद 1974-75 में स्वीकृत किये हैं और उक्त सभी पदों के स्वीकृत कर्मचारी केवल मैदानी जिलों में नियुक्त हैं परन्तु पहाड़ी जिलों के लिये उक्त योजना के लिये कोई भी नियुक्तियां नहीं की गयी हैं? यदि हां, तो क्यों?

श्री प्रभु नारायण---

जी नहीं। नैनीताल में तैनात सचल खाद्य अपमिश्रण इकाई द्वारा कुमायूं तथा गढ़वाल मण्डलों में खाद्य अपमिश्रण का कार्य देखा जाता है।

मथुरा जिले की टाउन एरिया, सादाबाद के अध्यक्ष के विरुद्ध शिकायती-पत्र

*13---श्री राम प्रकाश यादव (जिला मथुरा)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जनपद मथुरा की टाउन एरिया, सादाबाद के वर्तमान अध्यक्ष द्वारा टाउन एरिया में किये गये भ्रष्टाचार व अनियमितताओं के बारे में कितने शिकायती-पत्र विगत वर्ष में प्राप्त हुये? मुख्य शिकायतें क्या हैं और उन पर क्या कार्यवाही की गयी?

स्वायत्त शासन मंत्री (श्री जगदीश शरण अग्रवाल)---

गत वर्ष अध्यक्ष, श्री छीतर मल अग्रवाल के विरुद्ध दो शिकायती-पत्र शासन को प्राप्त हुये थे।

शिकायती-पत्रों को मूल रूप में जिलाधिकारी, मथुरा को भेजकर जांच करके आख्या भेजने के आदेश दिये गये हैं।

नोट---तारांकित प्रश्न संख्या 11 के उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया।

प्रेसक्राइब्ड अथारिटी, गाजियाबाद (मेरठ) के सहायक अभियन्ता के विरुद्ध शिकायती-पत्र

*14--श्री रेवती शरण मौर्य (जिला मेरठ)--

क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रेसक्राइब्ड अथारिटी, गाजियाबाद (मेरठ) के सहायक अभियन्ता (श्री शशी भूषण) के विरुद्ध 1972-73 और नवम्बर, 74 तक भ्रष्टाचार और अनियमितताओं संबंधी कितनी शिकायतें प्राप्त हुयीं और शिकायतें क्या हैं ? तथा उन पर अब तक क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

श्री शशि भूषण, सहायक अभियन्ता के विरुद्ध भ्रष्टाचार व अनियमितता से सम्बन्धित कोई शिकायत नवम्बर, 1974 तक शासन को प्राप्त नहीं हुई है।

गोरखपुर जिले की जानीपुर ताड़ी की दूकान का लाइसेंस

*15--श्री शारदा प्रसाद रावत (जिला गोरखपुर) तथा श्री अब्दुल रऊफ लारी--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि गोरखपुर जनपद की बांसगांव तहसील में जानीपुर ताड़ी की दुकान मंगरु पासी पुत्र सहदेव पासी के नाम जो अस्थायी रूप से नवम्बर, 73 में स्वीकृत हुयी थी, को किसके आदेश से खारिज किया गया ? क्या यह सही है कि माह नवम्बर, 1973 की विभिन्न तिथियों में आबकारी निरीक्षक, बांसगांव द्वारा खजाने में राजस्व शुल्क मंगरु से जमा कराया गया ? यदि हां, तो क्यों ?

आबकारी मंत्री (डाक्टर चरण सिह)--

नवम्बर, 1973 में श्री मंगरु के नाम जानीपुर ताड़ी की दुकान स्वीकृत नहीं की गयी थी। यह सही है कि आबकारी निरीक्षक ने नवम्बर, 1973 में मंगरु से खजाने में राजस्व शुल्क जमा कराया था। इस सम्बन्ध में निरीक्षक का स्पष्टीकरण प्राप्त किया जा रहा है।

*16--श्री फिरंगी प्रसाद विशारद--

[विस्तीर्णता के कारण निरस्त]

नगरपालिका, इटावा की इमारत पर अनधिकृत कब्जा

*17--श्री मुलायम सिंह यादव--

विधान सभा के द्वितीय सत्र 1974 के 9वें मंगलवार के तारांकित प्रश्न संख्या 3 के उत्तर के संबंध में क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि कांग्रेस पार्टी द्वारा जनपद इटावा की नगरपालिका की इमारत पर अनधिकृत किये गये कब्जे को हटाने की कार्यवाही नगरपालिका ने की थी ? यदि नहीं, तो क्या सरकार इस कब्जे को तत्काल हटाने की कृपा करेगी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

अध्यक्ष नगरपालिका, इटावा ने कब्जे को हटाने की कार्यवाही की थी परन्तु अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी ने अभी खाली नहीं किया है। सरकार ने इस कब्जे को हटाने हेतु जिलाधिकारी, इटावा को आवश्यक आदेश दे दिये हैं।

स्वर्गीय बजरंग बहादुर सिंह, लिपिक, जिला नियोजन कार्यालय, इलाहाबाद को पारिवारिक पेंशन

*18—श्री अठई राम (जिला इलाहाबाद)—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि श्रीमती इसरानी देवी, पत्नी स्व0 बजरंग बहादुर सिंह, लिपिक, जिला नियोजन कार्यालय, इलाहाबाद को सन् 1971 में ए0 जी0, इलाहाबाद द्वारा पारिवारिक पेंशन स्वीकृत की गयी थी परन्तु यह पेंशन आज तक नहीं मिली है ? यदि हां, तो क्यों और सरकार ने पेंशन शीघ्र दिलाये जाने के सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की ?

श्री बलदेव सिंह आर्य—

स्व0 श्री बजरंग बहादुर सिंह के विरुद्ध राजकीय धनराशि रु0 20,936.81 के अपहरण का मामला ह, जिसकी वसूली की जानी है। धन की वसूली से सम्बन्धित कार्यवाही चल रही है। स्व0 श्री सिंह के विरुद्ध उक्त राजकीय धनराशि का अपहरण का मामला होने के कारण पेंशन का भुगतान नहीं किया जा रहा है।

पंजीकृत किये गये प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता भंडार

*19—श्री बाबूलाल वर्मा (जिला बहराइच)—

क्या सहकारिता मंत्री यह बतायेंगे कि वर्ष 1973 तथा 74 में कितने प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता भंडारों का पंजीकरण किया गया ?

श्री नारायण सिंह—

सूचना एकत्र की जा रही है।

*20—श्री राम अधार, श्री ओम प्रकाश सिंह तथा श्री शिव सम्पत्ति राम—

[8वें गुरुवार में तारांकित प्रश्न 14 पर स्थानान्तरित]

*21—श्री बाबू लाल वर्मा—

[3 रे मंगलवार में तारांकित प्रश्न संख्या 65 पर उत्तरित।]

उत्तर प्रदेश उपभोक्ता सहकारी संघ लि०, लखनऊ द्वारा कन्फिस्केटेड फ्रिज की खरीद

*22—श्री राम सुन्दर पांडेय—

क्या मुख्य मंत्री कृपया यह बतलायेंगे कि उत्तर प्रदेश सहकारी उपभोक्ता संघ, लखनऊ ने एक इम्पोर्टेड फ्रिज वर्ष 1974–75 में खरीदा था जिसे लागत मूल्य से भी कम में सहकारिता विभाग के एक उच्च अधिकारी ने बिना शासन से पूर्व स्वीकृति लिये ही अपने या अपने परिवार के किसी सदस्य के नाम खरीद लिया है ? यदि हां, तो शासन ने इस विषय में क्या कार्यवाही की ?

श्री नारायण सिंह—

उत्तर प्रदेश उपभोक्ता सहकारी संघ लि0, लखनऊ ने वर्ष 1974–75 में एक राज्य सात (कन्फिस्केटेड) फ्रिज नेशनल कोआपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन की बम्बई शाखा से क्रय किया था, किन्तु उस फ्रिज को संघ ने सहकारिता विभाग के किसी अधिकारी या उसके परिवार के किसी सदस्य को अथवा लागत मूल्य से कम पर नहीं बेचा है।

अतएव इस संबंध में शासन द्वारा किसी प्रकार की कार्यवाही करने का प्रश्न नहीं उठता।

लखनऊ नगरमहापालिका, जल कल विभाग के अभियन्ता के विरुद्ध शिकायती-पत्र

*23--श्री प्रियदर्शी जेटली (जिला फैजाबाद) तथा श्री निसार अहमद अंसारी (जिला फैजाबाद)--

क्या मुख्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि लखनऊ नगरमहापालिका, जल-कल विभाग एवं नगर अभियन्ता (जल) के विरुद्ध भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोपों का कोई शिकायती-पत्र माह अक्तूबर, 1974 को प्राप्त हुआ ? यदि हां, तो उस पर अब तक क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री जगदीशशरण अग्रवाल--

जी हां, शिकायती-पत्र में उल्लिखित आरोपों की जांच की गई और जांच की रिपोर्ट शासन के विचाराधीन है ।

*24--श्री हरीश कुमार गंगवार--

[6 वें गुरुवार में तारांकित प्रश्न संख्या 64 पर स्थानान्तरित ।]

परिवार नियोजन विभाग के प्रसार शिक्षकों के स्थायीकरण की मांग

*25--श्री प्रताप नारायण (जिला हमीरपुर)--

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि परिवार नियोजन विभाग में 8-8, 10-10 साल से प्रसार शिक्षक अस्थायी रूप से कार्य कर रहे हैं जबकि उत्तर प्रदेश शासन ने 3 वर्ष से अधिक अवधि से कार्य करने वाले कर्मचारियों को स्थायी किये जाने के आदेश बहुत पहले दे दिये थे ? यदि हां, तो क्यों ? इनको कब तक स्थायी किया जायेगा ?

श्री प्रभुनारायण--

जी हां ।

परिवार नियोजन योजना केन्द्र द्वारा शत प्रतिशत पोषित योजना है तथा यह एक अस्थाई विभाग है । अतः इस विभाग के अन्तर्गत पदों को स्थायी किये जाने का निर्णय अभी तक नहीं लिया जा सका है । कब तक ऐसा निर्णय लिया जायगा, यह बताना संप्रति सम्भव नहीं है ।

*26--श्री हरिकेवल तथा श्री जमुना प्रसाद बोस--

[8 वें गुरुवार में तारांकित प्रश्न संख्या 16 पर स्थानान्तरित ।]

सहायक कृषि निरीक्षक, गोरखपुर का कथित अवशेष वेतन

*27--श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी--

क्या कृषि मंत्री बताने का कष्ट करेंगे कि सहायक कृषि निरीक्षक जो इस समय कृषि अधिकारी, गोरखपुर के कार्यालय से सम्बद्ध है, का वेतन 1973 से अब तक उनको नहीं मिला और इस बीच 10 बार ट्रान्सफर होने पर भी अब तक यात्रा भत्ता का भुगतान नहीं हुआ ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--

इस समय कार्यरत पांच सहायक कृषि निरीक्षकों में से किसी के सम्बन्ध में ऐसा मामला नहीं है ।

*28--श्री हरिकेवल तथा श्री भगवती सिंह विशारद--

[6ठें मंगलवार के लिये स्थगित ।]

इटावा जनपद के विकास खण्डों को दी गयी जीप गाड़ियां

*29—श्री गोरेलाल शाक्य (जिला इटावा)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इटावा जनपद में कितने विकास क्षेत्रों के पास जीप गाड़ियां इस समय हैं और क्या वे सभी जीप गाड़ियां अपने-अपने विकास क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री बलदेव सिंह आर्य—

इटावा जिले में 7 विकास खण्डों की गाड़ियां निष्प्रयोज्य घोषित की जा चुकी हैं। उन में से 3 विकास खण्डों में तथा 2 अन्य विकास खण्डों में चालू हालत में गाड़ियां शासन द्वारा उपलब्ध कर दी गई है। 2 अन्य विकास खण्डों की गाड़ियों में ज्यादा मरम्मत होना है। 4 विकास खण्डों को पौष्टिक आहार योजना के अन्तर्गत यूनीसेफ द्वारा गाड़ियां दी जा चुकी हैं। उनमें से वे दो उपर्युक्त विकास खण्ड भी शामिल हैं, जिनकी गाड़ियां निष्प्रयोज्य घोषित की जा चुकी हैं।

इस प्रकार इटावा जनपद में उत्तर प्रदेश सरकार की 5 गाड़ियां तथा यूनीसेफ की 4 गाड़ियां कार्य कर रही हैं।

विधायकों को विकास क्षेत्रों की जीप के प्रयोग करने की सुविधा की मांग

*30—श्री गोरेलाल शाक्य—

क्या विधायकों को अपने क्षेत्र के विकास क्षेत्रों में विकास कार्यों का निरीक्षण करने के लिये विकास क्षेत्रों की जीपों को इस्तेमाल करने की सुविधा प्राप्त है ? यदि नहीं, तो क्यों ? यदि हां, तो इस सुविधा को इस्तेमाल करने हेतु किस अधिकारी से सम्पर्क स्थापित करना पड़ता है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य—

(1) जी नहीं।
(2) विधायकों को गाड़ियां देने का प्रश्न सरकार के विचाराधीन नहीं है।
(3) प्रश्न नहीं उठता।

मुरादाबाद नगर में पेय जल की आपूर्ति का अनुबन्ध और अनुबन्ध को समाप्त करने पर विचार

*31—श्री दिनेश चन्द्र रस्तोगी (जिला मुरादाबाद)—

क्या स्वायत्त शासन मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि मुरादाबाद नगर में वाटर-वर्क्स द्वारा पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था वर्तमान में किसी निजी ठेकेदार से कराई जा रही है ? यदि हां, तो किन शर्तों पर तथा यह ठेका कब तक के लिये हैं ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल—

जी हां। मुरादाबाद नगर में पेयजल की आपूर्ति एक अनुबंध में दी गई शर्तों के अन्तर्गत मेसर्स नुरुल्ला गजनफरुल्ला द्वारा कराई जा रही है। यह अनुबंध सन् 1985 तक के लिये है।

*32—श्री दिनेश चन्द्र रस्तोगी—

इस बात को ध्यान में रखते हुये कि वर्तमान व्यवस्था निरन्तर बढ़ती हुई आबादी को पेय जल हेतु पानी दे पाने में पूर्णतया विफल हो चुकी है ? क्या सरकार वर्तमान व्यवस्था में बदल करने पर विचार कर रही है ? यदि हां, तो नवीन योजना क्या है तथा यह कब तक चालू हो जायेगी ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

मुरादाबाद जलकल की ठेकेदारी व्यवस्था जल्दी से जल्दी समाप्त करने का प्रश्न शासन के विचाराधीन है ।

पी० एम० एस० अधिकारियों की पदोन्नति एवं उनके पुनरीक्षित वेतन का भुगतान

*33--डाक्टर जितेन्द्र कुमार अग्रवाल (जिला सुल्तानपुर)--

क्या स्वायत्त शासन मंत्री कृपया बतायेंगे कि कितने पी0 एम 0 एस 0 के अधिकारियों की शासनादेश सं0 9939 से-3/5-255-163, दि0 31-12-71 द्वारा सेलेक्शन ग्रेड में पदोन्नति की गई ? इनमें से कितने अधिकारी ऐसे हैं कि जिनका वेतन उपरोक्त शासनादेश की तिथि से पुनरीक्षित न करके जुलाई, 1972 में किया गया, तथा उन्हें जनवरी से जून, 1972 तक पुनरीक्षित वेतन नहीं दिया गया ? क्या सरकार इन अधिकारियों का वेतन उक्त शासनादेश की तिथि से पुनरीक्षित कराके जून, 1972 तक का भी शीघ्र दिलाने की व्यवस्था करेगी ?

श्री प्रभुनारायण--

61 अधिकारी । शेष भाग में उठाया गया प्रश्न शासन के विचाराधीन है ।

राजकीय सेनेटरी इन्सपेक्टरों की ज्यष्ठता सूची

*34--श्री बेनीप्रसाद वर्मा (जिला बाराबंकी)--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बतानें की कृपा करेंगे कि राजकीय सेवारत सेनेटरी इन्सपेक्टर समवर्ग की कोई ज्येष्ठता सूची निदेशक द्वारा बनाई गई है ? जिसका प्रकाशन कर्मचारियों की बार-बार मांग करने के बावजूद भी अभी तक नहीं किया गया है ? यदि हां, तो क्यों और इसके लिये कौन उत्तरदायी है ?

श्री प्रभु नारायण--

जी हां । स्थायी राजकीय सेवारत सेनेटरी इन्सपेक्टरों की ज्येष्ठता सूची बनायी गयी है जिसके प्रकाशन सम्बन्धी कार्यवाही प्रगति पर है । अतः इस मामले में किसी को उत्तरदायी ठहराने का प्रश्न नहीं उठता ।

*35--श्री श्रीनारायण--

[6 ठें मंगलवार के लिए स्थगित]

*36--श्री पुरुषौतम कौशिक तथा श्री बांके लाल--

[6 ठें मंगलवार के लिए स्थगित ।]

*37--श्री राम नारायण पाठक--

[6 ठें मंगलवार के लिए स्थगित] ।

गोंडा जिले में औषधि निरीक्षक के पद पर कथित नियुक्ति

*38--श्री दशरथ सिंह (जिला गोंडा)--

क्या स्वास्थ्य मन्त्री कृपया बतायेंगे कि जनवरी, 1974 में गोंडा जिले में कितने लोगों की नियुक्ति ड्रग इन्सपेक्टर के पद पर हुई थी ? क्या उनमें से कुछ लोगों को हाल ही में निकाल दिया गया है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री प्रभु नारायण---

जनवरी, 1974 में गोंडा जिले में किसी व्यक्ति की नियुक्ति औषधि निरीक्षक के पद पर नहीं हुई है। अतः शेष प्रश्न नहीं उठता।

तिर्वा पुलिस थाना एवं पशु-चिकित्सालय का भवन

*39--श्री झामलाल अहिरवार (जिला फर्रुखाबाद)--

क्या पशुपालन मंत्री बताने की कृपा करगे कि तिर्वा पुलिस थाना और पशु-चिकित्सालय एक ही बिल्डिग में स्थित है ? क्या उसको अलग बनवाने के लिये सरकार इरादा रखती है ? यदि हां, तो कब तक ? क्या यह सही है कि चिकित्सालय के लिये एक एकड़ जमीन कई सालों से आरक्षित है ?

श्री नारायण सिंह---

जी हां।

जी नहीं। यह पशु-चिकित्सालय जिला परिषद, फर्रुखाबाद के नियंत्रण में है।

जी हां 1.01 एकड़ भूमि ग्राम समाज की ओर से आरक्षित की गई थी।

मेरठ जिले की कंकड़ खेड़ा, टाउन एरिया के लिये पेय जल योजना की मांग

*40--श्री मोहनलाल कपूर (जिला मेरठ)--

क्या स्वायत्त शासन मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि कंकड़ खेडा टाउन एरिया, मेरठ के लिये जल-कल योजना स्वीकार कर ली गई? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री जगदीशशरण अग्रवाल--

जी नही।

नगर क्षेत्र समिति कंकड़ खेड़ा मेरठ का कोई प्रस्ताव शासन को प्राप्त नहीं हुआ है।

बहराइच जिले में नये अस्पताल खोलने की मांग

*41--श्री कमला प्रसाद वर्मा (जिला बहराइच)--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि बहराइच जिले में नये अस्पताल खोलने सम्बन्धी कितने लिखित सुझाव कब-कब मार्च, 1974 से सितम्बर, 1974 तक प्राप्त हुये हैं और उन पर अब तक सरकार ने क्या-क्या कार्यवाही की है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री प्रभु नारायण--

प्रश्नगत अवधि में दो पत्र दिनांक 30 जून, 1974 तथा 7 अगस्त, 1974 को प्राप्त हुये।

ग्रामीण अंचलों में एलोपैथिक चिकित्सालय की योजना न होने के कारण उक्त पत्रों में वर्णित स्थानों पर चिकित्सालय खोलने के प्रश्न पर विचार नहीं किया जा सका।

आजमगढ़ जिले के सदर अस्पताल के सर्जन, श्री के० बी० श्रीवास्तव पर हमला

*42--श्री रामसुन्दर पान्डेय--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि आजमगढ़ सदर अस्पताल के विशिष्ट सर्जन, श्री के0बी0 श्रीवास्तव पर अभी हाल ही में कुछ असामाजिक तत्वों ने हमला किया और उन्हे अत्यन्त घायल कर दिया और इस घटना की जांच करने स्वास्थ्य संचालक, उत्तर प्रदेश के कार्यालय से कोई अधिकारी गया था ? यदि हां, तो जांच रपट क्या है और शासन ने इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यवाही की ?

श्री प्रभु नारायण--

जी हां ।

जांच रिपोर्ट में यह कहा गया है कि नया जिला अस्पताल, आजमगढ़ शहर से बाहर स्थित है । आई0टी0आई0 एवं पालिटेक्निक के छात्र जरूरत या बिना जरूरत के अस्पताल में आते है, और डाक्टरों से मनमानी ढंग से मांगी गई दवाओं को देने के लिये मजबूर करते हैं । दवा न देने अथवा देने में असमर्थता प्रगट करने पर धमकियां देते हैं । वे महिला रोगियों के वार्ड में घुसकर छेड़खानी भी करते हैं । उपरोक्त दो संस्थाओं के अतिरिक्त अराजकतत्व द्वारा अस्पताल से साइकिलों की चोरियों एवं जेब काटने की घटनायें आये दिन होती रहतीं है। अस्पताल की मौजूदा स्थिति को सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से सामान्य करने के लिये जिला प्रशासन ने एक पुलिस चौकी, मय एक सब इन्सपेक्टर के, तत्काल स्थापित कर दी है, इसके अतिरिक्त एक पी0ए0सी0 की टुकड़ी भी अस्पताल में पड़ाव डाले हुये है ।

तकिया करीमबेग, वजीरगंज, लखनऊ कब्रिस्तान पर अनधिकृत कब्जा

*43--श्री बलवान सिंह (जिला कानपुर)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि खसरा नं0 111, तकिया करीम बेग, वार्ड वजीरगंज, लखनऊ के कब्रिस्तान का रकबा क्या है तथा कितनी जमीन पर किन-किन लोगों ने कब से नाजायज कब्जे व गैरकानूनी तामीरात कर रखे हैं ? इन नाजायज कब्जों के सम्बन्ध में कितनी शिकायतें शासन को प्राप्त हुई हैं तथा इन पर क्या कार्यवाही की गई ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

उक्त कब्रिस्तान का रकबा लगभग 26500 वर्गफुट है । इस स्थान पर अनेक झोपडियां एवं कच्चे-पक्के मकान बने हुये हैं । इनकी मिल्कियत आदि के सम्बन्ध में छानबीन की जा रही है ।

नाजायज कब्जे के सम्बन्ध में कोई शिकायती-पत्र प्राप्त हुआ नही प्रतीत होता । शेष प्रश्न नहीं उठता ।

जालौन जिले के कनासी सहकारी संघ के सुपरवाइजर, श्री सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के विरुद्ध गबन की शिकायत

*44--डाक्टर मलखान सिंह (जिला जालौन)--

क्या मुख्य मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि सहायक निबन्धक, सहकारी समितियां, जालौन को इस बात की जानकारी थी कि 1973 में गेहूं खरीद के कार्य में सुपरवाइजर, कनासी (श्री सुरेन्द्र श्रीवास्तव) ने लगभग एक लाख का गबन किया था फिर भी 1974 में उसे गेहूं खरीद का कार्य पुनः दिया और उसने पुनः 1974 में गबन किया ? यदि हां, तो सहायक निबन्धक के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गयी और किसानों का रुपया दिलाने की क्या व्यवस्था की जा रही है ?

श्री नारायण सिंह--

सहायक निबन्धक, सहकारी समितियां, जालौन को यह जानकारी थी कि वर्ष 1973 में गेंहूं खरीद के लिये पी0सी0एफ0, उरई द्वारा कनासी सहकारी संघ के सुपरवाइजर, श्री सुरन्द्र कुमार श्रीवास्तव को दिये गये अग्रिम धन में से पी0सी0एफ0, उरई के पक्ष में रु0 82,852.39 पै0 का समायोजन होना शेष था ।

वर्ष 1974 में पी0सी0एफ0, उरई द्वारा उक्त संघ को, सुपरवाइजर, श्री सुरेन्द्र कुमार श्री वास्तव के माध्यम से गेंहूं क्रय करने का कार्य इस आधार पर दिया गया कि संघ जितना गेंहूं खरीद कर पी0सी0एफ0 को देगा, उसके मूल्य का भुगतान सहकारी संघ कनासी को गेंहूं की डेलीवरी भारतीय खाद्य निगम को देने के उपरान्त पी0सी0एफ0 करेगा ।

वर्ष 1974 में गेंहूं खरीद में उक्त सुपरवाइजर द्वारा गबन किये जाने के प्रश्न पर एवं सहायक निबन्धक के विरुद्ध प्राप्त सम्बन्धित शिकायतों पर जांच अभी अन्तिम नहीं हो पायी है ।

वर्ष 1974 की खरीद में 15 किसानों को गेंहूं के मूल्य का भुगतान न प्राप्त होने की सूचना प्राप्त हुई जिसमें से 5 किसानों के गेंहूं के मूल्य का भुगतान रु0 2862.50 पै0 आवश्यक जांच के पश्चात कर दिया गया है तथा शेष 10 कृषकों का प्रार्थना पत्र जो दिनांक 21 फरवरी, 1975 को प्राप्त हुआ, बाद में जांच एवं सत्यापन, भुगतान का निदेश रु0 5250.00 का दिनांक 18 मार्च, 1975 को दिया जा चुका है ।

देवरिया जिले के बकरी पालन फार्म की उपलब्धि

*45--श्री अब्दुल रऊफ लारी--

तृतीय सत्र 1974 के दूसरे मंगलवार दिनांक 31 दिसम्बर, 1974 के तारांकित प्रश्न संख्या 53 के उत्तर के सन्दर्भ में क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि उक्त बकरी पालन फार्म पर जो देवरिया जनपद में 1,44,760.69 रुपया लगाकर बना था की उपलब्धि अब तक क्या है? क्या इस सम्बन्ध में गड़बड़ियों और गबन की शिकायतें विभाग को मिली हैं और इसी आधार पर इस फार्म को बन्द करने का प्रश्न शासन के विचाराधीन हैं ?

श्री नारायण सिंह---

प्रश्नगत बकरी फार्म से अब तक कुल 69 बकरे प्रजनन कार्य हेतु वितरित किये गये है ।

जी हां ।

जी नहीं।

सहायक कृषि निरीक्षक, हरचन्दपुर, जिला रायबरेली का निलम्बन

*46--श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी) तथा श्री शिव कैलाश (जिला बाराबंकी)--

क्या कृषि मंत्री बताने का कष्ट करेंगे कि सहायक कृषि निरीक्षक, हरचन्दपुर बीज भंडार, जिला रायबरेली को 1 अप्रैल, 1972 में गम्भीर गबन के आरोप में निलम्बित किया गया था और इस निलम्बन आदेश को 27 अप्रैल, 1973 को निरस्त कर दिया गया और क्या यह सत्य है कि 13,570.32 रुपये की धनराशि के उर्वरक बीज इत्यादि सहायक कृषि निरीक्षक, हरचन्दपुर ने हिसाब 1971 में ग्राम सेवक के नाम जाली (फर्जी) बिलों द्वारा उधार सप्लाई दिखाकर सम्पूर्ण धनराशि गबन कर लिया था ? यदि हां तो, विभाग द्वारा इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--

सहायक कृषि निरीक्षक, हरचन्दपुर जनपद रायबरेली को दिनांक 24 फरवरी, 72 को निलम्बित किया गया था 27 मई, 72 को निलम्बन आदेश स्थगित कर दिये गये थे । दिये गये आश्वासन के अनुसार अभिलेखों को पूरा न करने के कारण उन्हें 1-9-72 को पुनः निलम्बित कर दिया गया । इस कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही की गयी और निहित हानि की वसूली तथा चरित्र पंजिका में प्रतिकूल प्रविष्ट के दण्ड दिये गये ।

पट्टी (इम्यून जोन स्कीम) के अन्तर्गत स्थापित अन्तर्प्रान्तीय सीमा पर टीका चौकियों के समाप्ति का आदेश

*47--श्री पुरुषोत्तम कौशिक--

क्या पशुपालन मंत्री बताने का कष्ट करेंगे कि उत्तर प्रदेश की अन्तर्प्रान्तीय सीमा पर टीका चौकियों की स्थापना एवं रोग रहित (विजिलेन्स यूनिट्स) पट्टी योजना (इम्यून जोन स्कीम) निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश के आदेशानुसार दिनांक 28 फरवरी, 1975 से समाप्त कर दी गई है ? यदि हां, तो इसका कारण क्या है ?

श्री नारायण सिंह--

जी हां ।

भारत सरकार का मत था कि प्रायोजना को आयोजनेतर पक्ष में चलाया जाना चाहिये पर यह राज्य सरकार के लिये सम्भव न हो सका ।

बाराबंकी जिला परिषद् के अध्यक्ष के चुनाव की मांग

*48--श्री राम मूर्ति (जिला बरेली)--

क्या पंचायती राज मंत्री को यह विदित है कि जिला परिषद्, बाराबंकी के अध्यक्ष महन्त जगन्नाथ बख्श दास का पिछली 2 जनवरी को स्वर्गवास हो गया और जिसके फलस्वरूप जिला परिषद् के अध्यक्ष का स्थान रिक्त है ? यदि हां, तो अध्यक्ष पद का चुनाव कब होने जा रहा है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

जी हां ।

रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु उप निर्वाचन शीघ्र कराया जायेगा ।

गोंडा नगरपालिका के सफाई मजदूरों द्वारा हड़ताल

*49--श्री त्रिवेणी सहाय तथा श्री दशरथ सिंह--

क्या स्वायत्त शासन मंत्री को यह जानकारी है कि गोन्डा नगरपालिका के सफाई मजबूर दिनांक 18 फरवरी, 1975 से अपनी मांगों को लेकर हड़ताल कर रहे हैं ? यदि हां, तो उनकी मांगें क्या हैं ? क्या उनके नेता को भी गिरफ्तार कर लिया गया है ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

नगरपालिका, गोण्डा के सफाई कर्मचारी दिनांक 19 फरवरी, 1975 से 24 फरवरी, 1975 तक हड़ताल पर रहे थे क्योंकि उनके नेता श्री ओम प्रकाश छावड़ा को पुलिस द्वारा, गिरफ्तार कर लिया गया था । नगरपालिका गोण्डा से उनकी कोई मांग नहीं थी ।

ग्रामीण रोजगार की त्वरित योजना की समाप्ति

*50--श्री अवधेश कुमार (जिला गोरखपुर)--

क्या सामुदायिक विकास मंत्री कृपया बतायेंगे कि राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण रोजगार का त्वरित कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री बलदेव सिंह आर्य---

ग्रामीण रोजगार की त्वरित योजना केन्द्रीय सरकार द्वारा वर्ष 1971-72 में चौथी पंचवर्षीय योजना के केवल पिछले तीन वर्षों के लिये चलाई गई थी और यह अवधि 31 मार्च, 1974 को समाप्त हो गई । कुछ अवशेष धनराशि जो उस तिथि को बच गई थी उसका उपयोग इस वर्ष में कर लिया गया है । इसलिये राज्य सरकार द्वारा इस योजना के स्थगन का प्रश्न नहीं उठता ।

बस्ती जिले के टड़िया बाजार में अस्पताल की स्थापना की मांग

***51---श्री रामरेखा यादव (जिला बस्ती) तथा श्री श्रीनारायण (जिला देवरिया)---**

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि बस्ती में विधान सभा क्षेत्र नौगढ़ के टड़िया बाजार का क्षेत्र जो राप्ती नदी के दक्षिण और उत्तर में बानगंगा, बिलार नदी के बीच में पड़ता है, में कोई सरकारी अस्पताल खोलने की योजना है ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री प्रभु नारायण---

वर्ष 1974-75 में प्रश्नगत स्थान में किसी प्रकार के चिकित्सालय खोलने का प्रस्ताव नहीं था । जहां तक वर्ष 1975-76 में चिकित्सालय खोलने का प्रश्न है, इस विषय में अभी से कुछ नहीं कहा जा सकता है ।

मैनपुरी जिले के कतिपय चिकित्साधिकारियों को आहरण एवं वितरण का अधिकार न मिलना

***52---श्री जगदीश नारायण त्रिपाठी (जिला मैनपुरी)---**

क्या सरकार को पता है कि मैनपुरी जिले के जिला कोषागार अधिकारी ने 5 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, धनपुरा, कुचेला, सभामई मानपुर हरी तथा बरनाहल के चिकित्साधिकारियों से अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का वेतन निकालने के अधिकार इस आधार पर वापस ले लिये कि उक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एकाउन्टेन्ट जनरल से अप्रूब्ड नहीं है, जब कि लगभग सात माह पूर्व तक इन केन्द्रों के चिकित्साधिकारी वेतन निकालते रहे हैं ? क्या सरकार इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करेगी ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री प्रभु नारायण---

जी हां । प्रश्नगत चिकित्सा अधिकारियों को आहरण एवं वितरण के अधिकार दिये जाने के सम्बन्ध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी, मैनपुरी ने महालेखाकार, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद को लिख दिया है ।

अतारांकित प्रश्न

जिला कारागार, लखनऊ के जेल वार्डरों की ड्यूटी का समय

1---श्री वेदप्रकाश अग्रवाल---

क्या कारागार मंत्री कृपया बतायेंगे कि राज्यपाल के 26 नवम्बर, 1957 के आदेशानुसार जिला कारागार, लखनऊ में जेल वार्डर की ड्यूटी 8 घंटे है और उनसे 12 घंटे काम लिया जा रहा है । यदि हां, तो क्यों ? और इस आदेश का पालन क्यों नहीं किया जा रहा है ।

कारागार मंत्री (श्री लोकपति)--

26 नवम्बर, 1957 के आदेशों के अनुसार जिला कारागार, लखनऊ में वार्डरों से साधारणतया 8 घंटे की ही ड्यूटी ली जाती है परन्तु विशेष परिस्थितियों में इससे अधिक ड्यूटी भी देनी पड़ती है जो नियमानुकूल है ।

नैनीताल जिले के कठघरिया-पनियाली मार्ग का निर्माण

2--श्री इन्द्रलाल (जिला नैनीताल)--

क्या सामुदायिक विकास मंत्री कृपया बतायेंगे कि जिला नैनीताल में त्वरित योजना के अन्तर्गत कठघरिया-पनियाली मोटर मार्ग पर दिनांक 1 जनवरी, 1972 से अब तक कुल कितनी धनराशि किन-किन मदों में व्यय की गयी है और अब कितना रुपया इस योजना का अवशेष है ? क्या इस सड़क का कार्य पूरा हो गया है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री बलदेव सिंह आर्य--

इस मार्ग पर 1 जनवरी, 1972 से अब तक कुल 2,01,575.86 रुपये की धनराशि व्यय की गयी है जिसका मदवार विवरण संलग्न है । इस योजना में अब कोई धन अवशेष नहीं है तथा प्राक्कलन के अनुसार सड़क का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है ।

(देखिये नत्थी "क" आगे पृष्ठ 113 पर)

फैजाबाद नगरपालिका द्वारा निर्मित बंगले के किराये की सरकारी अधिकारियों से वसूली

3--श्री वेद प्रकाश अग्रवाल--

क्या स्वायत्त शासन मंत्री बताने की कपा करेंगे कि फैजाबाद नगरपालिका द्वारा निर्मित्त बंगलों का, जिसमें सरकारी अधिकारी रहते हैं, नगरपालिका का कितना किराया उन अधिकारियों पर बाकी है, और अब तक किराया न वसूल किये जाने का कारण क्या है ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

नगरपालिका, फैजाबाद द्वारा सरकारी अधिकारियों के आवास हेतु निर्मित 16 बंगलों में से 8 बंगले राजस्व विभाग, 3 बंगले न्याय विभाग एवं 2 बंगले पुलिस विभाग को दिये गये थे। इन 13 बंगलों के बकाया किराये की धनराशि रुपया 1,65,328.98 पैसे है । न्याय विभाग के अधिकारियों द्वारा 1 अप्रैल, 1969 से एवं राजस्व तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों द्वारा 1 सितम्बर, 1974 से सम्बन्धित बंगलों का किराया आयुक्त, फैजाबाद मंडल के आदेशानुसार सीधे नगरपालिका कोष में जमा किया जा रहा है ।

राजस्व तथा न्याय विभाग को दिये गये बंगलों के सम्बन्ध में अवशेष किराये की अदायगी के बारे में सम्बन्धित प्रशासनिक विभाग द्वारा कार्यवाही की जा रही है । पुलिस विभाग के बंगलों के किराये के अवशेष के भुगतान हेतु पुलिस उप महानिरीक्षक, मुख्यालय उत्तर प्रदेश ने पुलिस अधीक्षक फैजाबाद को आवश्यक आदेश दे दिये है ।

मिर्जापुर जिले की हेल्थ विजिटर (महिला) के विरुद्ध कथित शिकायत

4--श्री आशाराम यादव (जिला मिर्जापुर)--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि मिर्जापुर जनपद में 1973-74 में कुल कितनी हेल्थ विजिटर (महिला) नियुक्त थीं, उसमें से इस बीच में कितनों के विरुद्ध जनता ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाया तथा लिखित रूप से जिले के अधिकारियों को दिया ? यदि हां तो उस पर आज तक क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री प्रभु नारायण--

मिर्जापुर जनपद में 1973-74 में 18 हेल्थ विजीटर (महिला) नियुक्त थीं । इनमें से किसी के विरुद्ध भी जनता ने भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगाया और न ही लिखित रूप से जिले के अधिकारियों को दिया । अतः इस सम्बन्ध में कार्यवाही करने का प्रश्न नहीं उठता ।

मुरादाबाद जिले के भूतपूर्व चिकित्साधिकारी, स्व० हबीब अहमद की ग्रेच्युटी तथा प्राविडेन्ट फण्ड

5--श्री मोहम्मद रफी खां--

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि भूतपूर्व चिकित्सा अधिकारी, स्वर्गीय श्री हबीब अहमद "सिरसी", जिला मुरादाबाद के परिवार को अब तक ग्रेच्युटी तथा प्राविडेंट फन्ड, 500 रुपये जमानत तथा अन्तिम वेतन का भुगतान कर दिया गया है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री प्रभु नारायण--

केवल 3 सितम्बर, 1970 से 4 फरवरी, 1971 की अवधि के अवकाश की स्वीकृति सम्बन्धी आदेशों को छोड़कर अन्य सभी मामलों में स्वीकृति के आदेश जारी हो चुके हैं । उक्त अवधि का अवकाश स्वीकृत करने का प्रस्ताव शासन के विचाराधीन है ।

6--श्री शिवानन्द नौटियाल--

[10वें गुरुवार में अतारांकित प्रश्न संख्या 8 पर स्थानान्तरित ।]

नगरपालिका, सीतापुर द्वारा लगाये गये हैण्ड पम्प की कीमत तथा नगरपालिका द्वारा आमंत्रित किया गया टेण्डर

7--श्री कल्याण सिंह (जिला अलीगढ़)--

क्या स्वायत्त शासन मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि नगरपालिका, सीतापुर (सुपरसीडेड) द्वारा जनता के पेय जल हेतु मास मई, 1974 से जुलाई, 1974 में किन-किन स्थानों पर हैन्ड पम्प लगाये गये तथा प्रत्येक के लगाने में एक-एक पर कितनी लागत आयी और यह पम्प किस व्यक्ति द्वारा लगाये गये थे ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल---

नगरपालिका सीतापुर द्वारा जनता को पेयजल उपलब्ध कराने हेतु मई, 1974 से जुलाई 1974 तक अधोलिखित स्थानों पर हैन्ड पम्प लगाये गये जिनकी लागत व कार्य का सम्पादन कराने वाली फर्म का नाम इस प्रकार है :--

पम्प लगाने का स्थान	पम्प लगाने की लागत	पम्प लगाने वाली फर्म का नाम
	रु० में	
1--विजय लक्ष्मीनगर (एक हैन्डपम्प) ...	1,392	मेसर्स सिंह एण्ड संस
2--टाउनहाल नगरपालिका (एक हैन्डपम्प) ..	1,324	तदैव
3--नगरपालिका कार्यालय प्रांगण (एक हैन्डपम्प)	1,796	तदैव

8--श्री कल्याण सिंह--

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि अगस्त, 1974 में उपरोक्त नगरपालिका में हैन्ड पम्प लगाने के लिये कोई टेंडर प्राप्त किये गये ? यदि हां, तो टेंडर किस दर से आये तथा अगस्त, 1974 में कितने हैन्ड पम्प लगाये गये ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

नगरपालिका सीतापुर द्वारा अगस्त, 1974 में हैन्ड पम्प लगाने के लिये टेन्डर आमंत्रित किये गये । टेन्डर की दर व हैन्डपम्प की संख्या इस प्रकार है ।

टेन्डर की दर	हैन्ड पम्प की संख्या	स्थान है
1,258	सीतापुर कचेहरी के प्रांगण में एक हैन्ड पम्प ।	

आजमगढ़ जिले के कोआपरेटिव सुपरवाइजर, श्री राम देव सिंह का निलम्बन एवं उनके विरुद्ध जांच की कार्यवाही

9--श्री रामसुन्दर पांडेय--

क्या सहकारिता मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि बिन्दा बाजार, जिला आजमगढ़ के कोआपरेटिव सुपरवाइजर, श्री राम देव सिंह द्वारा सम्पादित हिसाब की जांच परगनाधिकारी, घोसी द्वारा जांच हुयी थी और अनेकानेक अनियमिततायें मिली थीं ? यदि हां, तो उनके विरुद्ध कौन सी कार्यवाही की गयी ?

श्री नारायण सिंह--

जी हां । श्री रामदेव सिंह, सहकारी पर्यवेक्षक सचिव, पी0सी0एफ0 के आदेश दिनांक 17 अगस्त, 1974 द्वारा निलम्बित किये गये हैं और उनके विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही कराई जा रही है ।

10--श्री राम सुन्दर पांडेय--

क्या मुख्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उक्त सुपरवाइजर उनके द्वारा लगभग दो मास पूर्व मुअत्तिल कर दिया गया था ? और अनियमितताओं की जांच किसी उच्च अधिकारी के जिम्मे सुपुर्द है ?

श्री नारायण सिंह--

उक्त सुपरवाइजर श्री रामदेव सिंह को दिनांक 17 अगस्त, 1974 से सचिव, पी0 सी0 एफ0 द्वारा निलम्बित किया गया है।

अनियमितताओं की जांच प्रान्तीय सहकारी संघ के गोरखपुर मण्डल के क्षेत्रीय अधिकारी गोरखपुर को सुपुर्द है।

प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में अस्पताल की संख्या एवं डाक्टर विहीन अस्पताल

11--श्री रामअधार (जिला आजमगढ़)

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में कितने सरकारी अस्पताल (मनुष्यों के) हैं और उनमें कितने अस्पताल ऐसे हैं जिनमे अब तक सरकार ने डाक्टरों की व्यवस्था नहीं की है ? क्या सरकार यह भी बतायेगी कि इस समय आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और यूनानी चिकित्सालयों की संख्या प्रदेश के ग्रामीण अंचलों मे अब तक कितनी है?

श्री प्रभु नारायण---

वांछित सूचना संलग्न है ।

(देखिये नत्थी 'ख', आगे पृष्ठ 114 पर)

सहकारी बैंक लि०, मुरादाबाद में हरिजन कर्मचारा

12---श्री देवी सिंह (जिला मुरादाबाद)---

क्या सहकारिता मन्त्री बताने का कष्ट करेंगे कि जिला सहकारी बैंक, मुरादाबाद में इस समय कुल कितने कर्मचारी हैं तथा उनमें से कितने प्रतिशत हरिजन हैं ? क्या सरकर 18 प्रतिशत कोटा पूरा करने केलिये निकट भविष्य में रिक्त स्थानों हरिजनों को लेने की कृपा करेगी ?

श्री नारायण सिंह---

जिला सहकारी बैंक लि0, मुरादाबाद में इस समय कुल 102 कर्मचारी हैं, जिनमें से तीन हरिजन हैं । अब सहकारी बैंकों के कर्मचारियों का चयन उत्तर प्रदेश सहकारी संस्थागत सेवा मंडल द्वारा किया जाता है और रिक्त स्थांनों की पूर्ति में हरिजनों के 18 प्रतिशत आरक्षण (वर्तमान शासनादेशानुसार) का प्राविधान कर दिया गया है ।

सहकारिता विभाग में कथित गोलमाल की जांच

13---श्री जनार्दन प्रसाद ओझा---

क्या सहकारिता मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश सहकारिता विभाग में 1970-72 के बीच दो करोड़ रुपये का गोलमाल सतर्कता विभाग द्वारा अभी हाल में प्रकाश में लाया गया है ? यदि हां, तो क्या मन्त्री जी इसका पूरा विवरण सदन के पटल पर रखने की कृपा करेंगे ?

श्री नारायण सिंह---

जी नहीं ।

नगर महापालिका के कर्मचारियों के नये वेतनमान का निर्धारण

14---श्री केशरी लाल (जिला कानपुर)---

क्या मुख्य मन्त्री बताने का कष्ट करेंगे कि नगर महापालिका के पूर्णकालिक कर्मचारियों को 1971-73 की वेतन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार वेतन लागू किये जाने के संबंध में शासनादेश सं0 407-ए/11-न0पा0-4---125-के०-1973 के अनुसार पृष्ठ सं0 2 व 3 के क्रम संख्या 8 व 10 के सामने लिखी गयी अभ्युक्ति के बारे में अलग से आदेश अब तक जारी न किये जाने का क्या कारण है ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल---

प्रश्नगत मामले में सारे तथ्यों का परीक्षण न हो सकने के कारण अभी तक शासनादेश नहीं जारी किया जा सका है ।

15---श्री त्रिवेणी सहाय---

[स्पष्टीकरण हेतु हटाया गया ।]

उत्तर प्रदेश नगर महापालिका अधिनियम (संशोधन) समिति की रिपोर्ट की मांग

16---श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

क्या सरकार बतलाने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश नगरमहापालिका अधिनियम (संशोधन) समिति की रपट तथा संस्तुतियां क्या-क्या हैं और क्या सरकार समिति की रपट तथा संस्तुतियों की एक-एक प्रति माननीय सदस्यों को उपलब्ध करायेगी ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

उत्तर प्रदेश नगर महापालिका अधिनियम (संशोधन) समिति की रिपोर्ट वृहद् है और चूंकि समिति की रिपोर्ट अभी छपाई नहीं गई है । अतः उसे सदन में रखना संभव नहीं है ।

2--समिति की रिपोर्ट छपाने के लिये आवश्यक कार्यवाही की जा रही है और रिपोर्ट छपने के पश्चात सदन में प्रस्तुत की जायेगी ।

इलाहाबाद नगर महापालिका की एम्बेसेडर कार का कथित दुरुपयोग

17--श्री सत्य प्रकाश मालवीय--

क्या सरकार बतलाने की कृपा करेगी कि इलाहाबाद नगरमहापालिका के पास कुल कितनी एम्बेसेडर कारें है तथा उनको कौन-कौन अधिकारी इस्तेमाल करते हैं ? क्या इन कारों के दुरुपयोग के संबंध में सन् 1974 में मुख्य मंत्री जी को शिकायतें प्राप्त हुई हैं ? यदि हां, तो वह शिकायतें क्या है और उन पर क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

जी हां । इलाहाबाद नगर महापालिका के पास कुल चार एम्बेसेडर कारे हैं । इनमें एक प्रशासक के पास, दूसरी अधिशासी अभियन्ता (विकास) के पास उनके प्रयोग में रहती है । शेष दो कारें किसी को नहीं दी गई हैं और आवश्यकता पड़ने पर निरीक्षण आदि के समय अधिकारियों को निश्चित समय के लिये प्रशासक अथवा उपप्रशासक इंचार्ज वर्कशाप के आदेशानुसार दी जाती हैं । इनके दुरुपयोग के संबंध में वर्ष 1974 में निम्नलिखित शिकायतें प्राप्त हुई थीं :--

(i) नगर प्रमुख एक नई व एक पुरानी दो एम्बेसेडर कार रात दिन अपने तथा परिवार के अन्य लोगों के इस्तेमाल में गैर कानूनी ढंग से ला रहे हैं ।

(ii) उप नगर अधिकारी (दो), नगर अभियन्ता (विकास), नगर अभियन्ता (दो) चुंगी अधीक्षक, नगर स्वास्थ्य अधिकारी, अभियन्ता (वर्कशाप) तथा अभियन्ता पंपिंग (स्टेशन गऊघाट) महापालिका की एम्बेसेडर कार का इस्तेमाल कर रहे हैं और शासन द्वारा वाहन भत्ता भी लेते हैं ।

इन शिकायतों के संबंध में जांच कराई गई । जांच के परिणाम की स्थिति शिकायतों के संबंध में इस प्रकार है :--

जांच परिणाम-प्रथम शिकायत--

शिकायत गलत है । भूतपूर्व नगर प्रमुख श्री रामजी द्विवेदी का कार्य संचालन प्रातः आठ बजे से शुरू होकर रात्रि में लगभग दस बजे समाप्त होता था । नगर प्रमुख की ड्यूटी में एक एम्बेसेडर कार प्रातः से पांच बजे शाम तक रहती थी । ड्राइवर तथा गाड़ी की ड्यूटी अधिक होने के कारण दूसरी एम्बेसेडर कार मय ड्राइवर के बदल दी जाती थी, जिस पर वह उन स्थानों का निरीक्षण करते थे जो नयी योजनायें बनाये जाने से अथवा विकास से संबंधित होते थे ।

जांच परिणाम द्वितीय शिकायत--

ऐम्बेसेडर कार के दुरुपयोग की कोई शिकायत संबंधित अधिकारियों के विषय में महापालिका में नहीं है ।

मत्स्य विभाग द्वारा मत्स्य विकास एवं शोध कार्य हेतु ओबरा जलाशय का लिया जाना

18--श्री चन्दन सिंह (जिला ललितपुर)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी सरकार ने ओबरा जलाशय कब अपने अधिकार मे मे लिया है तथा उसका उपयोग मत्स्य उद्योग के लिये न करने का क्या कारण है ?

श्री नारायण सिंह---

ओबरा जलाशय मत्स्य विभाग को मत्स्य विकास एवं शोध कार्य हेतु राज्य विद्युत परिषद् से 8 मई, 1974 को प्राप्त हुआ था।

प्राप्त होने के बाद ही जलाशय विकास एवं अनुसंधान का कार्यक्रम आरम्भ कर दिया गया था और यह इस कार्य के लिये उपयोग में लाया जा रहा है।

वाराणसी जिले की खम्हरिया टाउन एरिया को दिया गया अनुदान

19--श्री गिरिजाशंकर पाठक (जिला वाराणसी)--

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जब से जनपद वाराणसी के गांव खम्हरिया को टाउन एरिया घोषित किया गया है तब से वहां के विकास कार्य हेतु कितना रुपया अनुदान एवं ऋण के रूप में दिया गया तथा वहां के किन-किन विकास कार्यों में कितना-कितना रुपया व्यय किया गया।

श्री जगदीश शरण अग्रवाल--

सूचना एकत्रित की जा रही है।

बाराबंकी जिले के नियोजन विभाग के लिपिकों का स्थानान्तरण

20--श्री रामचन्द्र बक्श सिंह---

क्या सरकार को ज्ञात है कि माह दिसम्बर, 1974 में जनपद बाराबंकी में नियोजन अधिकारी ने अपने विभाग के 10 लिपिकों का स्थानान्तरण किया और उस सम्बन्ध मे व दीगर मामलों को लेकर प्रश्नकर्ता ने एक शिकायती पत्र दिनांक 14 जनवरी, 1975 को माननीय मुख्य मन्त्री और सामुदायिक विकास मंत्री को स्वयं दिया था ? यदि हां तो शासन ने अब तक उसमें क्या किया है ?

श्री बलदेव सिंह आर्य---

जी हां।

माननीय सदस्य का एक शिकायती पत्र दिनांक 14-1-75 जो माननीय मुख्य मंत्री जी को सम्बोधित था, प्राप्त हुआ था। शासन ने जिलाधिकारी, बाराबंकी द्वारा शिकायती पत्र पर जांच करवाई जिससे ज्ञात हुआ कि लिपिकों के स्थानान्तरण उचित कारणों से किये गये थे। शिकायती-पत्र में उल्लिखित अन्य आरोप भी जांच से सिद्ध नहीं हो सके।

जालौन जिले की क्रय-विक्रय समिति, कौंच का श्री गणेश प्रसाद निरंजन व रामदास सन्तोष कुमार पर वकाये की वसूली

21--डाक्टर मलखान सिह--

क्या मुख्य मन्त्री बतलाने की कृपा करेंगे कि तृतीय सत्र के दूसरे मंगलवार के तारांकित प्रश्न संख्या 77 के उत्तर में बतलाया गया था कि श्री निरंजन के मामलें में अभी मध्यस्थ निर्णय नहीं हुआ, फर्म राम दास संतोष कुमार के मामले में मध्यस्थ निर्णय भुगतान के पक्ष में हुआ था किन्तु समिति ने अपील कर दी है जिस पर अभी निर्णय नहीं हुआ ? यदि हां, तो आर्बीट्रेशन तथा अपील कब दायर की थी, आज तक निर्णय न होने का क्या कारण है ?

श्री नारायण सिह--

सूचना एकत्र की जा रही है ।

प्रदेश में आक्सोजन सिलेण्डर मशीन विहीन अस्पताल

22--श्री सत्य प्रकाश मालवीय--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि प्रदेश में कौन-कौन से मेडिकल कालेजों तथा मुख्यालयों में स्थित अस्पतालों में आक्सीजन सिलेंडर मशीन उपलब्ध नहीं है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री प्रभु नारायण--

सूचना एकत्र की जा रही है ।

वित्त मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना

श्री अध्यक्ष--

एक सूचना माननीय लारी ने दी है कि माननीय वित्त मंत्री ने सदन को भ्रामक उत्तर दिया है और इस प्रकार उन्होंनें सदन का अवमान किया है । माननीय सदस्य ने कोई ऐसा तथ्य या आधार नहीं दिया है जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि माननीय वित्त मंत्री द्वारा दिया गया उत्तर भ्रामक है ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--

मान्यवर, 52-53 और 53-54 की वसूली 74-75 और 75-76 में कर रहे हैं । जो पहले डिमान्ड नोटिस गई थी उसको वापस लेकर फिर दूसरी भेजी गई .....

श्री अध्यक्ष--

आपने लिखकर दिया है कि माननीय वित्त मंत्री ने दिनांक 31-3-75 को जो उत्तर दिया है वह बिल्कुल ही असत्य और भ्रामक है तो इस से विशेषाधिकार का प्रश्न नहीं बनता ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी-

जवाब तो इसके अन्दर मौजूद है ।

श्री अध्यक्ष--

आपको खुद लिखना चाहिये था ।

गन्ना विकास मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना

श्री अध्यक्ष--

एक दूसरा प्रश्न माननीय पुरुषोत्तम कौशिक ने उठाया है कि माननीय गन्ना विकास मंत्री ने अनेक बार इस सदन में स्पष्ट रूप से प्रदेश के गन्ना किसानों के बकाया भुगतान दिलाने का न केवल आश्वासन ही दिया है बल्कि दृढ़ता के साथ वायदा भी किया है । उनका कहना है कि इससे विशेषाधिकार का हनन हुआ है । यह आश्वासन भंग होने का मामला है जो कि आश्वासन समिति में उठाया जाना चाहिये । विशेषाधिकार का प्रश्न नहीं है । हो सकता है कि श्री कौशिक सही हों, लेकिन आश्वसन समिति में ही इसे उठा सकते हैं। जो आश्वासन पूरे नहीं होते और जैसा कि आप कह रहे हैं कि वर्षों में गन्ने के काश्तकारों को उनका बकाया देने के लिये शासन कहता आया है कि देंगे और नहीं दे रहे हैं तो आश्वासन समिति ही इसका उपचार है, न कि विशेषाधिकार का मामला ।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)--

उन्होंने न केवल आश्वासन ही दिया है बल्कि वायदा भी किया है आप और सारा सदन साक्षी है गन्ने का बकाया भुगतान के लिये पड़ा हुआ है लेकिन नहीं दिया जा रहा है । इस जनवरी, फरवरी में 8 करोड़ रुपये तक हो गया है । देवरिया में लोग त्राहि-त्राहि कर रहें हैं . . .

श्री अध्यक्ष--

आश्वासन जो दिया गया है, वह हो सकता है पूरा न किया गया हो, लेकिन इससे विशेषाधिकार का प्रश्न नहीं बनता है । यह आश्वासन समिति में उठाया जा सकता है ।

उच्च शिक्षा मंत्री तथा माध्यमिक शिक्षा मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना

श्री अध्यक्ष--

एक विशेषाधिकार की सूचना माननीय सत्य प्रकाश मालवीय तथा श्री राम अधार ने दी है कि उच्च शिक्षा मंत्री डाक्टर रामजी लाल सहायक तथा माध्यमिक शिक्षा मंत्री श्री अम्मार रिजवी ने सदन में कहा कि माध्यमिक शिक्षकों के प्रतिनिधियों ने अपने प्रस्तावित आन्दोलन की वापसी की सूचना दी है । माननीय सूचना देने वाले सदस्यों का कहना है कि उक्त माननीय मंत्रियों ने यह वक्तव्य जान बूझ कर सदन को गुमराह करने की नीयत से दिया और सदन का अवमान किया है । इसी सम्बन्ध में माननीय राम प्रकाश त्रिपाठी, मोहन लाल कपूर, सत्यपाल सिह यादव तथा माननीय आशाराम यादव ने दी है जो कि 11-30 बजे प्राप्त हुई । इसी विषय पर माननीय त्रिवेणी सहाय ने दी है । यह बात सदन में उठी थी कि माध्यमिक शिक्षक संघ के लोगों की गिरफ्तारी की जा रही है और यह बात स्पष्ट कर दी जाय कि हड़ताल वापस हो गई है या नहीं । इसको स्पष्ट करते हुए श्री अम्मार रिजवी ने कहा मान्यवर, जो लीडर या जो भी नेता उस शिक्षक दल के जो भी हमारे पास आये थे, जिनसे बात चीत हुई, उसके आधार पर जो उन्होंने बताया, जो वक्तव्य दिया गया, मैं नहीं समझता कि जो नेता हमारे पास आये थे, उनके कहने में इतने लोग नहीं हैं या जो बात वह तय करके गये, बाहर वह तय हुई या नहीं । दोनों दलों से बातचीत हुई, रात के दो बजे और आज भी हुई है । उन्होंने बताया कि हम इस चीज में कुछ नहीं करेंगे और यह वापस ले लेंगे । एक श्री कपूर साहब ने रखा है ।

श्री मोहन लाल कपूर (जिला मेरठ)---

बातचीत का दौर कल लगभग 5 बजे आरम्भ हुआ परन्तु रात्रि में श्री महेश्वर पाण्डेय ग्रुप ने उनसे कह दिया कि हम स्वीकार नहीं करते। इसी प्रकार जो माननीय नारायण दत्त तिवारी जी को चेयरमैनशिप में सब-कमेटी बनी है उनसे भी कह दिया कि यह बातें स्वीकार नहीं है। कल बाहर पकड़-धकड़ भी हुई फिर भी यह वक्तव्य दिया तो इससे सदन को भ्रम में डाला गया है।

श्री अध्यक्ष---

विशेषाधिकार कैसे हुआ यह बतायें ?

श्री मोहन लाल कपूर---

जब लेक्चरर्स ने यह स्पष्ट कह दिया और कोई विदड्राल का नोटिस नहीं दिया, उन्होंने हड़ताल वापस नहीं ली, बाहर वह लोग सत्याग्रह करते हुए पकड़े गये। यहां पर इस प्रकार से कह दिया कि सुलह हो गई है तो इस प्रकार से गलत बात यहां पर रखी गई है जिससे सदन को भ्रम में रखा गया तो इससे विशेषाधिकार का प्रश्न बनता है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)---

मान्यवर, जो श्री रामजी लाल सहायक ने बात कही और जो श्री रिजवी साहब ने वक्तव्य दिया उसमें उन्होंने कहा 'सदन को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उपयुक्त निर्णयों के आधार पर माध्यमिक शिक्षकों के प्रतिनिधियों ने अपने प्रस्तावित आन्दोलन को वापसी की सूचना दी है'। इसके तुरन्त बाद माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी जी ने कहा अभी डेढ़ दो सौ अध्यापक बाहर गिरफ्तार हुए हैं और हड़ताल वापस नहीं हुई है। इसके पश्चात् दोनों मंत्रियों ने अपने वक्तव्य दिये। तो मान्यवर, मेरा कहना है कि हड़ताल वापस नहीं हुई है वह अभी भी जारी है। कल भी लगभग 250 अध्यापक गिरफ्तार हुए। तो जानबूझ कर सदन को गुमराह किया गया है। वह इसलिए गुमराह किया गया कि बाहर बाकी 53 जिलों में जो हड़ताल कर रहे हैं वह गुमराह हो सकें। इसलिये यह विशेषाधिकार का प्रश्न बनता है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष---

(श्री त्रिवेणी सहाय से) आपको क्या बोलना है।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)---

मान्यवर, मैंने भी विशेषाधिकार का प्रश्न उठाया है। कल माननीय शिक्षा मंत्री ने जो बयान दिया उसके आधार पर अखबारों में छपा है। यह स्वतंत्र भारत में छपा है....

श्री अध्यक्ष---

उसको पढ़ने की जरूरत नहीं है।

श्री त्रिवेणी सहाय---

मेरा कहना है कि जो आपने वक्तव्य दिया कि हड़ताल वापस हो गई है सही बात नहीं है। श्रीमन्, महेश्वर पांडेय जी ने अपना वक्तव्य दिया है कि हड़ताल समाप्त नहीं की गई है बल्कि 3 तारीख को परीक्षा का बहिष्कार किया जायगा और विधान सभा के सामने धरना दिया जायगा। तो मेरा स्पष्ट आरोप है कि सरकार का कोई ग्रुप होगा जिस ग्रुप से इनका सम्बन्ध है उनको बुला कर बातचीत कर ली गई होगी और उन्होंने कह दिया होगा लेकिन मेरा कहना है कि शिक्षकों की हड़ताल जारी है....

श्री अध्यक्ष--

विशेषाधिकार भंग का प्रश्न कैसे बनता है यह बतायें ?

श्री त्रिवेणी सहाय---

यहां पर गलत बयान दिया गया कि हड़ताल वापस हो गई है जब कि वह चल रही है और लोग गिरफ्तार हुए हैं इसलिए विशेषाधिकार बनता है इसे आप टेकअप करें । (व्यवधान)

श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)---

श्रीमन्, 3 तारीख से परीक्षायें होने वाली हैं .....

श्री अध्यक्ष--

हम अभी विशेषाधिकार के मामले को ले रहे हैं ।

श्री राम अधार--

यह गंभीर मामला है । (व्यवधान) (कई सदस्य बोलने लगे ।)

श्री अध्यक्ष--

मैं इस तरह बोलने की इजाजत नहीं देता ।

श्री राम अधार--

इस तरह से यहां एक नौटंकी हो रही है (व्यवधान)

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)--

उत्तर प्रदेश में अध्यापकों के कितने दल हैं इससे मंत्री जी से मतलब नहीं है जो भी कोई मंत्री जी के सामने आयेगा और बात कहेंगे वह सुनेंगे । तो उसी आधार पर· · (व्यवधान)

(अध्यक्ष महोदय और अनेक सदस्य एक साथ खड़े होकर बोलते रहे ।)

कार्य-स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं

श्री अध्यक्ष---

आज जो सूचनायें नियम 56 के अन्तर्गत प्राप्त हुई हैं, उनमें एक माननीय रामसजीवन जी का 25 मार्च, 75 को पुनः बांदा जिले में आंधी, तूफान एवं ओला वृष्टि से रबी की फसल को हुई क्षति के सम्बन्ध में है, यह पहले स्वीकार हुआ है और इस पर वक्तव्य होना निश्चित है ।

उच्च शिक्षा मंत्री तथा माध्यमिक शिक्षा मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना (क्रमागत)

श्री मधुकर दिघे (जिला गोरखपुर)---

माननीय मन्त्री जी को जब यह जानकारी थी कि अध्यापकों का एक विशेष दल जो अध्यापकों का प्रतिनिधित्व करता है, वे बाहर गिरफ्तार हो रहे हैं, तब भी मंत्री जी ने इस बात को कबूल नहीं किया है, तो क्या सदन के सामने वह इस प्रकार का बयान दे सकते हैं? यदि दे सकते हैं, तो कल जो हुआ वह ठीक है । लेकिन मेरा कहना यह है कि ऐसा बयान देकर उन्होंने सदन को गुमराह किया है ।

श्री अध्यक्ष---

सदन गुमराह नहीं हुआ । उनकी बात का आप उसी समय खंडन कर रहे थे । उनकी एक सूचना थी और आपकी दूसरी थी। बातें दोनों सही थीं ।

(व्यवधान---शोर)

आपने इसमें यह शब्द नहीं कहे, इसलिये यह विशेषाधिकार का प्रश्न नहीं बनता । इसमें हम नहीं जाते हैं कि इस सदन के बाहर किसी ने क्या कहा ।

(शोर)

एक राम प्रकाश त्रिपाठी ने सूचना दी है, जो कि विशेषाधिकार का प्रश्न बनता नहीं है । यह नहीं उठता । (शोर)

आप लोग बैठें । आप एक बात कह रहे थे, उसी समय दूसरी बात उधर से कही जा रही थी, इसलिये भ्रम नहीं हुआ ।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)---

आप क्या कह रहे हैं, क्या हड़ताल समाप्त हो गई ?

कार्य-स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं (क्रमागत)

श्री अध्यक्ष---

एक राम प्रकाश यादव ने सूचना दी है । इसे वह नियम 51 में देंगे तो इस पर हम विचार करेंगे । नियम 51 के समय इस पर वक्तव्य के लिए विचार करेंगे । माननीय सत्य प्रकाश मालवीय ने जो माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकगण की हड़ताल एवं सत्याग्रह के विषय में दिया है, इसमें वक्तव्य आ गया है ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)---

सदन की आज की कार्यवाही सुनकर बदली हुई परिस्थिति में वह अपना वक्तव्य फिर से दें । (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष---

श्री रामचन्द्र बक्श सिंह ने प्लाईउड फैक्टरी, सीतापुर के कर्मचारियों के बारे में दिया है..... (शोर)

श्री रामचन्द्र बक्श सिंह (जिला बाराबंकी)---

सीतापुर की प्लाईउड फैक्टरी एशिया की सबसे बड़ी फैक्टरी है..... (शोर, काफी शोर), अनेक सदस्य अपने स्थान पर खड़े बोलते रहे)

श्री अध्यक्ष---

अच्छा अब कार्य सूची 7 । श्री महाबीर प्रसाद

(शोर)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)---

मेरा आपने क्यों स्वीकार नहीं किया, यह बड़े महत्व का है । इसमें बड़ा भ्रष्टाचार है । जिला सहकारी बैंक, देवरिया के संचालक मंडल को निरस्त कर राजमंगल पाण्डेय जी ने अपनी पत्नी मालती पान्डेय को उसका अध्यक्ष मनोनीत कर दिया है । यह ज्वलन्त भ्रष्टाचार का उदाहरण है ।

(शोर के बीच कई सदस्य खड़े होकर साथ-साथ बोलते रहे)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक---

सरकार के लिये डूब मरने की बात है। यह सरकार निर्लज्ज हो गई है, निरंकुश हो गयी है। इस प्रकार की भ्रष्ट और बेईमान सरकार कहीं भी नहीं है। इन मंत्रियों ने सारी नैतिकता को तिलांजलि दे दी है। (शोर में सुनाई नहीं दिया) कोआपरेटिव के ऊपर यह बड़ा कलंक है। कोआपरेटिव मिनिस्टर बैठे हुए हैं। (शोर) (साथ-साथ में श्री महाबीर प्रसाद बोलते गये जो बिलकुल सुनायी नहीं दिया।)

श्री अठई राम (जिला इलाहाबाद)---

(शोर के बीच) नियम 56 का हमने एक दिया है।

श्री अध्यक्ष---

आपका नाम पुकारा था। आप नहीं थे। अब आप आ रहे हैं। अब तो उनको कह दिया।

श्री महाबीर प्रसाद (जिला गोरखपुर)---

(शोर के बीच) इसी प्रकार मान्यवर, 1974-75 के बजट.... (सुनाई नहीं दिया)।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)---

हमने जो दिया था, वह खारिज हो गया?

श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)---

एक व्यवस्था का सवाल है।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक---

नियम 56 में मैंने दिया है उसमें क्या निर्णय लिया है? (सुनाई नहीं दिया।) अराजकता उत्पन्न हो गई है। और मान्यवर, इसे आप टाल रहे हैं।

(श्री महाबीर प्रसाद बोलते रहे जो सुनाई नहीं दिया।)

एक सदस्य---

अध्यापकों के मामले को आप गम्भीर नहीं समझ रहे हैं।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक---

(शोर के बीच) (सुनाई नहीं दिया) इस प्रकार अपनी पत्नी मालती पांडेय (सुनायी नहीं दिया।) सारे संचालक मंडल को गलत तरीके से निरस्त करके (शोर) सारे विरोधी पक्ष का सफाया कर दिया है। (सुनायी नहीं दिया।) कम से कम सहकारिता मन्त्री से कहें इस सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट करें।

श्री त्रिवेणी सहाय---

क्या विषय चल रहा है? विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न पर आपकी योग्य व्यवस्था हम लोग चाहते थे।

श्री भाभी (जिला आजमगढ़)---

सदन इस तरह से नहीं चल सकेगा। अध्यापकों का गम्भीर मसला है। मंत्री जी विचार नहीं कर रहे हैं। मन्त्री जी गलतबयानी करें इसके बावजूद भी .....

श्री त्रिवेणी सहाय---

इनको (श्री महाबीर प्रसाद को) बैठाइये। क्या बोल रहे हैं कुछ समझ में नहीं आता है, हम लोगों को।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक--

मान्यवर, सहकारिता मन्त्री इस साजिश में शामिल हैं। अभी सहकारिता मन्त्री ने कुछ दिन पहले चार्ज लिया है। (सुनाई नहीं दिया।) सहकारिता मंत्री के डीलडौल को देख कर (सुनायी नहीं दिया।)

(घोर व्यवधान और शोर के बीच।)

सहकारिता मन्त्री ने सहकारिता को कलंकित कर दिया है (व्यवधान) आप इसको नियम 51 में स्वीकार कर के वक्तव्य दिलाने की कृपा करें।

(मेजों का थपथपाया जाना तथा शोर)

(श्री महाबीर प्रसाद बोलते रहे, शोर तथा व्यवधान)

श्री त्रिवेणी सहाय--

मान्यवर, आपने माननीय सदस्य को बोलने की आज्ञा नहीं दी और यह खड़े होकर न जाने क्या बोल रहे हैं? (व्यवधान तथा शोर)

श्री अध्यक्ष--

अब ऐसा लगता है कि माननीय सदन के सदस्यों को चर्चा में कोई दिलचस्पी नहीं है। अगर आप लोगों को हिस्सा नहीं लेना है तो इसको चलाना बेकार है।

(कई आवाजें--हम लोगों की है, श्रीमन्।)

श्री त्रिवेणी सहाय--

श्रीमन्, एक विषय अध्यापकों का चल रहा है। उस पर अभी तक आपका कोई निर्णय नहीं हुआ है। (शोर)

1975-76 के आय-व्ययक में अनुदानों के लिए मांगों पर मतदान--अनुदान संख्या 28--शिक्षा तथा अनुदान संख्या 87--ऋण और अग्रिम शिक्षा (क्रमागत)†

श्री महाबीर प्रसाद (जिला गोरखपुर)--

श्रीमन्, मैं समझता हूं कि इसी अवस्था में बालक का शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास, मानसिक विकास तथा भावात्मक विकास होता है। इस शिक्षा से ही इंसान-इंसान में भेद होता है। इसलिये मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि जो इस वर्ष का हमारा शिक्षा का बजट है उसका अधिकांश भाग प्राइमरी एजूकेशन पर खर्च होना चाहिये क्योंकि इसी शिक्षा का प्रभाव आगे की शिक्षा पर पड़ता है। यह शिक्षा इंसान को आगे बढ़ाती है। 1950-51 में 6-11 वर्ष के बच्चों की संख्या इस प्रकार से थी--

वर्ष	लड़के	लड़कियां
1950-51	24 लाख	4 लाख
1974-75	74 ,,	48 ,,
1975-76	75 ,,	49 ,,

†31 मार्च, 1975 की कार्यवाही से।

[श्री महावीर प्रसाद]

मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि आप भी शिक्षा जगत में प्रोफेसर रह चुके हैं और मैं एक इन्टर कालेज में लेक्चरार रहा हूं, इसलिये मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मुझे दो मिनट का समय और दे दीजिये ।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण विषय प्राइमरी एजूकेशन का है । मेरे निर्वाचन क्षेत्र बांसगांव, गोरखपुर में एक पाठशाला चल रही है कई सालों से लेकिन उसमें न टाट पट्टी है, न अध्यापक के लिये कुर्सी है और भवन तक नहीं है । इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये । सुझाव के रूप में मैं यह कहना चाहता हूं कि अनुदान जो होता है उसके लिये 55 जिलों का सर्वेक्षण करने के बाद उसका वितरण होना चाहिये । (व्यवधान के मध्य) कहां पर स्कूल नहीं है, कहां पर स्कूल होना चाहिये, कौन सा क्षेत्र पिछड़ा हुआ है, मान्यवर, आपके माध्यम से सरकार से मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस पर ध्यान देना चाहिये । दूसरा निवेदन यह है कि जो हमारे विरोध पक्ष के माननीय सदस्य लोग शोर मचा रहे हैं इनको आप बैठा लें । किसी विद्वान ने लिखा है कि जब तक कि बड़े-बड़े उद्योगों का, जब तक कि व्यापारीकरण का राष्ट्रीयकरण नहीं होता है तब तक समाजवाद ऐसी कोई चीज नहीं आ सकती है । मैं आपके माध्यम से सरकार से और माननीय मुख्य मन्त्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये ।

उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी ।
जो हो रहा अवनत अभी, उन्नत रहा होगा कभी ।।
हंसते प्रथम जो पद्म हैं तम पंथ में फंसते वही ।
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो, अन्त में हंसते वही ।।

इन शब्दों के साथ मैं प्रस्तावित जो बजट है, उसका समर्थन करता हूं और कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)--

मान्यवर, सहकारिता के नाम पर माननीय राजमंगल पाण्डेय, मन्त्री महोदय ने घोर भ्रष्टाचार पैदा कर रखा है । मैं इसके विरोध में सदन का त्याग करता हूं ।

(श्री पुरुषोत्तम कौशिक सदन त्याग कर चले गये)

(श्री मोहन लाल कपूर के पुकारे जाने पर)

श्री मोती लाल देहलवी (जिला कानपुर)--

[× × × × ×]

श्री अध्यक्ष--

माननीय मोती लाल देहलवी का नहीं लिखा जायगा, ये बिना इजाजत के खड़े हुए हैं ।

श्री मोती लाल देहलवी--

[× × × × ×]

श्री अध्यक्ष--

माननीय मोती लाल देहलवी का नहीं लिखा जायगा । माननीय मोहन लाल कपूर आप नहीं बोलेंगे? आज अध्यापकों के बारे में अनुदान है आप सब सारा दिन कह सकते हैं, लेकिन आप कहना नहीं चाहते हैं । माननीय मोती लाल जी आप अव्यवस्थित हैं । आप का सवाल भेज दिया गया है ।

[×××] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया I

श्री मोती लाल देहलवी––

[× × × ×]

श्री अध्यक्ष––

अगर आप इस तरह से करेंगे तो हमेशा के लिए आप का सवाल खारिज कर देंगे । आप बैठें । [× × ×] आप खड़े हैं । आप बैठें । आप बैठ जाइये । बैठिय आप ।

श्री मोती लाल देहलवी––

[× × × ×]

श्री अध्यक्ष––

आप एकदम बैठिए । एकदम बैठ जाइये । आपका नहीं लिखा जायगा । अब आपको मैं बैठने का आखरी आदेश देता हूं, और नहीं बैठे तो आपका ही दोष होगा, [× × ×] आप बैठिये ।

श्री मोतीलाल देहलवी––

[× × × ×]

श्री अध्यक्ष––

माननीय मोती लाल देहलवी नहीं बैठते हैं, तो ऐसे लोगों को बैठाल देना चाहिए । आप सबको मदद करनी चाहिए मेरी ।

(श्री मोती लाल देहलवी बैठ गये ।)

*श्री मोहन लाल कपूर (जिला मेरठ)––

अध्यक्ष महोदय, जो कटौती का प्रस्ताव माननीय ओम प्रकाश सिंह जी ने प्रस्तुत किया है, मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं । मुझे बहुत दुख है कि यद्यपि शिक्षा इतना महत्वपूर्ण विषय है लेकिन यहां पर न उच्च शिक्षा मंत्री जी और न ही दूसरे शिक्षा मंत्री जी उपस्थित हैं ।

श्री अध्यक्ष––

ठीक है । शिक्षा मंत्री जी को रहना चाहिए । शिक्षा मंत्री नहीं आते हैं तो कार्यवाही करूंगा ।

श्री मोहन लाल कपूर––

मान्यवर, जो शिक्षा मंत्री जी ने वक्तव्य दिया है वह गलत दिया है । अध्यापक सत्याग्रह कर रहे हैं । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय सदन में जितने भी विधेयक आते हैं वे संशोधन विधेयक आते हैं । आपको पता होगा कि शहरी सम्पत्ति निर्धारण विधेयक जो आया वह भी संशोधन विधेयक आया । उत्तर प्रदेश शिक्षा विधि (संशोधन) विधेयक 1975 जो है वह भी संशोधन विधेयक है । बेसिक शिक्षा का विधेयक 1972 में आया और 1975 में संशोधन हुआ । तो मैं कहना चाहता हूं कि माननीय मन्त्री जी और उनके विभाग की यह आदत हो गयी है कि बिना सोचे समझे विधेयक ला देते हैं और फिर बाद में संशोधन करते हैं ।

नोट:––[X X X] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया ।

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री मोहन लाल कपूर]

मान्यवर, कई सालों से सदन में यह मांग होती रही है कि माध्यमिक परिषद् का पुनर्गठन किया जाये । मान्यवर, मैं बताना चाहता हूं कि यह परिषद् 1921 में गठित हुई थी और 1921 में गठित होने के बाद जो प्रक्रिया रखी गयी है, उसमें अध्यापकों का प्रतिनिधित्व है, चैम्बर का प्रतिनिधित्व है और इसी तरह से विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व है और प्रधानाचार्य का प्रतिनिधित्व है । यह 1921 में बनी थी और आज जो स्कूल और कालेज हैं उनकी संख्या बढ़ गयी है, लेकिन इसमें अध्यापकों और प्रधानाचार्यों का प्रतिनिधित्व नहीं बढ़ा है ।

मान्यवर, माननीय मन्त्री जी ने और इनके विभाग ने इस ओर कभी सोचा नहीं । किसी तरह से अध्यापकों की हड़ताल टल जाये । जो आदेश हैं पाठ्यक्रम बनाने का उसको इन्होंने समाप्त कर दिया । उसके लिये उनको क्षमा नहीं किया जा सकता है । इन्होंने आज भी शिक्षा के राष्ट्रीयकरण का कोई स्वरूप स्वीकार नहीं किया है । इन्होंने आज इसमें झमेला खड़ा कर दिया है । दूसरी बात इसमें पेन्शन की कही गयी है । पेंशन में वृद्धि पर विचार करने क लिए एक समिति बनायी गयी है । इस सम्बन्ध में 75 रु0 की सीलिंग लगा दी है । अध्यापकों की मांग है कि पेंशन में समानता दी जाय । परन्तु मैं यह पूछना चाहता हुं कि वृद्धि पर ही आपने समिति क्यों बना दी । आपको क्या कठिनाई थी कि पेंशन की वृद्धि के साथ-साथ समानता पर भी आप विचार कर लेते । आपने यह बात जल्दी में कर दी इस लिए अध्यापक आंदोलित है, वह आन्दोलन कर रहा है । मेरी मंत्री जी से प्रार्थना है कि वे समानता की बात को उसमें रखें ।

दूसरी बात जो मुझे निवेदन करनी है वह यह है कि जो अवकाश प्राप्त अध्यापक हैं, उनको अनुग्रह पेंशन दी है । जो यहां पर निर्णय हुआ है उसमें आपने प्रतिबन्ध लगा दिया है कि 30–6–64 से सेवा निवृत्ति होने वाले शिक्षकों पर भी लागू होगी । 64 स पहले निवृत्त होने वाले शिक्षकों को जिन्हें अनुग्रह पेंशन मिल रही है, उनको भी इस निर्णय के अनुसार पेंशन नहीं मिलेगी । मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि जो अवकाश प्राप्त अध्यापक हैं, उन्होंने क्या गलती की है जिसके कारण उनकी पेंशन को आप बढ़ाना नहीं चाहते हैं ? वे बहुत ही निर्धन लोग हैं और जब वे रिटायर हुए थे, तब तो और भी कम उन्हें वेतन मिलता था । इसलिए मेरा निवेदन यह है कि 30–6–64 से जो अवकाश प्राप्त अध्यापक हैं, उन सब के मामलों पर आप विचार करें ।

एक बात मुझे और कहनी है । आपने निरीक्षण भत्ता 3 रुपये से बढ़ाकर 5 रुपये कर दिया है । मैं जानना चाहता हूं कि क्या निरीक्षक ही काम करता है, क्या उसमें टेब्युलेटर्स काम नहीं करते हैं, या परीक्षा की कापियों के परीक्षक काम नहीं करते हैं, या जो पेपर सेटर्स हैं, वे काम नहीं करते हैं । यहां पर हर प्रकार के अध्यापक हैं जो तरह-तरह के काम करते हैं । आपको हर एक के मामले पर विचार करके निर्णय लेना चाहिए, केवल एक के बढ़ा देने से काम नहीं चलने वाला है, वह तो स्वागत योग्य है ही । आपको सब के बारे में विचार करना चाहिये था, वह भी आपने नहीं किया है ।

जब से आपने ट्रेजरी से वेतन दिलाने की प्रथा कायम की है, 1–4–71 के पूर्व के हजारों ऐसे अध्यापक हैं कि जिनको पहले का एरियर नहीं मिला है । उस समय के जो सम्बन्धित लोग हैं, उनको वह वेतन का एरियर नहीं देना चाहते ह, उसके लिए भी सरकार ने कोई निर्णय नहीं लिया है ।

इसके अतिरिक्त एक बात और मैं आपकी जानकारी में लाना चाहता हूं कि जो प्राइमरी स्कूल्स, हाई स्कूल्स और इन्टरमीडिएट कालेजेज के साथ चलते हैं, उनमें जो प्राइमरी कक्षाओं के अध्यापक हैं, उनको चपरासियों से भी कम 80 या 100 रुपये वेतन मिलता है । सरकार

को चाहिये कि जो इस प्रकार के प्राइमरी अध्यापक हैं, उनका भी वेतन फिक्स करना चाहिये। आज क्षति पूर्ति का करोड़ों रुपया बेकार जाता है। इस रुपय को आप बचा सकते हैं। मेरी मन्त्री जी से प्राथना है कि जो हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट कालज में प्राइमरी कक्षाओं क पढ़ाने वाले हैं, उनका वेतन निर्धारित किया जाय और समय से संयुक्त खाते से दिया जाय।

बेसिक शिक्षा के सम्बन्ध में भी मैं कुछ कहना चाहता हूं। जैसा मैंने पहले भी कहा और अब भी कहता हूं कि आप एक ऐसा बिल ला रहे हैं जिसमें फिर आप जिला परिषदों के अध्यक्षों को अधिकार देने जा रहे हैं। इस प्रकार से जो पहिया आगे चल चुका है, उसे फिर वापस करन जा रहे हैं। जिला परिषदों के अधिकार को बढ़ाकर आप शिक्षा में हस्तक्षेप करना चाहते हैं, इससे भ्रष्टाचार भी बढ़ेगा और हस्तक्षेप भी बढ़ेगा इसलिये मेरा निवेदन है कि जिला परिषदों के अध्यक्षों को जो अधिकार आप देने जा रहे हैं, न तो वे आवश्यक हैं और न आपको उन्हें देना ही चाहिये। जिला स्तर पर आप संचालन समितियां बनायें। उसमें जनता के प्रतिनिधि रहने चाहिये। इसी प्रकार से चमोली, मेरठ और अनेक जगह बेसिक स्कूल्स के अध्यापक, अध्यापिकाओं को आप वेतन नहीं दे रहे हैं। उनमें से तमाम अध्यापक विधान भवन के सामने सत्याग्रह कर रहे हैं परन्तु आपने उनकी मांगों पर कोई विचार नहीं किया। आप उनकी मांगों पर विचार करें। उनकी भी बात आपको सुननी चाहिये और उनकी मांगों को स्वीकार करना चाहिये।

जो मान्टेसरी टाइप स्कूल्स हैं उनको भी आप नियंत्रण में लें। उनके भी नियम बनने चाहिये, उनके वेतन निर्धारित होने चाहिये। जिस तरह से माध्यमिक शिक्षा को नियंत्रित किया है उसी प्रकार से इनको भी नियंत्रित करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त 1974-75 में जिन स्कूल और कालेजों को मान्यता समिति ने मान्यता दे दी थी, वह अब आपने समाप्त कर दी है। मैं चाहूंगा कि आप उनको मान्यता दे दें।

एक बात और है। हाई स्कूल और इन्टर की जब परीक्षा हो जाती है उसके बाद 25-30 हजार बच्चों का परीक्षाफल रोक लिया जाता है और जो फर्स्ट और सकेंड डिवीजन में पास होते हैं ऐसे बच्चों का भी रोक लिया जाता है। परीक्षा केन्द्र में जो लड़के पकड़े जायं, वह तो ठीक है परन्तु जो स्क्रीनिंग द्वारा पकड़े जाते हैं यह ऐसे लड़कों के साथ अन्याय हो रहा है। मंत्री महोदय इसकी जांच करें कि यह स्क्रीनिंग कैसे होती है। यह प्रथा बन्द होनी चाहिये। इससे बड़ा रोष और क्रोध अभिभावकों और बच्चों में पैदा हो रहा है कि वह नकल करते नहीं हैं और फिर भी पकड़ लिये जाते हैं।

एक बात राजकीय विद्यालयों के बारे में कहना चाहता हूं। इनमें बहुत से अध्यापक अस्थायी हैं। इनको आप स्थायी करें। इसके अतिरिक्त उनमें पदोन्नति के कोई नियम नहीं हैं। तो उनकी आप पदोन्नति करें। इसी प्रकार से ऐसे अनेक हाई स्कूल और इन्टर-मीडियेट कालेज हैं जहां पर आपने नियुक्तियां नहीं की हैं। आपको नियुक्तियां करनी चाहिये। इसी प्रकार प्रदेश में जितने भी कार्यक्रम होंगे, वह सब के सब राजकीय विद्यालयों में होते हैं। इसीलिये राजकीय विद्यालय साल में केवल 50-60 दिन खुलते हैं। राजकीय विद्यालयों में जो सब से अच्छे बच्चे जाते हैं वे भी वहां जाकर थर्ड क्लास बन जाते हैं। क्यों? राजकीय विद्यालयों में पढ़ाई की ज्यादा चिन्ता कीजिये और जो कार्यक्रमों की भीड़ है, उसे समाप्त करें।

उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में यह कहना चाहता हूं कि यू०जी०सी० ने जो वेतनमान आपको दिये हैं, उसमें लायब्रेरियन और स्पोर्ट्स डायरेक्टर के वेतनमान फिक्स नहीं किए। उनको भी वेतनमान देने चाहिये। दूसरे, जब से वेतनमान दिये गये हैं, उससे पूर्व जो वे परीक्षक थे उनसे आप एरियर लेना चाह रहे हैं। यह अन्याय होगा। इसलिये मैं चाहूंगा कि उनसे वह पैसा वसूल न किया जाय।

[श्री मोहन लाल कपूर]

माध्यमिक विद्यालय और उच्च शिक्षा के महाविद्यालय जो अनएडेड हैं उनमें भी उनके वेतन वितरण की व्यवस्था करें। खेल कूद के मंत्री महोदय बैठे हों तो एक निवेदन करना चाहूंगा कि मेरठ में एक होस्टल खुला हुआ है उसको बन्द करने की चर्चा चल रही ह। वह बन्द न किया जाय।

अन्त में केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि मंत्री महोदय दिन रात यह ढोल पीट रहे हैं कि हमने इतना बजट बढ़ा दिया परन्तु जो व्यय 74–75 में हुआ था वह 24 प्रतिशत था। 1972–73 में 29 प्रतिशत थी। इस तरह से आप देखें कि व्यय में भी कमी हुई है। साक्षरता भी अपने यहां केवल 18 प्रतिशत ही है जब कि केरल में 60 प्रतिशत है। माननीय शिक्षा मंत्री जी युवक हैं, मैं चाहूंगा कि जितनी भी समस्यायें मैंने बतायी हैं, उनकी ओर वे अवश्य ध्यान दें और उनको हल करें। इन शब्दों के साथ मैं इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बाबूलाल तिवारी (जिला झांसी)—

मान्यवर, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे एक वर्ष में कम से कम एक बार तो अवसर प्रदान किया....

श्री अध्यक्ष—

एक बार ही आपने अवसर लिया। (हंसी)

श्री बाबूलाल तिवारी—

माननीय शिक्षा मंत्री जी ने जो शिक्षा सम्बन्धी अनुदान प्रस्तुत किया है। मैं उसका समर्थन करता हूं। जैसा इस देश का वातावरण है और जैसी यहां की पूंजीवादी व्यवस्था है। उसको देखते हुये यह कहा जा सकता है कि यह बजट पूर्णतया क्रान्तिकारी, प्रगतिशील और सांगोपांग है। हमारे शिक्षा मंत्री जी ने सर्वप्रथम अध्यापकों की ओर ध्यान दिया है।

(इस समय 12 बजकर 50 मिनट पर उपाध्यक्ष, कुंवर शिवनाथ सिंह कुशवाहा पीठासीन हुए।)

चाहे प्राइमरी स्कूल के अध्यापक हों, चाहे जूनियर हाई स्कूल के हों, चाहे हाई स्कूल व इन्टर के हों, या डिग्री कालेज के हों अथवा विश्वविद्यालय के हों, सभी को अच्छा वेतन मिले, इस ओर उन्होंने ध्यान दिया है जिसके लिये मैं उनको बधाई देना चाहता हूं। स्कूलों की संख्या बढ़ाने का भी प्रयास किया गया है, कई विश्वविद्यालय खोलने की घोषणा पिछले वर्ष हो चुकी है, इस वर्ष भी हुई ह। आशा है उस ओर जल्दी कार्य आरम्भ हो जायेगा। प्राविधिक शिक्षा की ओर भी उनका ध्यान गया है। भाषाओं के विकास की भी चर्चा की गयी है। उर्दू, फार्सी, संस्कृत और दक्षिण की भाषायें भी यहां चलें, इस ओर भी ख्याल रखा गया है। हरिजन तथा जनजाति के बालकों की ओर भी ध्यान दिया गया है। कृषि विज्ञान की शिक्षा का भी पूरा ध्यान रखा गया है। प्रौढ़ शिक्षा तथा मनोविज्ञान की शिक्षा का भी ध्यान रखा गया है। अध्यापकों की प्रशिक्षण व्यवस्था ठीक हो। इसका भी ध्यान रखा गया है। सैनिक शिक्षा, शोध कार्य तथा स्काउटिंग आदि का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। इसलिये मैं इस बजट का समर्थन करता हूं।

मैं माननीय मंत्री जी से एक निवेदन भी करना चाहता हूं। वे नौजवान हैं। विद्वान भी हैं। उनको इस पंचरंगी शिक्षा को समाप्त करने की ओर ध्यान देना चाहिये। आज 5 किस्म की शिक्षा हमारे यहां चल रही है। कहीं जिला परिषदों द्वारा, कहीं प्राइवेट संस्थाओं द्वारा, कहीं सरकार द्वारा, कहीं कान्वेन्ट पद्धति द्वारा आदि आदि प्रकार से जो शिक्षा दी जा रही है, इसे बन्द करके एक-सी शिक्षा व्यवस्था होना चाहिये। दुख की बात है कि आज 27

वर्षों के बाद भी एक-सी शिक्षा हमारे यहां नहीं हो पायी है, यह देश के समाजवाद के लिये एक कलंक है। शिक्षा का तो राष्ट्रीय रूप होना चाहिये, एक-सी शिक्षा होनी चाहिये। मैं मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि चाहे अध्यापक आन्दोलन करें या न करें, प्रदेश में सम्पूर्ण शिक्षा का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये। चाहे नर्सरी शिक्षा हो, चाहे हाई स्कूल की शिक्षा हो, चाहे विश्वविद्यालय की शिक्षा हो, सभी प्रकार की शिक्षा को सरकार को अपने हाथों में लेना चाहिये।

मैं 30 साल तक अध्यापक रहा हूं, एक हाई स्कूल भी चला रहा हूं। जब मैं अपने सारे स्वार्थों को छोड़ कर चिन्तन करता हूं तो मुझे लगता है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति आज के दिनों में बिल्कुल एक कलंक है और समय से पहिले सम्पूर्ण शिक्षा का राष्ट्रीयकरण सरकार को कर देना चाहिये। वरना हो क्या रहा है? एक तरफ बड़े-बड़े उद्योगपतियों के लड़के, बड़े-बड़े नेताओं के लड़के, बड़े-बड़े अधिकारियों के लड़के कंन्वेन्ट स्कूल में शिक्षा पाते रहें और बड़े-बड़े अधिकारी और नेता बनते रहें, उद्योगपति बनते रहें और दूसरी तरफ सरस्वती के मन्दिर उनके बच्चों के लिये बन्द रहें जो गरीब हैं, अबोध हैं, जुलाहे हैं, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं, मजदूर हैं, छोटे-छोटे काम करने वाले हैं।

(एक सदस्य के सदन में घूमने पर)

श्री उपाध्यक्ष––

माननीय सदस्य स्वच्छन्द रूप से न घूमा करें। इसकी भी एक मर्यादा है, यह विधान सभा है, यह कोई पार्क नहीं है।

श्री बाबूलाल तिवारी––

डिग्री कालेज में जितने बच्चे पढ़ते हैं, आप पता लगायें तो देख सकते हैं कि प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाले 100 बच्चों में मुश्किल से 5–10 लड़के ही डिग्री कालेज तक की शिक्षा पाते हैं। तो मैं आपके माध्यम से सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी शिक्षा का राष्ट्रीयकरण अवश्य होना चाहिये और यह पंचरंगी शिक्षा जल्द समाप्त होनी चाहिये।

एक निवेदन मुझे आपके द्वारा और करना है और आपको तो यह विदित ही है कि हाई स्कूल, इंटर कालेज और डिग्री कालेज के अध्यापकों को एम० एल० सी० के चुनाव में वोट करने का हक होता है और एम० एल० सी० चुने जाने का भी हक होता है लेकिन प्राइमरी स्कूल के अध्यापक जो प्रदेश की रीढ़ हैं, जान हैं, उनको न तो मत देने का अधिकार होता है और न चुने जाने का अधिकार होता है। मैं आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों को भी वही अधिकार हों जो इंटर कालेज, हाई स्कूल और डिग्री कालेज के अध्यापकों को मिले हुए हैं। उनको वही अधिकार मिलने चाहिये। हमारे शिक्षा मंत्री जी जो एक बड़े शिक्षा शास्त्री भी हैं, उनसे निवेदन है कि आज कल जो सेक्शन बनाने की पद्धति है वह शिक्षा के बिल्कुल विपरीत है। 50–50 का एक सेक्शन, फिर 40–40 का सेक्शन होता है। मेरे खयाल से बच्चे जब स्कूल जाते हैं तो उनकी बुद्धि के हिसाब से सेक्सन बनने चाहिये। जैसे 30 से 50 तक का एक सेक्शन हो, 50 से 70 तक का एक सेक्शन हो और 70 से ऊपर जो बुद्धिजीवी बच्चे हैं उनका एक सेक्शन होना चाहिये। बुद्धि के हिसाब से जब सेक्शन बनाये जायं और कम बुद्धि वाले बच्चों को एक समान लाया जाय तब कहीं शिक्षा का स्तर ऊंचा हो सकता है और गरीबों के बच्चे, अबोध बच्चे तथा साधनहीन बच्चों को तरक्की मिल सकेगी। इस बात के लिये तमाम शिक्षा शास्त्री बैठ कर विचार करें और सेक्शन की वर्तमान पद्धति को बदलने का प्रयास करें।

मैं अब भाषा के संबंध में कुछ निवेदन करना चाहता हूं। हमारे यहां जो बुन्देली, अवधी, भोजपुरी आदि बोलियां बोली जाती हैं। यह बड़ी ही सशक्त भाषा है और इनका

[श्री बाबूलाल तिवारी]

भी अपने यहां एक बड़ा स्थान है। ये तमाम जन भाषायें जिनका पुराना साहित्य है, पुरानी संस्कृति है, उनका भी हम विकास कर सकते हैं। इस पर भी माननीय मंत्री जी ध्यान देंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

अन्त में मैं अपनें क्षेत्र की बात कुछ कहूं। झांसी तो एक प्रकार से देश की स्वाधीनता संग्राम की राजधानी है। महारानी लक्ष्मी बाई वहीं की थीं। हमारे मेजर ध्यानचन्द और अशोक भी वहीं के हैं। झांसी के लिये आप जो कुछ भी करेंगे, उससे आपका सम्मान होगा और उत्तर प्रदेश का सम्मान होगा।

(कुछ सदस्यों के खड़े होने पर)

श्री उपाध्यक्ष---

अभी माननीय सदस्य बोल रहे हैं। आप अपना स्थान ग्रहण करें। जब वक्त आये, तब देखेंगे।

*श्री जगदीश नरायन त्रिपाठी (जिला मैनपुरी)---

माननीय उपाध्यक्ष जी, हम सभी इस बात को जानते हैं कि शिक्षा हमारे सामाजिक विकास का मुख्य आधार है। इसमें कोई मतभेद की बात नहीं है कि शिक्षा हमारे समाज के विकास की रीढ़ की हड्डी है और आज हमारे समाज के रीढ़ की हड्डी किस तरह बीमार हो चुकी है, कितनी कमजोर हो चुकी है। यह भी अब कोई विवाद और बहस की बात नहीं है। मान्यवर, शुरू से ही, आजादी के बाद हमारे देश के अन्दर, हमारे राजनीतिक नेताओं ने यह महसूस किया और एलान किया कि हमारें देश में जो शिक्षा पद्धति चल रही है, बुनियादी तौर पर उसमें तब्दीली होनी चाहिये। लेकिन आज आजादी के 27 सालों के बाद भी हमारे देश की शिक्षा प्रणाली में और परीक्षा प्रणाली में कोई सुधार नहीं हुआ है। और अब यह आमतौर पर हमारे समाज का रोना बन गयी है और इसी की वजह से मान्यवर हम साफ देखते हैं, समूचा राष्ट्र देखता है कि आज शिक्षा प्रणाली से कितनी पेचीदा समस्यायें हमारे समाज में पैदा हो गयी हैं। यह नौजवानों में आमतौर पर चलने वाली बेकली और यह उद्वेलन, यह स्थिति क्यों हैं? आज आम तौर से हमारे नौजवानों का दोष दिया जाता है। राज पक्ष के लोग आमतौर पर नौजवानों को दोष देते हैं कि वह तो अनुशासनहीन हो गये हैं, वह तो मनमानी करने पर उतर आये हैं। मान्यवर, जो पूजा के केन्द्र हैं, जो पूजा के सही मानों में मंदिर हैं आज उनकी क्या स्थिति हो गयी है। मान्यवर, मैं निवेदन करना चाहता हूं आपके माध्यम से इस सदन से कि इन सारी चीजों की बुनियादी वजह है आज की यह रोगी शिक्षा प्रणाली। और इसलिये जब शिक्षा के संबंध में यहां विवाद हो रहा है, बहस हो रही है कि मान्यवर, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जब तक कोई बुनियादी कदम हमारी शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करने के लिये उठता नहीं है तो चाहे कितनी ही पैबन्द-बाजी की जाय कोई मौलिक सुधार होने की आशा नहीं है। कोई कहीं गुंजाइश नहीं है।

आज जो शिक्षा प्रणाली हमारे देश में चल रही है, सभी जानते हैं कि यह अंग्रेजों की है और यह ऐसी प्रणाली है जो साम्राज्यवादी हित के लिये दी जाती थी। लेकिन साम्राज्य-वादी के हित के लिये चलायी जाने वाली शिक्षा प्रणाली एक आजाद देश के अन्दर नहीं चल सकती। मगर आजादी के 27 सालों के बाद जो यह चह रही है तो यह संतोष की बात नहीं है, सभी इससे सहमत होंगे कि यह शर्म की बात है। और इसलिये मैं आपकें माध्यम से मान्यवर, सरकार से कहना चाहता हूं और पुरजोर आग्रह करना चाहता हूं कि यह सरकार पैवन्दबाजी के काम को बन्द करके बुनियादी तौर पर कोई परिवर्तन करने का कारगर कदम उठायें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

यह जो शिक्षा है हमारे देश में और हमारे राज्य में, खासतौर से हमारे राज्य में विभिन्न श्रेणियों की शिक्षा की क्या स्थिति है, कितनी पेचीदगियां हैं, हमारे शिक्षक और छात्र कितना परेशान हैं और उनकी कितनी दिक्कतें हैं । इसको सब जानते हैं । इनको बताने के लिये न तो समय ही है और न यहां सारी चीजें जो हैं उनका विवरण पेश करने की कोई विशेष महत्व है।

मान्यवर, मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि बेसिक शिक्षा जो पिछले दिनों जिला परिषदों के अन्दर थी और आम तौर पर उससे जो ऊब पैदा हुयी थी तथा अध्यापकों ने जो मांगे की थीं और जो उनको असंतोष था उसका एक रास्ता निकाला गया था कि जिला परिषदों से बेसिक शिक्षा ले ली गयी । पर मान्यवर, अब ऐसी आमतौर पर चर्चा है, विश्वसनीय सूत्रों से हमें मालूम हुआ है कि वह फिर से जिला परिषदों को दी जा रही है । अगर ऐसा है तो मैं समझता हूं कि यह एक बड़ा चांटा होगा हमारे गरीब अध्यापकों पर अध्यापक, जो समाज की बुनियादी तौर पर जो इकाई है, हमारे समाज की दीवार की जो ईटों का निर्माण करता है, उसके ऊपर ।

मान्यवर, इसके साथ मैं एक निवेदन करूं कि अभी यहां असेंबली के सामने बेसिक शिक्षकों का कैम्प लगा हुआ है । हंगर स्ट्राइक चल रही है । उनसे बात हो रही थी । मान्यवर, वहां मैंने उनकी जो फाइल थी उसमें देखा । एक सरकुलर हमारी सरकार की तरफ से तैयार हो गया है, वितरण किया जाना है और वह सरकुलर है कि अब प्राथमिक विद्यार्थियों से 15 रु0 प्रति मास तक फीस ली जा सकती है । कम लें तो कोई एतराज नहीं लेकिन 15 रु0 से ज्यादा नहीं लेना चाहिये । इसके माने सरकार ने समझ लिया कि नीचे का साधारण आदमी, किसान और मजदूरों के लड़के जो विद्यार्थी हैं वह ऐसे हो गये हैं कि उनसे 15 रु0 लिये जायं तो वह कोई बेजा नहीं है। यदि यह सरकुलर जाना है तो मैं समझता हूं कि सरकार की शिक्षा नीति का यह जबरदस्त जन विरोधी कदम है । यदि यह सरकुलर आयेगा तो इसका कदम-कदम पर विरोध होगा।

मान्यवर, इसके साथ ही आज हमारी शिक्षा की जो दुर्व्यवस्था है, उस पर दोनों पक्ष के माननीय सदस्यों ने राय जाहिर की है । मैं उदाहरण के तौर पर मैनपुरी जिले को लेता हूं । जहां से मैं आता हूं । वहां के जिला विद्यालय निरीक्षक का नाम आपके सामने मैं रखना चाहता हूं जैसे हांडी में से एक चावल पक जाता है तो पूरा-पूरा भात पक गया कि नहीं यह मालूम कर लिया जाता है । मैनपुरी के जिला विद्यालय निरीक्षक, श्री हरीश चन्द्र तिवारी हैं, इतने भ्रष्ट और इतने असामाजिक हैं कि वह तानाशाही रवैये को चलाते हुए वहां काम कर रहे हैं । हर वक्त उनके विरुद्ध प्रदर्शन और अनशन किये जा रहे हैं और शासन स्तर पर शिकायती पत्र आ रहे हैं । उच्च अधिकारियों के सहमत हो जाने के बावजूद कि भ्रष्ट अधिकारी है और जहां गया वहां 2—3 महीने से ज्यादा टिके नहीं और यदि सही माने में विजीलेंस में जांच शुरू हो जाय तो उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। लेकिन उसके बावजूद भी उसके विरुद्ध कोई कदम उठाने की उच्च अधिकारियों ने सोचा नहीं। यदि ऐसे अधिकारी जगह-जगह पर रहे तो लूली लंगड़ी शिक्षा जहन्नुम में चली जायेगी और जनता आशा से निराशा की तरफ सोचने के लिये मजबूर हो जायेगी।

मान्यवर, आज शिक्षा पद्धति जो है, उसका काम से कोई ताल्लुक नहीं है । विद्यार्थी पढ़ने के बाद सड़कों पर नेताओं के पीछे नौकरी के लिये दौड़ता है । इस वजह से आज बड़ी तादाद में ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टर और इंजीनियर बेकारों की फौज में भरती हो रहे हैं और वह समाज के लिये खतरा बन रहे हैं जिसको हम सब जानते हैं । इसलिये मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिये । ऐसी शिक्षा जो काम पर आधारित है, और स्कूल से निकलने के बाद तुरन्त

[श्री जगदीश नरायन त्रिपाठी]

काम मिल जाय, होनी चाहिये । बाबू बनाने वाली शिक्षा नहीं होनी चाहिये । अंग्रेजों की नीति के विरुद्ध शिक्षा नीति बने । ऐसी शिक्षा पद्धति जिसके अन्दर एक राज्य और दूसरे राज्य में भिन्नता न हो और समूचे रूप से एक शिक्षा देश में चलायी जाय। सही माइनों में हमारी समस्याओं को समझने वाला हो, सही मानों में जिस मंशा को लेकर हमने आजादी हासिल की थी, और जिस चीज को लेकर हमने आजादी के बाद अभियान चलाया था इस देश के नवनिर्माण का, उस को पूरा कर सके । यही मुझे आपसे कहना है ।

श्री अनवार जमील (जिला फर्रुखाबाद)---

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे शिक्षा मंत्री द्वारा प्रस्तुत बजट पर बोलने का अवसर दिया । मैं इस बजट के समर्थन के लिये खड़ा हुआ हूं । जैसा कि उस तरफ के भाई ने तर्क दिया है....

श्री काशी नाथ मिश्र (जिला बलिया)---

मान्यवर, मैं कल से बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं और अगर आप लिस्ट से बुलवायेंगे तो मैं कन्टेम्ट आफ हाउस का नोटिस दूंगा । यह आप नोट कर लें । नियम तो यह है कि अध्यक्ष या उपाध्यक्ष की निगाह जिस पर पड़े उसे बुलवायें, अगर आप किसी के इन्स्ट्रक्शन्स पर बुलाते हैं तो कहें...

श्री उपाध्यक्ष---

ठीक है । माननीय सदस्य बैठने का कष्ट करें।

श्री काशीनाथ मिश्र---

किसी के यहां जाकर बोलने के लिये नाम देना और सिफारिश करना, मैं अपने स्वाभिमान के प्रतिकूल समझता हूं । मेरा बोलने का मौलिक अधिकार है, आपका कर्तव्य है कि मुझे बुलायें ।

श्री उपाध्यक्ष---

ठीक है, मैंने नियम के अनुरूप ही माननीय सदस्य को बुलाया है । कोई जरूरी नहीं कि आपको पहले बुलाऊं ।

श्री अनवार जमील---

आपके माध्यम से माननीय सदस्यों को यह बताना चाहता हूं कि सन् 1946-47 में शिक्षा का बजट 3.18 प्रतिशत था, जो कि अब कुल बजट का 11 प्रतिशत है, इस तरीके से...

श्री उपाध्यक्ष---

मैं अधिकारियों से बार-बार यह आग्रह कर चुका हूं कि बातचीत न करने की कोशिश करें, फिर भी इस प्रकार की अनधिकृत चेष्टा करते रहते हैं, अगर बात करना हो तो बाहर चले जायं।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)---

नियम के अन्दर अगर कोई प्राविधान है तो शिक्षा निदेशक के विरुद्ध अवश्य कार्यवाही करें।

श्री अनवार जमील---

जैसा कि माननीय सदस्य कह रहे थे कि प्राइमरी एजूकेशन पर कतई ध्यान नहीं दिया गया है, तो मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि इस बजट में सबसे ज्यादा यानि कुल रकम का 53 प्रतिशत प्राइमरी एजूकेशन पर इनवेस्ट किया गया है। हमारे कान्स्टीटयूशन में यह दिया हुआ है कि 14 साल के बच्चे को फ्री एजूकेशन दी जाय, उस सिलसिले में मैं आपके सामने सन् 1950 के आंकड़े पेश करना चाहता हूं। प्राइमरी स्कूल में उस समय 24 लाख लड़के और 4 लाख लड़कियां थीं। अब सन् 1974-75 में 74 लाख लड़के और 48 लाख लड़कियां हैं--यानि लड़कों की संख्या में 3 गुना और लड़कियों की संख्या में 12 गुना की बढ़ोत्तरी हुई है। सन् 1975-76 में यह अनुमान किया गया है कि लड़कों की संख्या 75 लाख और लड़कियों की संख्या 49 लाख हो जायगी।

इसी तरीके से मान्यवर, प्राइमरी स्कूल इस पंचसाला प्लान में गांवों में 7128 खुलेंगे, और शहरों में 193 खोलने का अनुमान है। हर 750 की आबादी पर कम से कम इस पंचसाला प्लान में हर गांव में एक स्कूल हो जायगा और पहाड़ी क्षेत्र पर 1 किलो मीटर पर और शहरी क्षेत्र में हर डेढ़ किलोमीटर के रेडियस पर उत्तर प्रदेश भर में एक स्कूल हो जायगा। सन् 1974-75 में 2322 स्कूल गांवों में खोले गये और 54 शहरों में खोले गये। और 74-75 में प्राइमरी स्कूल पूरे सूबे में 66 हजार थे। इन फीगर्स से यह जाहिर हो जाता है कि शिक्षा मंत्री ने प्राइमरी एजूकेशन पर काफी जोर दिया है। सरकार ने प्राइमरी एजूकेशन की पाठशाला की इमारत के लिये जहां पहले 5 हजार रुपया दिया जाता था अब उसे बढ़ाकर 14,850 रुपये कर दिया है और 74-75 में रुड़की इंस्टीट्यूट ने 9,300 रुपये फ़ी स्कूल के हिसाब से 1100 स्कूल की इमारतें बनवाई और 2700 इमारतें रुड़की इंजीनियरिंग कालेज, पब्लिक वर्क्स डिपार्टमन्ट और रूरल इंजीनियरिंग वर्क्स के जरिये बनाने का विचार है। इसके अलावा 25 परसेन्ट लड़के जो प्राइमरी एजूकेशन में 5वीं कक्षा तक नहीं पहुंच पाते हैं, उनकी यूनिसेफ तथा एन0 सी0 आई0 आर0 टी0 के जरिये फ्री बुक्स डिस्ट्रीब्यूट् कराई गयी हैं। सेकन्डरी एजूकेशन में 11 से 14 वर्ष तक के बच्चे 40 परसेंट एजूकेशन पा रहे हैं। पांचवीं पंचवर्षीय योजना के समाप्त होने तक यह तादाद 50 परसेंट तक और छठीं पंचवर्षीय योजना समाप्त होने तक शत प्रतिशत तक मुमकिन है। इसी तरह से 975 सीनियर बेसिक स्कूल और 1740 अनुवर्ती कक्षायें भी खोलने का विचार है।

श्री उपाध्यक्ष---

सरकार ने ये आंकड़े स्वयं प्रस्तुत किये हैं। आप भी तो अपने विचार रखें।

श्री अनवार जमील---

विरोधी पक्ष ने जो यह कहा कि कोई तरक्की शिक्षा के मामले में नहीं हुई है, इसके जवाब में मैं यह आंकड़े प्रस्तुत कर रहा हूं। इन आंकड़ों से माननीय सदस्यों को अन्दाजा हो गया होगा कि सरकार ने प्राइमरी तथा सेकडरी एजूकेशन पर क्या क्या किया है? प्रदेश में सरकार ने तीन नई यूनिवर्सिटीज भी कायम की और डिग्री कालेजेज में भी बढ़ोत्तरी की।

मैं कुछ उर्दू के बारे में भी कह देना चाहता हूं। उर्दू के चार हजार टीचर्स को एप्वाइंट करने के लिये कह दिया गया है लेकिन बहुत से ऐसे हैं जिनका एप्वामेन्ट अभी तक नहीं हो पाया है। शिक्षा मन्त्री उनको दिलवाने की कोशिश करेंगे और जो जगहें खाली हैं उनको भरवाने की कोशिश करेंगे। तीन लाख रुपये उर्दू के मकतबों के लिये दिये गये हैं लेकिन बहुत से इदारे इस एड से महरूम हैं। शिक्षा मंत्री ऐसे इदारों को जो उर्दू की सर्विस कर रहे हैं इस एड को दिलाने की मेहरबानी करेंगे।

[श्री अनवार जमील]

उर्दू के टीचर्स की सेलरी दूसरे टीचर्स के एट पार नहीं है । शिक्षा मंत्री से मेरी गुजारिश है कि उर्दू के टीचर्स का वेतन दूसरे टीचर्स के बराबर कर देंगे । फर्रुखाबाद जनपद में बहुत से स्कूल ऐसे हैं जिनमें तीन चार लड़के हैं और दो-तीन मास्टर उनके लिये मुकर्रर हैं ऐसे स्कूलों को खत्म किया जाय । इसके अलावा प्राइमरी टीचर्स की तनख्वाह समय पर नहीं मिलती है । उर्दू को भी उत्तर प्रदेश की दूसरी जुबान मानना चाहिये । इसलिये मैं माननीय मन्त्री जी से गुजारिश करूंगा कि जो प्राइमरी और सेकन्डरी एजूकेशन है जो कि हम लोगों को यहां तक पहुंचाती है, मुल्क की तरक्की के लिये जो सबसे बड़ी चीज है, उनके टीचर्स का जो स्केल आफ पे है वह कम है इसलिये मैं चाहता हूं कि वे इस ओर विशेष ध्यान दें . . .

श्री उपाध्यक्ष---

आपका समय समाप्त हुआ ।

श्री अनवार जमील---

इन शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूं और बजट का समर्थन करता हूं ।

श्री गोरेलाल शाक्य (जिला इटावा)---

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से कुछ कहना चाहता हूं और यह चाहता हूं कि माननीय मन्त्री जी हमारी बातों को नोट करें और उनका निराकरण भी करने की कृपा करें । मान्यवर, अभी हाल ही में मेरी कम्बोडिया के एक स्कालर से बात हुई थी उन्होंने मुझे बताया कि वहां पर शिक्षा नि:शुल्क दी जाती है । हमारा देश और प्रदेश कहता है कि हम शिक्षा के मामले में बहुत आगें हैं । मुझे बहुत दुख है कि यहां पर शिक्षा नि:शुल्क नहीं है । हमारी सरकार ने अभी सदन में आश्वासन दिया है कि हम शिक्षा में आमूल परिवर्तन करेंगे । उस सम्बन्ध में मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं हमारी सरकार शिक्षा के बोझ को लेकर चलती है जिस प्रकार घोड़ी पर सवार व्यक्ति बोझ को अपने सिर पर रख लेता है ताकि घोड़ी पर उसका बोझ न पड़े । हमारी सरकार शिक्षा का राष्ट्रीयकरण नहीं करेगी, प्राइवेट शिक्षण संस्थाओं को अपने हाथ में नहीं लेगी क्योंकि उसके लिये ज्यादा वित्त चाहिये । क्यों आपकी राजनीति ठीक उसी तरह की है जिस तरह घोड़ी पर सवार व्यक्ति अपने सिर पर बोझ रख लेता है । इस सरकार को इतना अज्ञान और अल्पज्ञान है । जैसे हनुमान संजीवनी लेने गये तो उनको संजीवनी का तो ज्ञान नहीं था, वे सारा पहाड़ उठाकर ले आये । ठीक उसी तरह से सरकार की शिक्षा नीति है । यदि नहीं है वे हमें उसके विपरीत समझा दें। तो मैं सदस्यता से इस्तीफा देकर चला जाऊंगा ।

यहां पर हाई स्कूल तक कम्पलसरी एजूकेशन होनी चाहिये । किसी भी बालक को नहीं छोड़ा जाना चाहिए । मैं आप से पूछता हूं कि जो विद्यार्थी एम० एस० सी० या एम०-एस०—सी० ए० जी० तथा एल०एल० बी० करते हैं उनको लिपिक में रखने की क्या आवश्यकता है । हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट पास लिपिक बन सकता है लेकिन एल० एल० बी०, एम० एस-सी० या एम० एस—सी० ए० जी० लिपिक में क्यों रखा जाता है । इससे विद्यार्थियों का समय भी बरबाद होता है और उनकी शिक्षा का राष्ट्र को कोई फायदा भी नहीं होता है साथ ही विद्यार्थियों को भी कोई उससे लाभ नहीं होता है । अतः ऐसी शिक्षा को बिलकुल समाप्त कर देना चाहिये ।

जितने विद्यार्थियों की देश और प्रदेश में किसी विशेष शिक्षा के लिये आवश्यकता हो उतने विद्यार्थियों को ही एडमिशन दिया जाना चाहिये । रूस में एम० एस—सी० और एम० एस—सी० ए० जी० के विद्यार्थियों की कितनी संख्या है । वहां पर असली साइंटिस्ट हैं । उनके मुकाबले तो यहां पर एम० एस—सी० के विद्यार्थियों को इन्टर साइन्स तक का कोई ज्ञान बालकों

में नहीं रहता है । इसलिये जितने विद्यार्थियों को सरकारी व असरकारी सेवाओं में खपाया जा सके, उतने ही विद्यार्थियों को दाखिला मिलना चाहिये । इससे विद्यार्थी और राष्ट्र दोनों का फायदा होगा । आप कहते हैं कि 26 प्रतिशत इसको धन दे दिया । मैं कहता हूं कि 20 प्रतिशत से ही अच्छी एजूकेशन हो सकती है और काम चल सकता है । लेकिन यह सरकार हनुमान जैसी और घोड़ी पर सवार जैसे व्यक्ति जैसी नीति का अनुसरण कर रही है ।

श्री उपाध्यक्ष--

माननीय काशीनाथ जी, पैर सीट पर रखने की व्यवस्था नहीं है । माननीय सदस्य पुराने सदस्य हैं । कोई नये सदस्य इस तरह का आचरण करें, तो दूसरी बात है ।

श्री ओम प्रकाश सिंह (जिला मिर्जापुर)--

अगर सदस्य के बोलते समय कुछ आप कहें, तो उसे चुप करा दें ।

श्री उपाध्यक्ष--

आप मुझे सीख न दें, मैं आपसे ज्यादा अनुभव रखता हूं ।

श्री ओम प्रकाश सिंह--

आग्रह है ।

श्री गोरे लाल शाक्य--

बहुत से माननीय सदस्यों ने कहा शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की आवश्यकता नहीं है । तो चाहे प्राइवेट सेक्टर हो चाहे सरकारी सेक्टर, दोनों में स्वयं में कोई खराबी नहीं है लेकिन चलते-चलते उसमें खराबी होती है । प्राइवेट सेक्टर को चलते-चलते हजारों वर्ष हो गये और राज्य ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया । इसलिये प्राइवेट सेक्टर में हस्तक्षेप करने की बहुत आवश्यकता है । अगर शिक्षा का राष्ट्रीयकरण पूरा न किया जाय तो कम से कम 51 प्रतिशत जरूर कर दिया जाय ताकि उन पर कन्ट्रोल रह सके ।

दूसरी चीज में प्राइमरी शिक्षकों की पदोन्नति के बारे में कहना चाहता हूं जब वह पदोन्नति पर माध्यमिक विद्यालयों के हेडमास्टर बनते हैं तो उनका वेतन जो होता है वह सीनियर टीचर से प्रधानाध्यापक का कम रह जाता है । इस प्रकार उसकी पदोन्नति न होकर उससे भी कम वेतन उसे मिलता है । इसलिये इस पर भी सरकार को ध्यान रखना चाहिये ।

इसके साथ ही साथ में इटावा की बात बताता हूं वैसे यह सारे उत्तर प्रदेश में है । तो मैं यह जानना चाहता हूं कि कितने एस0डी0आई0 व डी0आई0 ऐसे हैं जिनको एक जगह पर 10 साल हो चुके हैं या 7, 8, 9 साल हो गये हैं । जो इतने लम्बे अर्से तक रहते हैं वह तरह-तरह से अध्यापकों पर अत्याचार करते हैं । इसलिये मैं चाहता हूं कि 3 साल या 5 साल जो भी शिक्षा विभाग में नियम हो उस हिसाब से उनका तबादला करना चाहिये और इटावा में नियुक्त 3 वर्ष से अधिक अवधि वाले एस0 डी0 आई0 व डी0 आई0 का तुरन्त तबादला होना चाहिये ।

इसके साथ ही साथ बी0 एड0 के बारे में आश्वासन दे दिया है कि उसमें टेस्ट होगा उसी आधार पर भर्ती होगी । तो इस पर ज्यादा नहीं कहूंगा । लेकिन परीक्षा के बारे में जरूर कहूंगा कि वार्षिक परीक्षा खतम कर देनी चाहिये । उसके बजाय मंथली या साप्ताहिक टेस्ट कर दिये जायं और उसके आधार पर वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किये जायें ताकि विद्यार्थियों को अग्रिम पता रहे कि उसका फर्स्ट डिवीजन आयेगा या सेकिंड डिवीजन है । और वार्षिक परीक्षा सिस्टम में फर्स्ट को सेकिंड कर दिया जाता है और सेकिंड को फर्स्ट कर दिया

[श्री गोरेलाल शाक्य]

जाता है वह न हो सके । तो मंथली टैस्ट या साप्ताहिक टैस्ट हो और उसके अनुसार वार्षिक डिवीजन एलाट होनी चाहिये ।

इसके साथ-साथ सरकारी सहायता के बारे में कहना चाहता हूं कि जिसकी सिफारिश हो गई, उसे ग्रांट मिल जाती है लेकिन जो विद्यालय ग्रांट के अधिकारी हैं जो 7, 8 साल से चल रहे हैं उनको नहीं मिलती है और चार साल वाले को मिल जाती है तो यह अन्याय क्यों किया जाता है । जो ग्रांट मिलने के अधिकारी हैं, उनको सहायता मिलनी चाहिए ।

पेंशन के बारे में आज से 15 साल पहले जो टीचर्स रिटायर हुये हैं उनको वही पेंशन मिल रही है । तो आप बतायें कि उसका क्या मूल्य रह गया है । उसमें कोई बढ़ोत्तरी नहीं की गई है । अध्यापकों को इतना कम पेंशन मिलता है जो 10, 15 साल पहले रिटायर हो गये हैं उनको पेंशन में वृद्धि की जाना चाहिए । आज की आवश्यकता के अनुसार परचेजिंग पावर आफ दि मनी के अनुसार उसमें वृद्धि की जानी चाहिए ।

इसके साथ-साथ उपाध्यक्ष महोदय, मैं छात्रवृत्ति के बारे में बताना चाहता हूं आप आंकड़े तो दे देते हैं कि इतना लाख रुपया छात्रवृत्ति में दिया है । हमारे इटावा में ऐसे 5 छात्र हैं मैं नाम नहीं बताऊंगा क्योंकि समय कम है जिनके आवेदन-पत्र आये जिनको छात्रवृत्ति स्वीकार हुई लेकिन वह केवल दो महीने तक ही मिली बाकी नहीं मिली । प्रदेश के स्तर में ऐसे कितने ही विद्यार्थी होंगे, सैकड़ों की तादाद में होंगे जिनको एक साल में एक महीने मिली और 11 महीने नहीं मिली । इसलिए आप छात्रवृत्ति का एक ढकोसला पीटते हैं ।

अंशकालिक कक्षायें जो 10 से 15 और 15 से 25 तक के लोगों के लिए खोली हैं उनसे उनको कोई फायदा नहीं है । जब आप पूर्णकालिक कक्षायें ठीक से नहीं चला पा रहे हैं और उनसे विद्यार्थियों को फायदा नहीं हो रहा है तो इससे कैसे होगा ? इसलिए इसे खत्म किया जाना चाहिए ।

इसके साथ-साथ उपाध्यक्ष महोदय, मैं जब पैदा हुआ था तब से आज तक इतने वर्ष हो गये स्कूलों में यह मुंशी और पंडित को जो कहने की प्रथा चली आ रही है । इस तरह से प्रदेश और देश को जातिवाद खाये जा रहा है । यह समाप्त होना चाहिए । एक एम0 एस0-सी0 को मुंशी जी और एक हाई स्कूल को पंडित जी कहा जाता है तो यह मुन्शी जी और पंडित जी वाली बात प्रदेश और देश के स्तर पर खत्म होनी चाहिए । और इसके साथ-साथ मैंने पढ़ा एकीकरण के बारे में कि हमारे प्रदेश का एकीकरण कैसे हो । उसमें उर्दू को केवल प्रोत्साहन दिया गया है । यह एकीकरण न होकर विघटनीकरण है । जितनी भी भाषाएं हैं, उन सबको प्रोत्साहन देना चाहिये । क्या केवल उर्दू को प्रोत्साहन देने से एकीकरण हो सकता है । पाली भी ऐसी भाषा हो सकती है । इसलिये केवल उर्दू के एकीकरण की बात करना भ्रामक है वेद पंडितों की तरह पाली भाषा के विद्वानों को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिये ।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)—

(व्यवधान) मै एक स्पष्टीकरण चाहता हूं। माननीय सदस्य ने कहा कि मैं सरकार से जानना चाहता हूं, इस पर उन्होंने (श्री रामायणराय) ने कहा कि "मैं जानता हूं।"

श्री उपाध्यक्ष—

आपका समय समाप्त । (फिर भी बोलते रहने पर)आपका समय समाप्त । माननीय शाक्य जी] बैठने की कृपा करें । अब काशीनाथ मिश्र मात्र 10 मिनट में आपको अपना भाषण समाप्त करना है ।

श्री काशीनाथ मिश्र---

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों ने कल से जो बहस के दौरान कहा मैंने उससे नतीजा यही निकाला है कि उत्तर प्रदेश सरकार की शिक्षा की कोई नीति नहीं है। पिछले सत्ताइस सालों से सरकार की कोई शिक्षा नीति नहीं रही है। सरकार की तरफ से जो आकड़ों की किताब छपी है और जिस तरह से बहस हो रही है, उससे कोई भी व्यक्ति इस नतीजे पर पहुँचेगा कि उत्तर प्रदेश की शिक्षा विभाग में कोई भी आदमी शिक्षा नीति को समझने वाला नहीं है। इस पुस्तिका में उत्तर प्रदेश सरकार की क्या शिक्षा नीति है। सबसे पहले यह लिखना चाहिये था, किन्तु उसका कोई जिक्र नहीं है। क्या डाइरेक्टिव प्रिंसिपल्स है शिक्षा के लिये, इसका भी कोई उल्लेख नहीं है। उसमें दिया क्या है-कितने स्कूल कालेज खोले गये या कितने लड़के आये तो मैं जानना चाहता हूं कि इसमें आपकी क्या देन है। जितने खाऊ कमाऊ लोग हैं वे उत्तर प्रदेश में शिक्षा की दुकानें खोलकर अपने व्यापार को चला रहे है। इनके हाथों में ये संस्थायें व्यापार का अड्डा बनी हैं, जिनका शिक्षा से वास्तविक कोई वास्ता नहीं है। यहां जिक्र आया था कि सुल्तान पुर में कोई संस्था मिली है। यह हाल आज सभी जगह है। संस्थान बना-बनाकर सरकार से पैसा लेंगे और अपना व्यापार चलायेंगे, अपनी जेबें भरेंगे, यह आज कितने लोगो का धंधा हो गया है। इलाहाबाद के बारे में भी एक आदमी ने यह बताया कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में वर्ष में 64 नियुक्तियां हुई हैं, जिसमें से 61 कायस्त जाति के लोगों की नियुक्तियां हुई हैं। तो यह भ्रष्टाचार और व्यापार नहीं है, तो क्या है बहुत सी जगहों पर बेसिक शिक्षा अधिकारी फर्जी अध्यापक रख देते हैं और उनके नाम पर अनाप शनाप धन कमाते हैं। बलिया में इसको लेकर आन्दोलन हुआ और क्रमिक अनशन चल रहा है। इससे स्पष्ट है कि सरकार की कोई शिक्षा नीति नहीं है सरकार को कहना चाहिये था कि वह इतने दिन में उत्तर प्रदेश के हर निरक्षर आदमी को साक्षर बना देगी और इतने दिनों में सभी शिक्षित व्यक्तियों को रोजगार दे देगी किन्तु इस प्रकार की किसी भी योजना का इसमें उल्लेख नहीं है। केन्द्रीय सरकार से जो कुछ भी मिलता है साक्षरता के लिये किसानों को साक्षर बनाया जाय, उसका भी कोई लाभ नहीं दिखाई पडता है। यह कहते है कि इसके अन्तर्गत प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में 1400 राजकीय शिक्षा प्रसार पुस्तकालय तथा 3600 ग्रामीण वाचनालय खोले जा रहे हैं। तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या पुस्तकालय खोलने से साक्षरता बढ़ेगी? पुस्तकालय से तो पढ़े लोग ही लाभ उठा सकते हैं। जो अपढ़ हैं निरक्षर हैं, उनको साक्षर बनाने के लिये अपने कौन सी योजना बनायी है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों के हजारों नौजवान बी0 ए0, एम0 ए0 के डिग्रियां प्राप्त करके अपने घरों में बेकार पड़े हुए हैं। सरकार की कोई योजना हो तो उनको काम दे और इस निश्चय के साथ दे कि हम पचास साल में उत्तर प्रदेश में किसी आदमी को निरक्षर नहीं रहने देंगे। इससे बड़ा लाभ क्या होगा, एक तरफ लोगों को काम मिल जायेगा और दूसरी तरफ हम लोगों को साक्षर बना देंगे। लेकिन ऐसा न करके, इन्होंने कहा कि भारत सरकार की किसान साक्षरता योजना प्रदेश के 11 जनपदों, लखनऊ, आगरा, रायबरेली, आदि में चल रही है। पांचवीं पंच-वर्षीय योजना में क्या-क्या काम होगा इसका भी जिक्र किया है। काम कैसे होता है? किसी भी अध्यापक को रखकर कह दिया कि फलां गांव में तुम शाम को चले जाना, इतने रुपए तुम को दे दिये जायेंगे। कहीं रपट में नहीं लिखा है कि किसान साक्षरता योजना के अन्तर्गत इन 11 जिलों में से इन-इन जिलों में जो किसान, क, ख, ग, घ, अलिफ बे पे, नहीं जानते थे उनको साक्षर बनाया गया। इस तरह से गुमराह करना, इस तरह से सारा पैसा जो केन्द्रीय सरकार से मिलता है चाहे वह शिक्षा में या कैश प्रोग्राम में दिया जाता है वह विभाग के लोग खा डालते हैं या बेसिक शिक्षा अधिकारी खा लेते हैं, या जो और सम्बन्धित हैं उस पैसे को हड़प जाते हैं और जो योजना सरकार चाहती है उस पर काम नहीं किया जाता है। इसकी जांच करके विभाग के लोगों को कठोर दंड दिया जाय। यह मुल्क के साथ बड़ी गद्दारी है। जो भी योजना बनाई जाती है, चाहे वह बिजली की हो या सिंचाई

[श्री काशीनाथ मिश्र]

करने की, उसको कार्यान्वित करने वाले कौन लोग हैं ? कार्यान्वित आदमी करेंगे। आदमियों को सच्चा, सच्चरित्र, सभ्य और सुसंस्कृत बनाने का कार्य शिक्षा विभाग का है। पढ़े लिखे लोगों का जो आंकड़ा है, जो उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा छपा है, उसमें उत्तर प्रदेश का प्रतिशत सबसे कम है, राजस्थान का 19.07 है और उत्तर प्रदेश का 21.70 है। और हिन्दुस्तान का एवरेज है 29.45 प्रतिशत यानी 30 प्रतिशत के करीब और उत्तर प्रदेश में 21 प्रतिशत हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकार कितना खर्च करती है इससे साबित होता है कि सरकार का जनता के साथ लगाव कैसा है। कितना पैसा शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करती है इसका आंकड़ा अगर पेश करूं तो तटीय प्रदेश मद्रास, बंगाल, महाराष्ट्र, में जो प्रदेश समुद्र के किनारे हैं, वहां फी आदमी 2, 3 और 4 रुपया खर्च होता है और उत्तर प्रदेश में 1 रुपया डेढ़ रुपया फी आदमी ही खर्च होता है। यहां उत्तर प्रदेश में एक हजार पर डेढ़ दो आदमी शिक्षा पाते हैं। बंगाल, मद्रास, महाराष्ट्र जो तटीय प्रदेश हैं वहां ढाई, तीन आदमी एक हजार के पीछे शिक्षा पाते हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कल एक साहब कह रहे थे कि उत्तर प्रदेश का जहां तक सवाल है आजादी की लड़ाई में, देश में जब तक आजादी की लड़ाई होती रही, उत्तर प्रदेश के बाशिन्दे उसमें सबसे आगे रहे हैं, 1857 का और 1942 के आन्दोलन इसके सबूत हैं। लेकिन शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में हमारा उत्तर प्रदेश सबसे पीछे रहा है। यह बड़ी शर्म की बात है। मैं आपके द्वारा कहना चाहता हूं कि इस सरकार से, मन्त्री जी से कि एक निश्चित योजना बनायें साक्षरता की और जो भी पैसा जिले में दिया जाय, पहाड़ी इलाकों में सबसे ज्यादा शिक्षा है, और भी जो पूर्वी जिले हैं या गरीब इलाके हैं वहां पर शिक्षा का कोई हिसाब किताब नहीं है।

श्री मुलायम सिंह यादव (जिला इटावा)---

माननीय मुख्य मन्त्री जी पहाड़ी क्षेत्र के हैं इसलिए ज्यादा है वहां पर।

श्री काशी नाथ मिश्र---

यह बात नहीं है कि कौन कहां का है। नीति आपकी इस तरह की नहीं है। प्राइवेट संस्थायें चलती रहेंगी। यह नीति किस आधार पर बननी चाहिए। जो हमारा चुनाव घोषणापत्र है उसको कल मैंने पढ़ा था, जो नीति निर्धारण सम्बन्धी हमारा पत्र है। हमारे मन्त्री जी को चाहिए कि वह देखें कि शासन में जाने से पहले हमने क्या वायदे किये हैं। चुनाव घोषणा पत्र में नीति निर्देशन के सम्बन्ध में क्या बात कही गई है। उसमें साफ कहा गया है कि माध्यमिक शिक्षा को अपने हाथ में लेंगे, शिक्षा शास्त्रियों का सम्मेलन बुलायेंगे माननीय मन्त्री जी ने पिछले एक साल में जब से यह सरकार आई है क्या शिक्षा शास्त्रियों का कोई सम्मेलन बुलाया ? वायसचांसलर्स और तमाम एजूकेशनिस्ट्स की कोई कानफरेंस बुलाई जो निर्देश करते कि शिक्षा की क्या नीति होनी चाहिए, शिक्षितों में बेरोजगारी के सवाल को हल करने के लिए कौन से नियम बनाये जायं और कौन सी पालिसी बनाई जाय। इस सम्बन्ध में कोई काम नहीं हुआ। यहां बहस भी होती है तो यह होती है कि हमारे यहां यह ग्रांट दे दी जाय, स्कूल खोल दिये जायं। इस तरह की हौचपोच पालिसी से शिक्षा की कोई तरक्की नहीं हो सकती है। नीति निर्णायक कोई निर्णय लेना चाहिए। जो आपने जनता से वायदे किये हैं उनको पूरा करने की आपकी जिम्मेदारी है। जो अधिकारी काम नहीं करते हैं उन पर अंकुश लगाइए तब काम हो सकता है वरना जैसा चल रहा है वैसा ही चलता रहेगा। इसी तरह से चलता रहेगा तो भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक को साक्षर करने में ही 100 वर्ष लग जायेंगे।

*श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)--

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय ओम प्रकाश जी ने जो कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, मैं उसके समर्थन में अपने विचार रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। सत्ता गुट के मित्रों ने इस शिक्षा के बजट को क्रांतिकारी बजट बताया है। मैं इनसे जानना चाहता हूं कि अक्रांतिकारी या प्रतिक्रियावादी बजट क्या हो सकता है? शिक्षा नीति में आमूल चूल परिवर्तन की बात कही गई थी परन्तु इन 27 वर्षों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए इस बात को कहना बेकार ही है।

आज देखिये प्राइमरी स्कूलों की इस प्रदेश में क्या दुर्दशा है। यह सरकार समाजवादी सरकार कहलाती है और समाजवाद को मान्यता के लिए जरूरी है कि वर्गवाद का खात्मा हो। ऐसी शिक्षा नीति बने जिससे बच्चे समान रूप से शिक्षा ग्रहण कर सकें। प्राइमरी स्कूलों में किसान का लड़का, मजदूर का लड़का, पेड़ के नीचे खुले में शिक्षा पा रहा है और उसके उपर एक रुपया तक खर्चा नहीं होता है और हमारे देश में प्रदेश में और एक नया वर्ग है जिसे नौकरशाही वर्ग कहते हैं उनके लड़के कन्वेंट और पब्लिक स्कूलों में पढ़ रहे हैं जिनके ऊपर 300 रुपए से लेकर 500 रुपए माहवार तक खर्च होते हैं। एक तरफ तो पेड़ के नीचे पढ़ने वाले लड़के और दूसरी तरफ एयर कन्डीशन बंगलों में पढ़ने वाले लड़के जब जीवन क्षेत्र में आते हैं यानी किसी कम्पीटीशन में आते हैं तो पेड़ के नीचे पढ़ने वाले लड़के को खेत में ही काम करने के लिए वापस जाना पड़ता है और बंगलों में पढ़ने वाले लड़के नौकरियों में आते हैं। इस तरह से वर्गवाद की खाई दिन प्रति दिन बढ़ती चली जा रही है और ऐसी सरकार अपने को समाजवादी सरकार कहलाती है।

मैंने पहले भी कहा था और आज भी कहता हूं कि अगर सरकार केवल एक काम कर दे कि शिक्षा में एकरूपता और समानता ले आये यानी बच्चों को एक सा खाना दिया जाय, एक से कपड़े पहनाये जाय और सारे कान्वेंट और पब्लिक स्कूल तोड़ें तथा शिक्षा मंदिर बनाये जायें और उसमें एक समानता और एकरूपता लाई जाय तो मैं समझूंगा कि सरकार की शिक्षा की नीति ठीक है। एक प्रदेश में प्रजा समाजवाद की सरकार बनी थी। वहां पर दोपहर में स्कूलों में सब बच्चों को भोजन मिलता था। लेकिन आज हमारे यहां शिक्षा की नीति कुछ नहीं है। मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हू। मैंने एक हरिजन लड़के की मां से पूछा कि तुमने बच्चे को पढ़ने से क्यों बिठा लिया तो उसने जवाब दिया कि मेरा बड़ा लड़का ग्यारहवीं तक पढ़कर भी जब हल चलाता है तो इसको आगे पढ़ाने से क्या लाभ है? इसको पढ़ा कर क्यों इसका जीवन बरबाद करू। वह स्कूल क्यों जाय, किस लिए जाय।

आज नौजवानों में एक आक्रोश आया हुआ है और व्यवस्था को तोड़ने की प्रवृत्ति हो गई है जिसकी रहनुमाई जयप्रकाश नारायण जी करते हैं। कल तक तो इन लड़कों को चुनाव के लिए लड़कों को दौड़ाया, तब तक तो ये लड़के उच्छृंखल नहीं थे। अगर वह कोई आज शिक्षा नीति में कदम उठाते हैं तो हम कहते हैं कि वह प्रतिक्रियावादी हैं। कल से जो सत्याग्रह चल रही है मैं बताना चाहता हू कि यह सरकार अपने वायदों से कितना पीछे जा रही है। भूतपूर्व मुख्य मन्त्री माननीय कमलापति त्रिपाठी जी ने आश्वासन दिया था कि हम कम्प्लीट ओवर टेक करेंगे माध्यमिक शिक्षा को, आज होता क्या है 80 फीसदी तो आप पैसा देते हैं 20 फीसदी तो लड़के के मां-बाप देते हैं, लेकिन मालिक बनकर बैठे हैं मैनेजर साहब, पैसा एक नहीं खर्च करेंगे, लेकिन वह मालिक बन बैठे हैं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री जनार्दन प्रसाद ओझा]

उसके बाद एक उप समिति बनी करीब-करीब 37 लोगों की समिति थी, लेकिन मान्यवर, हमारी जानकारी में 27 लोगों की कमेटी थी उसमें यह था कि हम कम्प्लीट टेक ओवर चाहते हैं। हम निगम बनायेंगे। मैनेजर अपनी जगह पर हैं। आज निगमों की जो दुर्दशा हो रही है 28 निगमों को हमने देख लिया है, एक निगम और देख लेंगे। सरकार का जो कमिटमेंट है, वह उससे बाहर जा रही है। अगर अध्यापक सरकार से आश्वासन को पूरा कराने के लिए कुछ करना चाहती है तो उनको जेल में बन्द कर देते हैं। आज अभिभावकों के सामने एक चिन्ह लगा हुआ है, सरकार के पास उसका कोई समाधान नहीं है।

मैं पूछना चाहता हूं डायरेक्टिव प्रिंसिपिल्स आफ स्टेट क्या है? जब इस देश वालों की हुकूमत कायम हुई थी तब यह कहा गया था कि 14 साल के बच्चों को फ्री एजूकेशन देंगे। तो यह सरकार अपने कमिटमेंट से, अपने वायदे से पीछे जा रही है। इनकी कोई शिक्षा नीति रह ही नहीं गई है। यह सरकार चाहती ही नहीं है कि इस प्रदेश का रहने वाला प्रबुद्ध हो, वह जागरूक हो। हाई स्कूलों में कुछ एडेड स्कूल हैं, कुछ पब्लिक स्कूल हैं, कुछ प्राइवेट स्कूल हैं, कुछ सरकारी स्कूल हैं। मैं पूछना चाहता हूं माननीय शिक्षा मन्त्री जी से, अगर इसमें एक रूपता नहीं हो पा रही है तो इससे क्या फायदा है? जो नान-एडेड स्कूल हैं उनको वह सुविधायें नहीं देते हैं, जो एडेड स्कूलों को सुविधायें दी जाती हैं। तो समान कार्य के लिए समान वेतन का सिद्धान्त आपका कहां गया? जो माध्यमिक शिक्षा सस्थायें हैं कम्प्लीट उनको टेक ओवर कीजिये, जिससे इस देश में जो छात्र हैं उनको समान रूप से आगे बढ़ने का मौका मिले। जब तक हमारी शिक्षा नीति की परख नहीं होगी, तब तक उसको आप नहीं दबा सकते हैं। उसको दबाने की, उसको शमन करने की एक ही उपाय है, वह रोजगार परक हो, बेरोजगार की समस्या न हो। अगर ऐसी शिक्षा नीति आपकी नहीं होती है, तो जो बेकारी की समस्या बढ़ती जा रही है, और भी अधिक बढ़ती जायगी और ये जो पढ़ने वाले विद्यार्थी हैं, जिनको आप फासिस्ट कहते हैं वे इस सत्ता को बदलने के लिए जो भी सम्भव तरीका हो सकता है और आदमी जब फ़स्टेटेड हो जाता है, तो दूसरे रास्ते का भी वह सहारा लेता है।

इसलिये मैं अपने माननीय शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि उनकी आस्था समाजवाद में है तो शिक्षा में इस तरह का परिवर्तन करें जिससे प्राइवेट और पब्लिक स्कूल की बात समाप्त हो और सभी बच्चों को समान अवसर उन्नति करने का मिल सके।

श्री उपाध्यक्ष---

माननीय सदस्य का समय समाप्त हो गया।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा---

उत्तर प्रदेश में जो 65 हजार अध्यापक हैं और जो बगावत के रास्ते पर हैं उनकी ओर भी सरकार को ध्यान देना चाहिये। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

*श्रीमती रामरती देवी (जिला फैजाबाद)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहती हूं कि यह बात सही है कि शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है यह भी सही है कि प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा में भी काफी सुधार हुआ है और प्रतिवर्ष नये क्षेत्रों में कहीं न कहीं शिक्षण संस्थाओं की बढ़ोत्तरी भी हो रही है। हरिजन जाति के बच्चों और गरीब वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिये यह सरकार मदद कर रही है। सरकार की सहायता से यह गरीब तबका शिक्षा की दशा मे अधिक उन्नति कर रहा है, लेकिन हरिजन वर्ग के बच्चों के हृदय में निराशा है।

---

*वक्ता ने भाषण का पूनर्वीक्षण नहीं किया।

विद्यालयों से जो योग्य बच्चे निकलते हैं उनको शिक्षण संस्थाओं में स्थान नहीं मिल पाता है । ये शिक्षण संस्थाए इन वर्गों के बच्चों की ओर ध्यान नहीं दे रही हैं । हमारी सरकार भी प्राइवेट संस्था कहकर टाल देती है । आज जहां पर हमारी सरकार चाहे वह रा य सरकार हो या केन्द्रीय सरकार हो दोनें ही शिक्षण संस्थाओं को पूरी–पूरी मदद कर रही है । उनको आर्थिक रूप में सहायता कर रही हैं । हमारी सरकार नें इस सम्बन्ध में कुछ नियम भी बनाये है । इनकें संरक्षण के लिये कोटा निर्धारित किया जा सकता है । इस प्रकार के नियम न बनने के कारण जो हरिजन लड़के है उनके अलांवा जो लड़कियां बी0 ए0 और बी0 एड0 कर लेती है उनको कहीं पर स्थान नहीं मिल पाता है । मेरा माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि वह नियम बनाकर इनको संरक्षण प्रदान करें जिससे हरिजन और कमजोर बच्चों को प्रगति करने का अवसर मिले । इससे मेरा अन्दाज है कि लगभग 5 हजार अनुसूचित जाति के बच्चों को जो योग्य और प्रतिभाशाली है आगे बढ़ने का मौका मिलेगा ।

मान्यवर, जहां तक सरकार की दूसरी शिक्षा की नीति है । वैसे तो हमारी सरकार कहने को तो कहती है कि हम समाजवादी है और यह भी है कि हमारी सरकार समाजवादी कदम उठाने के प्रयास भी कर रही है । लेकिन जहां तक यह उद्देश्य है, कि सरकार की इस दिशा में यह दोहरी नीति है । देखा यह जा रहा है कि बड़े लोगों के बच्चों के लिये प्राइवेट शिक्षा संस्थाओं में उनकी शिक्षा का प्रबन्ध दनाये रखा जाता है । दूसरी ओर जो गरीबो के बच्चे है, उनकी आज क्या हालत है । उनकी आज भी पेड़ों की छाया के नीचे और छप्परों में फटे टाटों पर बैठ कर पढ़ाई होती है आज उनके रहन सहन का दर्जा कितना गिरा हुआ है । सरकार की ओर से जो यह असमानता और भेद भाव जो बढ़ता जा रहा है, यह छात्रों के लिये उचित बात नहीं है । मैं इस दिशा में अपने माननीय शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करूंगी कि वह अपनी दोहरी नीति को शिक्षण संस्थाओं से हटा लें इस भेदभाव को हटा दें और इसे विवाद का विषय न बनायें । मैं उनसे यह भी प्रार्थना करूंगी कि बच्चों में समान शिक्षा देने की उचित व्यवस्था की जाय ताकि गरीब के बच्चे भी समान रूप से शिक्षा भी ग्रहण कर सकें और देश के अच्छे नागरिक बन सकें ।

प्राइवेट शिक्षा संस्थाओं में जो अध्यापकों की दुर्दशा हो रही है । वह भी शोचनीय है । आये दिन हड़ताल और प्रदर्शन हो रहें है । यहां तक कि अनशन की नौबत भी हमारे सामने आयी हुयी है । इस अध्यापक वर्ग की यह हालत मान्यवर, आज से नही बल्कि, मैं समझती हूं कि लगभग दो तीन वर्ष से बड़े जोर शोर से चल रही है । उनका अपना उद्देश्य है । आज हमारे सम्मानित अध्यापक प्राइवेट शिक्षण संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों की गुलामी से, उनके अपमान से दूर रह कर एक सम्मानित जीवन बिताना चाहती हैं लेकिन आये दिन देखने में आ रहा है कि अधिकतर प्राइवेट शिक्षण संस्थाएं किसी न किसी दल से संबंधित होती है और नतीजा क्या होता है कि ये जिस दल की संस्थाये होती है, उस दल के प्रबन्धक अपने अध्यापकों के ऊपर और अध्यापक छात्रो के ऊपर दबाव डालते है । इस तरह अपने हक को बनाये रखने के लिये इस तरह के कदम उठाते है । परिणाम क्या होता है ? आये दिन यह देखा जा रहा है कि ऐसी शिक्षण संस्थाओं में मार पीट और दंगे फसाद हुआ करते है और आज तो इनका इतना प्रबल रूप हो गया है कि सरकार के सामने बहुत कठिनाई हो गयी है । आज जब कि अध्यापकों और छात्रों का जीवन इतना संकट मय बना हुआ है ऐसी स्थित में शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करूगी कि विद्यालयों को कम से कम ऐसे विवादों से ऊपर उठावें और हमारे अध्यापक भी आज यह मांग कर रहें है कि आगे बढ़ कर वे भी शिक्षकों की तरह सम्मानित जीवन बिता सकें अतः उनकी मांग पर मैं मंत्री जी से निवेदन करूगी कि शिक्षा का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये ।

जहां तक कि महिलाओं की शिक्षा का प्रश्न है कि सरकार ने उनकी सुविधा के लिये काफी कदम बढ़ाये है । सरकार के इस कदम के लिये हम महिलायें बड़ी आभारी है। आज शिक्षा में हमारी लड़कियां काफी आगे बढ़ती जा रही हैं । उनके लिये मेरा अपना एक सुझाव है कि

[श्रीमती रामरती देवी]

हमारे मंत्री जो हर एक जिले में कम से कम शिक्षा के क्षेत्र में एक डिग्री कालेज अवश्य खुलवा द । इस समय उनकी जो संख्या बढ़ती जा रही है यदि अलग से लड़कियों के लिये एक डिग्री कालेज हो जायगा तो उनको पढ़ने में बड़ी सुविधा मिलेगी ।

इन शब्दों के साथ मैं प्रस्तुत अनुदान का समर्थन करती हूं और विपक्ष की ओर से जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है, उसका विरोध करती हूं ।

श्री रामप्रकाश यादव (जिला मथुरा)--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया. . .

(कुछ सदस्यों के खड़े रहने पर)

श्री उपाध्यक्ष--

माननीय सदस्य बैठने की कृपा करें ।

श्री रामप्रकाश यादव---

मान्यवर, हमारे प्रदेश के आर्थिक पिछड़ेपन का एक मूल कारण यह भी है कि हम शिक्षा जगत में पिछड़े हुये हैं और दुनियां का कोई भी ऐसा देश नहीं है जिसने शिक्षा जगत में पिछड़े रहते हुये आर्थिक क्षेत्र में उन्नति की हो।

मान्यवर, सबसे पहले मैं बेसिक शिक्षा पर आता हूं । यहां की बेसिक शिक्षा इतनी त्रुटिपूर्ण है कि यहां कोई व्यक्ति प्रायमरी स्कूलों में अपने मन से अपने बच्चों को भेजना नहीं चाहता है और यही कारण है कि सिर्फ गरीब व्यक्तियों के बच्चे उन प्रायमरी स्कूलों में पढ़ते हैं और अमीरों के लड़के नरसरी या अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं और जब वह बाहर आते हैं तब उनमें वही फर्क रहता है कि किसान बच्चा खेती की तरफ और बड़े-बड़े आदमियों के लड़के अपने जीवन में ऊंची-ऊंची नौकरियां प्राप्त करते हैं । यह सब साज-सज्जा और अध्यापकों के वेतन का ही कसूर नहीं है । प्राइमरी स्कूलों में आप देखते हैं कि टाट पट्टी तक लड़कों को नहीं मिलती है । क्योंकि इसका प्रबन्ध पहले जिला परिषद् किया करती थीं, अब बेसिक शिक्षा परिषद् किया करती है और इसका मेंटीनेंस अब भी जिला परिषद करती है । इस तरह से इतना वहां व्यवधान शुरू हो गया है कि जिला परिषद् उनके लिये कुछ करना नहीं चाहती और बहुत से स्कूलों में एक भी लड़का/लड़की पढ़ने नहीं आता है परन्तु अध्यापकों को तनख्वाहें दी जाती हैं और इन सब में बेसिक शिक्षा अधिकारी का हाथ रहता है । बड़ी आशा हुई थी कि जब जिला परिषद के स्थान पर शिक्षा-परिषद् बनी थी तो बहुत परिवर्तन होगा, लेकिन देखने में आया है कि कोई खास परिवर्तन नहीं हुये हैं । अतः शिक्षा को उत्पादक बनाने हेतु विद्यालयों के पाठ्यक्रम में आमूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है समाज की आर्थिक स्थिति को देखते हुये मैं माननीय मंत्री जी को यह सुझाव देना चाहता हूं कि हमारी शिक्षा ऐसी हो जिसका पाठ्यक्रम 2/3 रचनात्मक और 1/3 बौद्धिक शिक्षा के लिये हो और इसके लिये यह बहुत आवश्यक है कि जो प्राइमरी विद्यालयों में हाई स्कूल या 8वीं पास मास्टर हैं उनसे यह सुधार होने की आशा नहीं है । उनको इतनी कम तनख्वाह मिलती है कि वह घर के पास ही रखे जाते हैं । मेरा सुझाव इसके लिये यह है कि उनकी तनख्वाह जरूर बढ़ा दी जाय और उनको घर से दूर रखा जाय । क्योंकि जब वे स्कूल में जाते हैं तो घर का काम करके, बहुत से किसानों के लड़के होते हैं वह रात को खेत जोतकर जाते हैं और विद्यालयों में जाकर ऊंघते हैं और सोते हैं । तो कम से कम 10–12 मील पर उनको रखा जाय, परन्तु उनका वेतन जरूर बढ़ा दिया जाय ।

अब मैं माध्यमिक शिक्षा पर आता हूं । आपने यह अनुभव किया होगा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद किसी भी चीज का अभाव नहीं होना चाहिये चाहे वह शारीरिक हो, मानसिक हो, अध्यात्मिक हो या आर्थिक हो । परन्तु यह देखा गया है कि उच्च श्रेणी में पास विद्यार्थी

चाहे उन्होंने एम 0एस, सी 0 किया हो, एम 0बी 0बी 0एस 0 किया हो या ला की डिग्री या इंजीनियरिंग की डिग्री ली है, लेकिन डिग्रियों को लेकर वे ऐसे नैराश्य जीवन में जाते हैं और 18–20 साल यूनिवर्सिटी या कालेज में गुजारने के बाद भी उनके लिये एक अंधेरा रहता है। अपनी नौकरी के लिये, अपने जीवन-यापन के लिये सब जगह हाथ फैलाते रहते हैं। जब तक शिक्षा में आमूल परिवर्तन नहीं होगा, जब तक इसमें सुधार की आवश्यकता है।

मान्यवर, अध्यापकों की बहुत सी बातें सही हैं। उनका यह कहना कि प्रबन्धकों ने शिक्षा संस्थाओं को एक व्यापार बना लिया है, कुछ हद तक सही है। मै बता दूं, मेरे ही क्षेत्र का सादाबाद इंटर कलेज है। वहां के प्रबन्धक शासक पार्टी के हैं। वहां इतनी अनियमितायें हैं कि वहां के जिला विद्यालय निरीक्षक ने प्रशासक नियुक्त होने के लिये कुछ दिन पूर्व लिखा था, लेकिन वह फाइल अब जिला विद्यालय निरीक्षक के दफ्तर से गायब है। मैंने एक प्रश्न किया था तो जवाब में मंत्री जी का उत्तर आया कि "पूर्ण विवरण प्राप्त नहीं हुआ है।" एक जरा सा प्रश्न दो महीने पहले दिया गया था कि अनियमितताये वहां क्या क्या हैं–यह सिर्फ मालूम करने के लिये और जवाब यह आया कि अभी पूरा विवरण प्राप्त नहीं हुआ है, तो यह बड़े अफसोस की बात है।

इसी तरह से एक भरतपुर बझेड़ा, अलीगढ़, में गांधी स्मारक विद्यालय है, जिसके प्रबन्धक भी शासकीय दल के हैं। ऐसा सुना जाता है कि उन्होंने 28 विद्यालय खोल रखे हैं। उनके उस विद्यालय में मेरे क्षेत्र का एक लेक्चरर है जिसको 7 हजार रुपया लेकर रखा गया। उससे कहा गया कि 3 हजार अभी दे दो और 4 हजार प्रोबेशन पीरियड समाप्ति पर देना पड़ेगा। उसने 3 हजार तो दे दिये, बाद में 4 हजार नहीं दिये। परिणाम यह है कि जिला विद्यालय निरीक्षक ने काम करने के लिये उसे लिखा है लेकिन वे प्रबन्धक उसको कार्य-भार नहीं सौप रहे हैं। मैने माननीय मुख्य मंत्री और शिक्षा मंत्री को लिखा है, लेकिन उनकी तरफ से आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी। इसी तरह का उन्होंने अलीगढ़ में एग्रिकल्चर डिप्लोमा का कालेज भी खोल रखा है जिसमें प्रति छात्र 3 हजार रुपया दाखले के लिये लिये जाते हैं। तो यह व्यापार बना रखा है। परन्तु यह मैं मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि कुछ प्रबन्धक अच्छे नहीं हैं। कुछ अच्छे हैं। एक बात और बता दूं। उसी क्षेत्र में सादाबाद इन्टर कालेज का एक अध्यापक निलम्बित है। कल माननीय मत्री जी का वक्तव्य था कि 60 दिन से अधिक किसी अध्यापक को निलम्बित नहीं रखा जा सकता है लेकिन वह 1970 से निलम्बित है। न तो उसे टरमीनेट ही किया गया जिससे कोर्ट में जा सके और न रिइन्स्टेट किया गया है। तो मैं प्रार्थना करूगा कि इसकी तरफ विशेष ध्यान दिया जाय कि इतने दिन निलम्बित होने के बाद भी उसके लिये कुछ नहीं किया गया है।

मैं पार्श्यल राष्ट्रीकरण का समर्थन अवश्य करता हूं क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र जब तक दोनों नहीं होंगे तब तक शिक्षा जगत में कोई न्याय एवं उन्नति नहीं हो सकती है। इसके लिये अध्यापक और अध्येताओं को संतुष्ट करना होगा और उनके लिये योजना तैयार करनी होगी।

मान्यवर, परीक्षा का राष्ट्रीयकरण भी एक मूल है और इन्टरमीडिएट बोर्ड जो है एक तरह का कारखाना है जो कि भ्रष्टाचार को बढ़ाता है। वह कुछ लोगों को नौकरी देता है, इसके सिवा कुछ नहीं कर सकता। मैं यह कहता हूं कि जब एक विद्यालय 9वीं कक्षा और 11वीं कक्षा की परीक्षायें ले सकते है तो वह 10वीं और 12वीं की क्यों नहीं ले सकते हैं? यह कैसी डिमाक्रेसी है? जिस तरह से अन्य देशों में टेस्ट के एक आधार पर प्रवेश होता है यहां भी ऐसा ही किया जाय और हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट परीक्षाओं को समाप्त किया जाय।

[श्री राम प्रकाश यादव]

इसी तरह से पुस्तकों के पाठ्य-क्रम के राष्ट्रीयकरण की बात है। खुली प्रतियोगिता रहती तो अच्छी किताबे आतीं हैं और अच्छे लेखक मिलेंगे। हमारे उत्तर प्रदेश में 67 प्रकाशक हैं और उनके पास 50–60 लाख रुपये की किताबें हैं जो कि फिजूल ही रद्दी की टोकरी में ली जायेगी। अन्त में शाहाबाद में एक लड़कियों का विद्यालय तथा एक डिग्री कालेज खोलने की मांग माननीय मंत्री जी से करता हूं। इतना कहकर ओम-प्रकाश जी ने जो कटौती का प्रस्ताव रखा है, उसका मै समर्थन करता हूं।

श्री जयराज गौतम (जिला सुल्तानपुर)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका अनुग्रहीत हूं कि आपने मुझे समय दिया। मैं माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने जो बजट इस सदन में पेश किया है उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं अगर हम देखें तो मजबूती के साथ यह कह सकते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से शिक्षा के प्रसार के लिये इस देश और प्रदेश में बहुत कुछ हुआ है। सन् 46 में आजादी से पूर्व इस प्रदेश में 5 विश्वविद्यालय और 12 डिग्री कालेजेज थे जबकि आज उनकी संख्या 19 विश्वविद्यालय और डिग्री कालजों की संख्या तो बहुत अधिक हो गयी है। यह सही है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारी शिक्षा में जो बहुत पिछड़ी हुई थी क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिये विशेष कदम उठाये है। स्वतंत्रता के पूर्व सन् 46–47 में केवल 3.18 करोड़ रुपये का बजट था जो सम्पूर्ण बजट का लगभग 11 प्रतिशत था लेकिन जो वर्तमान बजट शिक्षा का है वह लगभग 206.19 करोड़ का है। इस तरह से स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के प्रसार में लगभग 65 गुना बढ़ोत्तरी हुई है। 206 करोड़ की जो प्रस्तावित धनराशि वर्तमान सरकार ने रखी है उसमें विशेष रूप से प्राइमरी एजूकेशन के लिये 53 प्रतिशत, माध्यमिक शिक्षा के लिये 24 प्रतिशत और उच्च शिक्षा के लिये 6 प्रतिशत और अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों के लिये 3 प्रतिशत का खर्च निर्धारित किया है।

शिक्षा हम उसको कह सकते हैं जिसमें मुख्य रूप से तीन बातें अवश्य हों। पहली, शिक्षा जो बालकों के मन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करें। दूसरे, जो गरीब छात्रों से प्रेम करना सिखाये और तीसरे, जो श्रम श्रद्धा पैदा करें। जैसा कि अभी माननीय काशीनाथ जी मिश्र ने भी कहा सरस्वती शिशु मंदिरों में जो शिक्षा व्यवस्था है उनमें गरीबों के बच्चे न तो पढ़ सकते हैं और गरीब छात्रों के प्रति प्रेम तथा श्रम के प्रति श्रद्धा तो कोसों दूर है। मेरा शिक्षा मंत्री जी से अनुरोध है कि शिक्षा में आमूल परिवर्तन लाने के लिये और इन तीनों दोषों को दूर करने के लिये निश्चित रूप से क्रांतिकारी कदम उठायें।

दूसरे, शिक्षा प्रसार के लिये वर्तमान सरकार ने काफी मजबूत कदम उठाये हैं। 1975–76 में 2,376 नये जूनियर बेसिक स्कूल और 176 सीनियर बेसिक स्कूल तथा 176 अनुवर्ती कक्षायें खोलने की व्यवस्था सरकार ने की है। साथ ही 11 से 14 वर्ष के ऐसे छात्रों को जिन्होंने शिक्षा नहीं प्राप्त की है या जिन्होंने किसी वजह से बीच में ही शिक्षा प्राप्त करना छोड़ दिया था उन्हें पुनः शिक्षित करने का कदम सरकार ने उठाया है।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि शिक्षा का संतुलित विकास होना चाहिये। सुल्तानपुर जिले में केवल 28.66 प्रतिशत आदमी तथा 6.72 प्रतिशत स्त्रियां ही शिक्षित हैं। इसलिये मैं चाहूंगा कि शिक्षा के क्षेत्र में जो जिले काफी पिछड़े हुए हैं उनकी ओर माननीय शिक्षा मंत्री अवश्य ध्यान दें।

जैसा कि माननीय काशीनाथ मिश्र जी ने कहा है कि आज प्रदेश में बहुत सी ऐसी प्राइवेट शिक्षा संस्थायें चल रही हैं जो खाने कमाने वाली हैं। वे सरकार से अनुदान लेती हैं और उनका उद्देश्य पैसा पैदा करना मात्र है। प्राइवेट स्कूलों में हरिजन छात्रों के लिये जो छात्रवृत्ति आदि दी जाती है, उसका पैसा भी वहां के मैनेजर तथा प्रबन्ध समिति के लोग आ जाते हैं। सरकार अगर देश में समाजवादी समाज की रचना करना चाहती

है तो शिक्षा का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये । आज सरस्वती शिशु मंदिर तथा मान्टेसरी स्कूलों में गरीब आदमी के बच्चे तो पढ़ ही नहीं पाते । उनमें बड़े-बड़े आदमियों के बच्चे ही शिक्षा पाते हैं । अतः इस तरह की जो अव्यवस्था है शिक्षा में, उसे दूर होना चाहिये शिक्षा में समान नीति होनी चाहिये । माननीय शिक्षा मंत्री जो नौजवान हैं, डिग्री कालिज के प्रधानाचार्य भी रह चुके हैं मुझे उनसे पूरी आशायें हैं कि वे वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करेंगे। इस दोहरी शिक्षा नीति को भी खत्म करेंगे।

पहले हरिजन तथा अनुसूचित जाति के छात्रों को जिनको छात्रवृत्ति दी जाती थी, यदि वे फेल हो जाते थे तो उनसे फीस नहीं ली जाती थी, अब उनसे शुल्क लिया जाता ह, यह बन्द होना चाहिये । अनुसूचित जाति के दो ढाई-सौ रुपये मासिक पाने वाले लोगों के बच्चों को उच्च शिक्षा हासिल करने के लिये अधिक सुविधायें मिलना चाहिये । उनको उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इस समय फीस देनी पड़ती है, वह बन्द होना चाहिये । उनकी आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर होती है कि वे फीस आदि नहीं दे सकते हैं । गत वर्ष के बजट में माननीय मुख्य मंत्री जी ने घोषणा की थी कि हरिजन तथा अनुसूचित जाति के छात्रों के लिये उनको दी जाने वाली छात्रवृत्ति में 2.50 करोड़ की बढ़ोत्तरी की जायेगी । लेकिन वह दशमोत्तर कक्षाओं वाले छात्रों के लिये थी, यह व्यवस्था कक्षा 6 से लागू करनी चाहिये । आर्थिक संकट के कारण जो ऐसे विद्यार्थी शिक्षा नहीं पा सकते हैं उनकी ओर मंत्री जी को अवश्य ध्यान देना चाहिये । यह समाजवादी समाज की स्थापना की ओर एक बढ़ता हुआ कदम होगा और गरीब लोग भी अपने बच्चों को पढ़ा सकेंगे । मैं चाहूंगा मंत्री जी इस ओर ध्यान दें ।

एक दूसरी बात मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से अपने जिले के बारे में कहना चाहता हूं । मान्यवर, हम लोगों ने अपने बेसिक शिक्षा अधिकारी से पूछा तो पता लगा कि हर स्कूलों को टाट पट्टी, कुर्सी मेज दे दिया गया है लेकिन जब हम ने कादीपुर में जाकर देखा और पूरे जिले में देखा तो मालूम हुआ कि टाट पट्टी के नाम पर कुछ भी नहीं दिया गया है । अगर ऐसी बात है कि यहां से अनुदान गया है, रुपया गया है और टाट पट्टी के लिये गया है तो कम से कम माननीय शिक्षा मंत्री जी इस पर गौर करें कि अगर सरकार से टाट पट्टी के लिये पैसा गया है और वह पैसा खर्च हुआ है तब तो ठीक है और अगर खर्च नहीं हुआ है तो संबंधित अधिकारी व कर्मचारी के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही कीजिये । इन शब्दों के साथ मैं शिक्षा मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत बजट का जोरदार समर्थन करता हूं और जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है उसका जोरदार विरोध करता हूं ।

बाबा रामनाथ (जिला मैनपुरी)--

मान्यवर, आपके माध्यम से मैं उत्तर प्रदेश की सरकार के जो शिक्षा मंत्री जी हैं, उनके सामने कुछ सुझाव देता हूं । अव्वल नम्बर तो उत्तर प्रदेश सरकार की वही हालत है कि "भैंस के सामने बीन बजाना"। उत्तर प्रदेश में आज शिक्षा की हालत क्या है ? समूचे हिन्दुस्तान के अनुपात से अगर बजट की रकम को जो शिक्षा के ऊपर खर्च की जाती है, उसमें उत्तर प्रदेश की रकम को देखा जाय तो इतने बड़े प्रांत के लिये, केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु की रकम को देखा जाय तो उससे थोड़ा ही नहीं बल्कि लाखों करोड़ों रुपये का कम बजट रखा जाता है शिक्षा के ऊपर । उत्तर प्रदेश में शिक्षा की हालत क्या है ? समूचे हिन्दुस्तान में करीब 37 करोड़ आदमी बिना पढ़े लिखे हैं और हमारे यहां 7 करोड़ 20 लाख लोग ऐसी स्थिति में हैं लेकिन शिक्षा मंत्री जी को कोई जूं नहीं रेंगती ।

वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[बाबा राम नाथ]

सबसे दुख की बात यह है कि सरकार टेक्निकल एजूकेशन की बात बहुत करती है कि हम उत्तर प्रदेश के अन्दर टेक्निकल इंस्टीट्यूशंश खोलेंगे जहां विद्यार्थियों को शिक्षा दी जायेगी लेकिन मैं आपको बतलाऊं कि जहां 74-75 के बजट में 65 लाख रुपया रखा गया था वहां अबकी साल के बजट में 62 लाख रुपया रखा गया है और इस तरह से 3 लाख रुपये की कटौती उन बच्चों के साथ की गयी है जो बच्चे किसी प्रकारसे लोन ले लिया करते थे और उस स्थिति में अपने को एडजस्टमेंट करके टेक्निकल शिक्षा प्राप्त कर लिया करते थे। पता नहीं यह समाजवादी सरकार किस दिशा के अन्दर जा रही है, कौन सी शिक्षा देने जा रही है ? अभी केंद्रीय सरकार के मंत्री श्री नूरुल हसन ने 8-6-74 को भाषण करते हुए कहा था कि एक्जामिनेशन सिस्टम में परिवर्तन आवश्यक है वरना पूरी शिक्षा ही कुलैप्स हो जायेगी। मैं शिक्षा मंत्री जी को बतलाना चाहता हूं कि अभी तक आई0ए0एस0 और आई0पी0एस0 की जो कम्पिटिटिव परीक्षा होती थी उसमें उत्तर प्रदेश सदैव अग्रगण रहता था लेकिन आज हमारा उत्तर प्रदेश समूचे देश के अन्दर कम्पिटिशन परीक्षाओं में लोएस्ट नंबर पर है। इसके लिये आज की शिक्षा प्रणाली ही जिम्मेदार है। इसको खतम करने पर ही उत्तर प्रदेश की शिक्षा में सुधार हो सकता है। एक्जामिनेशन सिस्टम में सुधार होने के साथ-साथ, शिक्षा के स्तर को नीचा गिराने में सिनेमा का भी बहुत बड़ा हाथ है।

सिनेमा का शिक्षा के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ रहा है। जब तक शिक्षा का बेसिस सिनेमा बना रहेगा, यहां शिक्षा में सुधार होना मुश्किल है। यूनिवर्सिटी एजूकेशन तो एक तरह से बरबाद होता जा रही है। यह हिन्दुस्तान की सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करके रख दे।। इसकी वजह से हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति बिलकुल नेस्तनाबूद होती जा रही है एक दिन की बात है कि मुझे एक बुड्ढा मिल गया जिसने पूछने पर बतलाया कि क्या करूं मैंने तो अपने लड़के को दूध पीने के लिये भैंस पाल रखी है, वह खूब दूध पीता है और फिर भी वह "मेरा तन डोले मेरा मन डोले" और न मालूम क्या-क्या गाना गाता है। भैंस का दूध खाने पर भी उसका तन डोल रहा है। वह कहने लगा कि मैंने अपने लड़के से कहा कि इतना दूध साले पी जाते हो यह कहां जाता है। फिर उसने मुझ से कहा कि यह सिनेमा जो है हमारी प्राथमिक शिक्षा पर बड़ा असर डाल रहा है। मेरा तो कहना है कि आज जो कालेजों और यूनीवर्सिटीज में यह गुंडागर्दी हो रही है उसके लिये मुख्यतः यह सिनेमा जिम्मेदार है। सिनेमा जो पूंजीपतियों के विलास की एक वस्तु बन चुका है, मैं समझता हूं कि इस पर आपको नियंत्रण करना पड़ेगा, मौलिक तरीके से इस पर आपको नियंत्रण करना चाहिये।

शिक्षा में सुधार कैसे हो इस पर मैं तीन बातें कहना चाहता हूं जिस पर आप ध्यान दें। पहली तो यह कि हमारी शिक्षा कृषि ओरियेंटेड हो। जिससे हमारे प्राइमरी से लेकर यूनीवर्सिटीज तक विद्यार्थी इसके महत्व को जान सकें। दूसरे ऐसे बच्चे जो छोटे छोटे उद्योगधंधों के बारे में सीखना चाहते हैं, उनको यह सुविधा मिलनी चाहिये। यानी कि शिक्षा क्राफ्ट ओरियेंटेड होनी चाहिये। तीसरी बात यह है कि शिक्षा में श्रम के महत्व पर भी ध्यान देना चाहिये। देखने में यह आता है कि प्राइमरी से लेकर यूनीवर्सिटी स्तर तक के बच्चे श्रम का महत्व नहीं समझते हैं और सोचते हैं कि श्रम हमारे लिये खतरनाक है। मैं समझता हूं कि हमारी शिक्षा में कृषि, उद्योग धंधों के साथ-साथ श्रम का बड़ा महत्व है। श्रम के बारे में चाहे पूंजीवादी देश जापान या अमरीका हो या समाजवादी देश रूस या चायना हो, वहां पर प्राइमरी से लेकर यूनीवर्सिटी तक श्रम का महत्व समझाया जाता है। वहां के विद्यार्थी जितने दिन छुट्टी पर रहते हैं उतने दिन वह अपनी छुट्टियां श्रम के साथ व्यतीत करते हैं। परन्तु हमारे यहां के विद्यार्थी चाहे वह प्राइमरी स्तर के हों या यनीवर्सिटी के छुट्टियों में या तो सिनेमा देखेंगे या फिर लफंगेबाजी करेंगे। मेरा तो कहना कि यह जो 15-15, 20-20 दिन की छुट्टियां होती है उनमें कृषि के विद्यार्थियों को गांवों

म ले जाना चाहिये और जो उद्योग या क्राफ्ट के विद्यार्थी हैं इनको बड़े-बड़े शहरों में जो उद्योगधंधे हैं उनमें ले जाना चाहिये जिससे वह अनुभव प्राप्त कर सकें और अपनी छुट्टियों का लाभ उठा सकें । मैं समझता हूं कि जिस तरह की शिक्षा आज दी जा रही है वह किसी से छिपी नहीं है । इसी शिक्षा की वजह से हमारा उत्तर प्रदेश बरबाद हो रहा है । मैंने पिछली बार भी ये सुझाव दिये थे । आप मौलिक तरीके से प्राथमिकता शिक्षा पर ध्यान दें जो 9 करोड़ की आबादी में पढ़े लिखे नहीं है उनको लिटरेट बनाने की कोशिश करिये । इसके लिये जरूरी है कि प्रौढ़ पाठशालायें और गांव-गांव में स्कूल खोले जायं । क्योंकि जो हमारे छोटे मोटे उद्योग धंधे है जैसे मुरगी पालन आदि इसके लिये किसानों को कुछ पढ़ा लिखा होना जरूरी है वरना यह किसानों की समझ में नहीं आयेंगे । इसलिये यह जरूरी है कि प्राथमिक शिक्षा पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दिया जाय और जल्दी से जल्दी उत्तर प्रदेश के जो लोग अशिक्षित हैं उनको शिक्षित बनाया जाय । हमारा यह नजरिया होना चाहिये कि इतने समय के बाद हमारे यहां गैर पढ़े लिखे लोग नहीं रहेंगे । अगर हम चाहते हैं कि हमारे प्रदेश के पिछड़े हुए क्षेत्रों का विकास हो तो आपको इस तरफ ध्यान देना होगा ।

दूसरी चीज टेक्निकल एजूकेशन की है । यह जो हमारी किताब छपी है इसको देखें, कहीं पर समानान्तर तरीके से, समानता के हिसाब से विकास नहीं हुआ है । जो बड़े-बड़े टेक्निकल कालेज हैं, वह बड़े-बड़े शहरों में हैं । छोटे-छोटे जिलों की लिस्ट में नहीं रखा गया है । 36 जिले जो पिछड़े हुए हैं उनमें कहीं भी बड़े कालेज या टेक्निकल इन्स्टीट्यूशन जो काबिले तारीफ हों, नहीं है । ऐसी स्थिति में मैं समझता हूं कि वेल साइडेड डेवलपमेंट के लिये समानान्तर विकास होना चाहिये तथा पिछड़े हुए जिलों में भी इस तरफ ध्यान देना चाहिये । हमारे प्रदेश में टेक्निकल एजूकेशन की कुल 53 संस्थायें हैं । अगर आप चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी पढ़ने के बाद कारखानों में जायं और अपने उद्योग लगायें तो अपने प्रदेश में और टेक्निकल कालेज, पालीटेक्निक पढ़ाइये । जिससे हमारे विद्यार्थी इनसे निकलने के बाद किसी उद्योग धंधे में जायं और गुंडई और बदमाशी न करें । आपको इस तरफ ध्यान देना होगा, मैंने तीन सुझाव दिये हैं कि शिक्षा को कृषि ओरियेंटेड, क्राफ्ट ओरियेंटेड बनाने के साथ-साथ श्रम को भी महत्व दिया जाय । हमारे प्रदेश के अन्दर विद्यार्थियों में जो इंडिस्पिलिन बढ़ता जा रहा है जो अनुशासन हीनता आ गयी है वह तब तक नहीं जायगी जब तक कि श्रम के महत्व को नहीं समझा जायगा और जैसे मैंने कहा वैसे नहीं चला जायगा ।

*श्री विद्याधर (जिला इलाहाबाद)--

उपाध्यक्ष जी, शिक्षा विभाग का 1975-76 का बजट जो शिक्षा मंत्री जी द्वारा पेश किया गया 189 करोड़ 63 लाख रुपये का है वह समूचे बजट का 26.3 प्रतिशत होता है । जिस स्थान से मैं बोल रहा हूं मुझसे आशा की जाती है कि मैं प्रस्तुत बजट के समर्थन में बात कहूंगा । बात सही है मैं समर्थन में अवश्य खड़ा हुआ हूं लेकिन खेद है और कभी-कभी संशय भी इसके लिये मुझे होता है । कल मैंने शिक्षा मंत्री का व्याख्यान बड़े ध्यान से सुना और उसके बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि वे वास्तविकता से भागना चाहते हैं । मुझे ऐसा लगा कि खाना पूरी करके वे अपने आसन पर आ जाना चाहते हैं । इस दृष्टि से मैं देखता हूं तो हमारा बजट ऐसा लगता है कि उसमें कोई क्रांतिकारी परिवर्तन की आशा नहीं है ।

उपाध्यक्ष जी, आजादी मिलने के पहले और आजादी मिली तब से आजतक हमारा नेतृत्व बारम्बार कहता चला आ रहा है कि शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन होना चाहिये ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री विद्याधर]

इस तरह से बोलने की हमें मुहब्बत हो गयी है । वह आमूल चूल परिवर्तन कैसे और कब होगा इसका हमेशा प्रश्नावाचक चिन्ह बना हुआ है ? आज देखते है कि सारी दुनिया समाजवादी बनने की ओर उन्मुख है और समाजवाद धरती पर रहेगा और हम भी उसका लक्ष्य बनाये हैं । इसमें जब देखते है तो ऐसा हम पाते हैं कि एक ओर गड्ढे में हम बंध-कर रह गये हैं । हमारा दृष्टिकोण ऐसा होना चाहिये कि एक नये समाज की रचना हो लेकिन इस सम्बन्ध में हम खासतौर से, शिक्षा का कोई दर्शन नहीं दे पाते है । आज के युग में मांग है और हम देखते हैं कि शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन तभी आ सकता है जब हम शिक्षा को रोजी-रोटी और उत्पादन से जोड़ दें । यदि ऐसा नहीं होता है तो शिक्षा समाज-वादी रचना में उचित माध्यम नहीं बन पायेगी । इसलिये मैं समझता हूं कि हमारा प्रोजेक्ट बिल्कुल निकम्मा है और ऊंच-नीच तथा छोटे बड़े का सवाल पैदा हो जाता है जो कि निकम्मी बात है ।

हमें याद आता है कि महात्मा गांधी जिस समय विलायती शिक्षा प्राप्त करने के बाद हिन्दुस्तान लौटे तो वे यहां के दकियानूसी वातावरण तथाभ्रष्ट समाज से दूर उस बर्ग के बीच जा बसे जो मेहनतकश लोग थे । उन लोगों को मेहनत करने के बाद भी अपने पूरे अधिकार नहीं थे और उनको अछूत कहा जाता था । उन लोगों में महात्मा गांधी जी बसे और मैला ढोने का काम करने लगे । उस समय हमें बड़ी चोट पहुंची । जो वर्ग समझता था कि शासन करने का अधिकार हमारा ही है । दूसरी ओर मोहम्मद अली जिन्ना साहब गांधी जी से यह कहा करते थे कि हम पढ़े-लिखे लोगों का दर्जा गिरा रहे हैं लेकिन गांधी जी के गले के नीचे यह बात नहीं उतरती थी । जितना अधिक विरोध में उनसे कहा गया उतना अधिक उन्होंने काम किया । गांधी जी ने शरीर श्रम को बेसिक शिक्षा के साथ जोड़ा लेकिन उनका प्रयोग एक मात्र प्रयोग होकर रह गया और उनके प्रथम शिष्य विनोबा जी, जिनकी रटना है कि शिक्षा पद्धति चीन की पद्धिति की तरह होनी चाहिये, कहते हैं । अब सवाल यह पैदा होता है कि चीन किस पैटर्न पर शिक्षा चला रहा है, उनकी शिक्षा कैसी है । 80 करोड़ इंसानों का वह मुल्क है और उनके नेता ने शरीर श्रम और बौद्धिक श्रम की खाई को जो एक जमाने से दकियानूसी ढंग से चली आ रही थी, उसको पाट दिया है । बड़े-बड़े आई0ए0एस0 आफीसर और पी0सी0एस0 आफीसर को वहां के नेताओं ने खुदाई और ढुलाई का काम करने के लिये विवश किया और उनसे मजदूरों का काम लिया । हमारे सामने यह बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि शिक्षा संस्थाओं में जो अध्यापक और विद्यार्थी पढ़-लिख कर निकलते हैं वह कुनबापरस्ती का शिकार होते हैं । वह जाति, मजहब में सिमटे हुए होते हैं ।

हम यह भी देखते है कि आज का मंत्रिमंडल भी कुछ ऐसा है । जो उसमें लोग लिये गये हैं वह क्षेत्र, जाति, को ध्यान में रखकर लिये गये हैं । जब हमारा नेतृत्व ऐसा करता है तो हम किससे उम्मीद करें कि शिक्षा के संबंध में उन्नति हो सकेगी । दूसरी ओर, इतना ही नहीं, हमें दुख है कि हमारे नेता यह कहते हैं कि शिक्षा और राजनीति में कोई मेल नहीं होना चाहिये-मानों राजनीति किसी और दुनिया की है और शिक्षा किसी और दुनिया की । लेकिन मेरा दृढ़ मत यह है कि शिक्षा और राजनीति में गहरा संबंध है । राजनीति कोई कोठी वालों की नहीं है, यह विचार दकियानूसी है । राजनीति का सीधा-साधा मतलब यह है कि हम खाना, कपड़ा और रहने की जगह का इंतजाम करायें । मैं समझता हूं कि इससे कोई बंचित नहीं है और जो कहते हैं कि विद्यार्थियों को राजनीति में हिस्सा नहीं लेना चाहिये, तो दुसे दुख के साथ कहना पड़ता है कि वह सामन्तवादी संस्कृति की बात करते है कि अमुक काम किसी का है और अमुक काम किसी और का । यह सब हमारे निकम्मेपन का द्योतक है । अगर बजट का सारा पैसा आप शिक्षा पर लगा दें तब भी कोई परिवर्तन

होने वाला नहीं है । आज दुनिया में हम देखते हैं कि नौकरशाही और सामन्तशाही का वातावरण हमें विरासत में मिला है, तो दुख होता है.....

एक सदस्य--

स्थिति गम्भीर है, माननीय मंत्री जी की परीक्षा करायें ।

श्री उपाध्यक्ष--

उनको बोलने दें, विघ्न न डालें ।

श्री विद्याधर--

हमें तकलीफ होती है यह देखकर कि आज के विद्यालय बेरोजगार पैदा कर रहे हैं । और इसी को ख्याल में रखकर बंगाल में विद्यार्थियों ने आन्दोलन छेड़ा था । अच्छे-अच्छे टापर लड़के-लड़कियां बम बनाने लगे । यह बात नहीं कि उन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिल सकती थी, बल्कि इसलिये कि वह सामाजिक स्ट्रक्चर को बदलना चाहते थे और उसके लिये उन्होंने बीड़ा उठाया । शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की बात कही थी कि होना चाहिये, लेकिन इस बीच में अगर विरोधियों ने झटका न दिया होता तो पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीयकरण भी नहीं होता और आज दुख इस बात का है कि समाजवाद के नाम पर सारा का सारा पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है, लेकिन उसका नतीजा कुछ निकलता नहीं । इस दृष्टि से जब हम देखते हैं कि समाजवादी समाज की रचाना के लिये जब हम सोचते हैं तो पाते हैं कि हम अपने को किस श्रेणी में रखें कि हम समाजवादी हैं, या सामन्तादी हैं या अधकचरे हैं क्या हैं और क्या नहीं ? ऐसा माहौल बना हुआ है कि हम सोचते है कि यह बड़े आदमी का खाना है और यह छोटे आदमी का खाना है । यह हमारे लिये कलंक की बात है कि आज भी पब्लिक स्कूल चलते हैं । यही नहीं हमारे मंत्रिमंडल की जो टीम है वह भी धर्म, जाति और मजहब पर आधारित है और मुझे कतई उम्मीद नहीं है कि इस टीम से कुछ होने वाला है । धन्यबाद ।

श्री भीषम (जिला बस्ती)--

उपाध्यक्ष महोदय, वर्तमान शिक्षा की परिभाषा अगर सुनना चाहें.....

श्री उपाध्यक्ष--

माननीय सदस्य बात न करें ।

श्री भीषम--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि अगर वर्तमान शिक्षा की परिभाषा आप करना चाहते हैं तो देहात में चले जायं । मैं तीन किसानों की परिभाषा बताता हूं । मेरे आगे अपढ़ किसान जा रहे थे--एक किसान कहता है कि मैंने 229 रुपये दे दिये । दूसरे ने कहा कि कुछ लिखाया है कि नहीं । उसने उत्तर दिया कि नहीं । तीसरे ने कहा वह पढा है कि नहीं, उत्तर मिला नहीं । तीनों ने एक साथ फिर कहा कि बे मानी नहीं होगी । कहने का मतलब यह है कि शिक्षा का संबंध आदमी के चरित्र से होता है और चरित्र का कितना प्रभाव पड़ता है वह उन गरीब आदमियों से पूछिये। लेकिन यह शिक्षा बेरोजगार, चरित्रहीन, शक्तिहीन, धनहीन कर रही है । अभी दो चार दिन की बात है कि एक हरिजन का लड़का बी0 ए0 पास था । बाप-पूत में झगड़ा हो गया, बाप कहता है लड़के से कि तुझे गोबर काढ़ने का भी काम नहीं मिलेगा । आधुनिक शिक्षा का यह हाल...

श्री उपाध्यक्ष--

माननीय सदस्य, व्यक्तिगत रूप से बातचीत न करें ।

श्री भीषम---

महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा की तरक्की करके देश की समस्याओं को हल करने की बात कही थी, लेकिन सन् 54 के बाद से बेसिक शिक्षा किताबों में रह गई, कार्य रूप में नहीं आई और आज बेसिक शिक्षा का नामोनिशान नहीं रह गया है। अब हम समाजवादी शिक्षा की तरफ चलते हैं तो पाते है कि एक तरफ देहात के स्कूल है जहां किसान के लड़के, गरीबों के लड़के जाड़ा, गरमी और बरसात में पेड़ के छाये के नीचे भूखे नंगे रहकर पढ़ रहे हैं और उनकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी है और दूसरी ओर पब्लिक स्कूल में नर्सरी की शिक्षा होती है जहां बड़े-बड़े अधिकारियों के लड़के, मंत्रियों के लड़के, धनियों के लड़के पढ़ते हैं और उनकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और अंग्रेजियत है। ऊंचे-ऊंचे पदों पर अंग्रेजी शिक्षा को मापदंड मानकर ही नियुक्त लोगों को किया जा रहा है। इस तरह से ऐसा मालूम होता है कि शहरों के लोगों का आधिपत्य देहात में हमेशा के लिये बना रहे ।

तीसरी बात यह कहनी है कि त्रिसूत्री भाषा का नियम लागू कर दिया गया है और जूनियर हाई स्कूल तक के छात्र को इसके अन्तर्गत अंग्रेजी, संस्कृत तथा हिन्दी ये तीन भाषायें पढ़नी होंगी तीनों भाषा की करीकूलम एक है । और उसके फेल तथा पास होने का माप दंड भी त्रिसूत्री भाषा के आधार पर रख दिया गया है । नतीजा यह है कि लड़का सर्वगुण सम्पन्न होते हुये भी फेल हो जाता है और पढ़ाई छोड़ बैठता है । मेरा निवेदन है कि यह त्रिसूत्री भाषा का भार लड़के पर क्यों डाला गया है।

मंत्री महोदय कहते हैं कि शिक्षकों को पुराने ऋषियों का अनुसरण करके शिक्षा देनी चाहिये । मुझे भी एक किस्सा याद आता है। महानीतिज्ञ चाणक्य रात के 9 बजे राजकीय कार्य में लिप्त थे। उस समय एक सम्बन्धी मिलने गये । चाणक्य ने दीपक बुझा दिया और दूसरा दीपक जला दिया । सम्बन्धी ने पूछा ऐसा क्यों किया तो चाणक्य ने जवाब दिया कि पहला दीपक राजकीय था जिससे राजकीय काम होता है और दूसरा जो जलाया उससे व्यक्तिगत कार्य होता है इसलिये उन्होंने अपना दीपक जला लिया । मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि राजकीय साधनों का कितना वह दुरुपयोग अथवा सदुपयोग करते हैं और शिक्षकों से कहते हैं त्याग, तपस्या करके पुराने ऋषियों जैसा व्यवहार करो ।

अब मैं अपने जिले के बारे में आता हूं । प्राइमरी शिक्षक घर के नजदीक रहते हैं तो वे शिक्षा का काम नहीं करते हैं, घर का ज्यादा काम करते हैं ऐसा आरोप उन पर लगाया जाता है । लेकिन यह भी ध्यान रखना होगा कि उनको समय से वेतन नहीं मिलता है । अगर समय से उनको वेतन मिल जाया करे और पूर्ण वेतन मिले तो उनके दिल में जो परेशानी है वह दूर हो जायगी । इसके अलावा एक ही योग्यता के दूसरे विभाग के कर्मचारी धन से भरपूर हो रहे है और वह निर्धन है उसके दिल में यह जो दुर्भावना और जलन है उसके लिये यही उपाय है कि उसे समय से तथा पूर्ण वेतन दिया जाय तभी वह अधिक काम कर सकेगा ।

मैं अपने जिले की एक बात कहता हूं कि सन् 69 से 150 जूनियर हाई स्कूलों में कम से कम 100 हेडमास्टर नहीं है और तब से लेकर आज तक जो अधिकारी जाता है वह जी0ओ0 की अपने हिसाब से परिभाषा करके अपने सम्बन्धी को रखवाना चाहता है और इस तरह से यह सारा मामला खटाई में पड़ा हुआ है और जूनियर हाई स्कूल बिना हेडमास्टर के चल रहे हैं ।

अब मैं जिला बस्ती के अध्यापकों की कठिनाई पर आता हूं । सन् 67 से आज तक काफी बकाया वहां के अध्यापकों का पड़ा हुआ है बेसिक शिक्षा परिषद् में और जिला परिषद् में वह उनको नहीं मिल रहा है । सन् 69 से लेकर आज तक उनको पेंशन नहीं मिली और तब से अब तक उनका प्राविडेन्ट फंड भी पड़ा हुआ है । उनकी पेंशन सन् 69 में बनी है, सरकार को चाहिये कि वह पेंशन उनकी महंगाई वृद्धि के साथ दी जानी चाहिये ।

अब मैं आपका ध्यान व्यक्तिगत संस्थाओं की ओर दिलाना चाहता हूं। हर व्यक्तिगत संस्था राजनीति का अखाड़ा बनी हुई है। वहां मैनेजर और प्रधान हरिजन छात्रों के नाम पर नाजायज पैसा वसूल कर रहे हैं। अपने टीचरों के प्रति अन्याय कर रहे हैं। बस्ती जिले में कई स्कूलों में प्रबन्धकों ने बिना नम्बर के लड़के पदोन्नत कर दिये गये हैं। इस तरह से मुझे कहने का अवसर है कि जो शिक्षा अनुपयुक्त है उसके लिये इतनी बड़ी धनराशि व्यय करना उचित नहीं है और इन शब्दों के साथ ही मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अजीजुर्रहमान (जिला बिजनौर)--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि आपने मुझे इस बहस में हिस्सा लेने का मौका इनायत किया। क्योंकि मेरे पास वक्त बहुत ही कम है इसलिये मैं सिर्फ दो गुजारिशात पेश करूंगा। माध्यमिक शिक्षा के राष्ट्रीयकरण का सवाल सामने है और इस एवान के अन्दर और बाहर मैं देखता हूं कि कतई राय है कि सेकेन्डरी एजूकेशन को हम नेशनलाइज कर दें और उसके पीछे कुछ मांगे भी सामने आ रही हैं--टीचर्स की मांगे हैं और मांगे हैं। मैं जो कुछ अर्ज करने जा रहा हूं उसके पेशे नजर यह नहीं अर्ज करूंगा कि खुद मेरी जाती राय इस बारे में क्या है लेकिन एक मामला है कि जो इस हिन्दोस्तान के शहरियों के बुनियादी हकूक के कायम रहने या पामाल होने का सवाल है हमको यह जरूर लिहाज करना होगा कि आया हम सेकेन्डरी एजूकेशन को नेशनलाइज करें? हमारे संविधान ने, हमारे दस्तूर ने माइनरीटीज को यह हक दिया है कि वह अपने तौर तरीकों पर अगर चाहे तो अपने तालीमी इदारों को चलायें और वह अपने मुकर्रर तरीके पर चलाने में स्टेट जो इमदाद देती है उससे महरूम न रहे। स्टेट उनकी मदद करें। मेरी गुजारिश यह है कि इस इकदाम को करते हुये हमको इस बात का लिहाज करना चाहिये कि यह मुल्क जो दुनिया की सब से बड़ी जम्हूरियत है जिसके नारे ने न सिर्फ इस देश में बल्कि आलमीसतह पर जम्हूरियत, सोसलिज्म और सेक्यूलियरिज्म का नारा दिया है उसमें हम ऐसा न करें कि जो बुनियादी हकूक हमने मंजूर किये हैं उनको एक हाथ से मंजूर करें और दूसरे हाथ से छीनना चाहें। यह जो माइनोरिटीज इंस्टीट्यूशन्स के टीचर्स हैं उनके सामने जरूर यह सवाल आ सकता है कि अगर आप सेकेन्डरी एजूकेशन को नेशनलाइज करेंगे तो उस वक्त जो प्रिविलेजेज नेशनलाइजेड इन्स्टीट्यूशन्स को मिलेंगे उससे वे महरूम न रह जायं यह बात भी हमको सामने रखनी होगी। मैं दरखास्त करूंगा कि इसका लिहाज रखा जाय और उनको वे ही प्रिविलेजेज दिये जांय जो कि नेशनलाइजड इन्स्टीट्यूशन्स को मिलें। माइनोरिटीज के इन्सटीट्यूशन्स नेशनलाइज न किये जायें जहां तक मुसलमानों का ताल्लुक है, मैं बिलकुल साफ तौर पर इस बात को जाहिर कर देना चाहता हूं और बिल एलान कहता हूं कि यह मुसलमानों की मौत और जीस्त का सवाल है और ऐसे इकदाम को वह अपने मजहब और अपने शिआर पर दस्त अन्दाजी समझेंगे: इस पर हाथ डालना जमहूरी वसूलों के मुताबिक नहीं होगा। यह उसके खिलाफ होगा तो हमारी स्टेट गवर्नमेंट और हमारे मन्त्री साहब इस बात का ख्याल रखें।

दूसरी बात जो मुझको अर्ज करनी है पिछले मर्तबा भी आपके सामने गुजारिश की थी उर्दू के बारे में। कुछ मुतालबात मुखतलिफ लोगों की तरफ से और अंजुमनों की तरफ से आये। मैं उनसे न सिर्फ मुस्तफिक हूं बल्कि मैंने खुद इस बारे में गुजारिश पेश की थी कि उर्दू को इस प्रदेश की रीजनल लैंगवेज होनी चाहिये, दूसरी सरकारी जबान का दर्जा इसे देना चाहिये। तालीम को 8 दर्जे तक लाजमी करार दिया जाना चाहिये। उर्दू के लिए इस प्रदेश में एक यूनिवर्सिटी कायम की जानी चाहिये। स्कूलों में जो इस वक्त पाबन्दी लगी हुई है वह अजब किस्म की है मैं अर्ज करूंगा, एक खास चीज जो रियायत की शक्ल में पेश की गई है कि जिन स्कूलों में 10 लड़के एक क्लास में पढ़ते हों या पढ़ना चाहते हों या पूरे स्कूल में 40 लड़के पढ़ना चाहते हों वहां पर उर्दू टीचर्स का सरकार बन्दोबस्त करेगी। मैं अर्ज करना चाहूंगा कि ऐसा हर्गिज नहीं होना चाहिये। उर्दू टीचर्स का तकर्रुर, उर्दू पढ़ाने का इन्तजाम इस बात पर मुनहसिर नहीं होना चाहिये कि तादाद कम से कम इतनी

[श्री अजीजुर्रहमान]

हो। अगर ऐसा होता है तो जो लोग इस फिक्र में रहते हैं कि उर्दू की तरक्की न हो, उसे फरोग न मिले उर्दू चलन से बाहर हो जाय उनको इससे हौसला मिलेगा। हमने हाल ही में टीचर्स के एपोइन्टमेंट के बारे में कहा तो उसमें कहा गया कि 4 हजार टीचर्स हमने प्रदेश में रख दिये हैं। बिला शुबह आपने जो यह बात की है उसके लिए हम शुक्रगुजार हैं। लेकिन यह बात जरूर सामने रखनी चाहिये कि प्रदेश में 50 हजार प्राइमरी स्कूल हैं अगर इस तादाद के मुकाबले में 3 हजार या 4 हजार टीचर्स का तकर्रुर कर दिया तो यह किसी तरह काफी नहीं हो सकता। यह जो तादाद बतलाई गई है वह भी पूरी नहीं हो रही है। देवरिया में कस्तूरबा गर्ल्स इन्टर कालेज है वहां पर लड़कियां मौजूद हैं लेकिन टीचर्स वहां पर पढ़ाने के लिए मौजूद नहीं हैं। नतीजा यह है कि वह किसी ऐसे टीचर के मत्थे पड़ी है जो उर्दू नहीं जानती। तो उससे उर्दू को तरक्की नहीं हो सकती है। इसी प्रकार बस्ती जिले के बेसिक शिक्षा अधिकारी ने कहा कि वहां पर 40 लड़के उर्दू पढ़ने वाले हैं लेकिन फिर भी उन्हें इजाजत नहीं मिली। वहां पर उर्दू पढ़ाने का इन्तजाम नहीं हो पाया है। करीब 4 सौ जगहें इस वक्त खाली पड़ी हैं।

श्री उपाध्यक्ष---

माननीय सदस्य आपके दो मिनट और हैं। दो मिनट में आप भाषण समाप्त करें।

श्री अजीजुर्रहमान---

तो मैं उर्दू के बारे में अर्ज कर रहा था कि इसे रीजनल लैंगवेज बनाया जाय। 1961 की सैन्सेस रिपोर्ट में लिखा है कि उर्दू पढ़ने वालों की संख्या साढ़े तीन करोड़ से ऊपर है रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की सोलहवीं रिपोर्ट के मुताबिक हिन्दुस्तान में हिन्दी अखबारों की संख्या 3116 है और कुल उर्दू अखबारों की संख्या 1005 है। उर्दू अखबार पढ़ने वालों की संख्या 14 लाख 55 हजार है और हिन्दी अखबार पढ़ने वालों की संख्या 60 लाख 43 हजार है। इस आदाद से जाहिर है कि उर्दू बोलने वाले हिन्दी बोलने वालों की निस्बत एक चौथाई से किसी तरह कम नहीं हैं। फिर उर्दू वह जुबान है, जिसके लिए हमारी प्रधान मन्त्री रतबुल्लिसान हैं। हमारे वजीरे आला का कहना है उर्दू इस मुल्क की अपनी जुबान है। वह कहती हैं कि उर्दू के जरिये हमारा मिडिल ईस्ट के मुमालिक से रिश्ता जुड़ा हुआ है, उसके खिलाफ कार्यवाई करना जहर खा लेने के मुतरादिक है। उसकी मीठी बोली होना और इस महान एक कड़ी देश की मुश्तर्का विरासत होना मुसल्लम है। हमारे नेता विरोधी दल उसको बोलें, हमारे नेता जनसंघ उसको बोलें, हमारे माननीय नेता संगठन कांग्रेस उस को बोलें, फिर उसके बारे में यह कहा जाय कि साहब इसके बोलने वालों की इतनी तादाद नहीं है, तो सुनकर हम लोगों को बड़ा ताज्जुब होता है। जब इस तरह की बातें की जाती हैं तो मैं नहीं समझता हूं इस जम्हूरियत, सैक्युलरिज्म और सोशलिज्म के नारों का क्या मतलब है। इस तरह की बातें करना इन नारों से कोई मेल नहीं खाता है। उर्दू और हिन्दी का कोई तसादुम नहीं है। मैं चाहता हूं कि मेरे बच्चे हिन्दी पढ़ें, मैं हिन्दी को राष्ट्र-भाषा मानता हूं। लेकिन अगर इसके साथ-साथ उर्दू को पूरी तरक्की मिल जाय, उसका फरोग हो जाय तो उसमें क्या हर्ज है। इससे हम अपने ही कल्चर की खिदमत करेंगे और हम अपने देश के तमद्दुन को सही मुकाम देंगे। और आखरी बात यह है कि अगर दुनिया की सबसे बड़ी जमहूरियत की ऐसी हुकूमत जो जमहूरी निजाम की पाबन्द है वह उर्दू को सही मुकाम और दर्जा नहीं देगी तो हम और कौन सी हुकूमत से इसकी तव्वकी रखेंगे।

श्री मूलचन्द राजपूत (जिला मुजफ्फरनगर)---

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज शिक्षा के कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और उसके आधार देता हूं। आज पक्ष और विपक्ष सभी चाहते हैं कि शिक्षा नीति में आमूल-चूल परिवर्तन हों। लेकिन हम देख रहे हैं कि 27 वर्षों में शिक्षा की नीति में कितना परि-

वर्तन हुआ है ? हमने कोई परिवर्तन नहीं किया है। इस तशल्लीबख्श चीज की मिसाल उस तेली के बैल से मिलती है, जिसको सुबह के वक्त आंख में पट्टी बांधकर कोल्हू में जोत दिया जाता है और शाम तक वह वैसे ही लगातार चलता रहता है। उसको यह ज्ञात होता है कि वह बहुत दूर चला गया है, लेकिन आंख खुलने पर उसको मालूम होता है कि वह उसी जगह खड़ा हुआ है। इसी प्रकार आज 27 सालों के अन्दर जब हम शिक्षा के ऊपर विचार करते हैं, तो पाते हैं कि जो शिक्षा अंग्रेजों के जमाने में बाबू बना रही थी, वही शिक्षा आज भी बाबू बना रही है। लेकिन इसके अन्दर अन्तर एक बहुत बड़ा आया है। उस जमाने में यह शिक्षा जो व्यक्ति प्राप्त करते थे, उनको नौकरी या और कोई चीज मिल जाती थी। लेकिन इस 27 सालों के अन्दर आज यह मौका पेश आया है कि इसमें जो पढ़ लिख जाते हैं, उन्हें भी कोई व्यववसाय नहीं मिलता है। वे इधर-उधर ठोकरें खाते फिरते हैं। अतः इस शिक्षा के ऊपर मैं मन्त्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं और चाहता हूं कि वह इस समय बात न करें, बल्कि उसकी ओर पूरा ध्यान दें। सबसे पहले हमारे देश के अन्दर प्राइमरी शिक्षा, नर्सरी शिक्षा और बेसिक शिक्षा आती है। यदि ये तीनों ठीक कर दी जायं, तो मैं समझता हूं कि शिक्षा का आधार जो है वह एक बहुत अच्छा बनाया जा सकता है। साथ ही जो देश और प्रदेश की समस्यायें हैं, वे हल हो सकती हैं। आज यहां छात्र और अध्यापक सभी परेशान हैं। छात्रों को बैठने के लिए टाट वहां पर नहीं मिलता है। और अध्यापक को वहां तनख्वाह नहीं मिलती है। तो इस प्रकार दोनों ही असन्तुष्ट हैं और ऐसे वातावरण के अन्दर शिक्षा क्या पनप सकती है ? इसके अलावा मैं एक बात आपको और बता देना चाहता हूं कि जो सरकार समाजवाद का ढिंढोरा पीटती है, समाजवाद का नारा लगाती है, वह समाजवाद की तरफ अपना ध्यान नहीं देती है। आज केवल बेसिक और प्राइमरी एजूकेशन के अन्दर कितना बड़ा अन्तर है। एक तरफ प्राइमरी स्कूल गांव में आप देखते हैं, दूसरी तरफ नरसरी स्कूल आप शहर में देखते हैं, पब्लिक स्कूल या कैम्ब्रिज स्कूल देखते हैं। एक स्कूल में टाट नहीं मिलता है, न पढ़ने का साधन है। कैम्ब्रिज स्कूल के अन्दर जहां पर बड़े मालदारों और अफसरों के बच्चे पढ़ते हैं वहां सभी सुविधायें हैं। अगर सच्चा समाजवाद, जिसका आप ढोल पीटते हैं, लाना है तो इस प्रकार की विभिन्नता, भेदभाव इन प्राइमरी, बेसिक और नर्सरी स्कूलों में आपको मिटाना होगा। नर्सरी स्कूल केवल शहरों में चल रहे हैं। देहात के अन्दर अभी आपको स्थापित करने होंगे यदि आप समाजवाद को अच्छी तरह से लाना चाहते हैं। और शिक्षा का विकास करना चाहते हैं।

इसके अलावा बेसिक एजूकेशन को जब जिला परिषद् से अलग किया गया था तो लोगों कोउम्मीदें थीं कि यह शिक्षा जिला परिषद् के भीतर से निकली है, इसमें शायद सुधार होगा। लेकिन कुछ दिनों के बाद इसको वहीं पर ला रहे हैं। उसी गाड़ी मे उसको जोता जा रहा है जिस गाड़ी में से इसको निकाला गया है। मैं मन्त्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि इसके ऊपर ध्यान दें और इस शिक्षा को फिर तनज्जुली के दायरे में नहीं ढकेलना चाहिये।

इसके अलावा एक बात और कहना चाहता हूं। आज शिक्षा संस्थायें वहां पर खोली जा रही हैं या वहां पर चल रही हैं जहां पर उनकी आवश्यकता नहीं है। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। जिला मुफ्फरनगर में ग्राम कमरुद्दीननगर के अन्दर एक ब्रांच राजपुरछाजपुर की खोली गई थी आजकल जिसमें 20 या 30 बच्चे पढ़ रहे हैं। तीन अध्यापक हैं जिन पर हजारों रुपया खर्च होता है, उसमें पढ़ाते हैं वह ब्रांच चल रही है ज कि वहां पर जन्ता जूनियर हाई स्कूल स्थायी मान्यता प्राप्त चल रहा है, तीन सौ के करीब उसमें बच्चे हैं। तो क्या जरूरत है उस ब्रांच की ? इसी तरह से जोता ग्राम है। जिसमें एक ब्रांच चलाई जा रही है। मैं शिक्षा मन्त्री का ध्यान दिलाऊंगा कि जहां शिक्षा की आवश्यकता हो वहां शिक्षा संस्थायें खोलनी चाहिये। जहां पर केवल अपने निजी स्वार्थों

[श्री मूलचन्द राजपूत]

के वश शिक्षा संस्थायें खोली जाती हैं वहां पर देश और प्रदेश का कोई लाभ नहीं होता है। इसलिए में शिक्षा मन्त्री का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जिला मुजफ्फरनगर के अन्दर जो ऐसी ब्रांच चल रही है और वहां पर स्थायी मान्यता प्राप्त इंस्टीट्यूशन्स हो गये हैं, उन ब्रांचों को हटा कर दूसरी जगह खोल देना चाहिये जहां पर जिले के अन्दर संस्था की बहुत बड़ी आवश्यकता है। विशेषकर कमरुद्दीन नगर से ब्रांच तुरन्त हटाई जाय।

इसके अलावा बताना चाहता हूं कि शिक्षा अधिकारियों के कार्य की तरफ भी ध्यान देना चाहिये। और उनके कार्यों की जां च की जाय।

अब मैं हायर सेकेन्डरी तालीम की तरफ जाना चाहता हूं। उस तरफ मैंने पहले भी सुझाव दिये थे। मैं समझता हूं कि उनकी तरफ विशेष ध्यान नही दिया गया। मैं अध्यापकों की हड़ताल की तरफ ध्यान ले जाना चाहूंगा हूं। उस पर माननीय शिक्षा मंत्री ने जो बयान दिया था कि वह केवल एक पक्षीय था। उसके बाद यहां पर सौ अध्यापक जेल भेजे गये। और साढ़े नौ बजे बिना किसी डिसीजन के एक मजिस्ट्रेट को बुलवाकर तमाम अध्यापकों को छोड़ दिया गया है। मैंने शिक्षा मंत्री से कहना चाहता हूं कि अध्यापको को पेन्शन, ग्रेच्यूटी, उनके बच्चों को फ्री ऐजुकेशन, मेडिकल फैसिलटी, हाउसिंग फैसलिटी देनें की तरफ आप ध्यान दें। अध्यापकों में असंतोष है कि उन्हें समान शिक्षा के लिये सामान वेतन नही मिलता है और सरकार इनके लिये जिम्मेंदार है।

अध्यापक ही तो शिक्षा से मुल्क को ऊंचा उठा सकता है। अब मैं हायर एजुकेशन की ओर जाना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--

आपका समय समाप्त हो गया।

श्री मूलचन्द राजपूप--

इस तरफ गलती यह है कि आज सारे विश्व विद्यालयों मे वाइस चांसलरों के खिलाफ हड़ताल करायी जाती है और उनके खिलाफ वातावरण बानया जाता है ऐसा क्यों है? इसलिये है कि शिक्षा अधिकारियों का सस तरफ रूझान नहीं है। विश्वविद्यालय में क्षात्र अध्यापक और वाइस चांसलर की एक कमेटी हो जिसकी सहमति से विश्वविद्यालयों का कार्य सुचारु रूप से चल सकता है।

श्री उपाध्यक्ष--

माननीय सदस्य का समय समाप्त ही गया। अब कृपया बैठिये।

श्री मूलचन्द राजपूत---

इनका एक सामूहिक एसोसियेशन होना चाहिये और उनके परामर्श से काम होना चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष--

यदि आप अनधिकार चेष्टा करेंगे तो आपका भाषण नहीं लिखा जायगा माननीय सदस्य बैठने की कृपा करें।

*श्री ख्यालीराम शास्त्री (जिला मुरादाबाद)--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा केवल 5/6 सुझाव देना चाहता हूं। आज हमारे देश को स्वतंत्र हुए 27 साल हो गये लेकिन शिक्षा में आज भी गलती

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

क्यों हो रही है ? मेरी राय में सबसे बड़ी गलती यह रही कि कि अंग्रेजों ने देश की वास्तविक सत्ता देश के नेताओं को सौंपने के बजाय नौकर शाही के हाथों में दी। उसने हमारे देश की संस्कृत तथा राष्ट्र भाषा के साथ षडयंत्र किया हिन्दी की अवनति की ओर अंग्रेजी को बढ़ाया। जब हम गुलाम थे तो जूनियर हाईस्कूल तक अंग्रेजी का कोई नाम नहीं था। लेकिन अब तीसरी क्लास से ही अंग्रेजी कर दी गयी है। किसी देश को अगर आगे बढ़ाना है तो उसकी मातृ भाषा को बल मिलना चाहिये। यदि आप इस भ्रष्टाचार से दूर रहना चाहते हैं और अपनी योजनाओं को जनता तक पहुंचाना चाहते हैं तो अपनी भाषा में उसको पहुंचाइये। हमारी एक प्रतिशत जनता अंग्रेजी नहीं जानती है और अधिकारी वर्ग अंग्रेजी में ही सारी चीजें जनता में पहुंचाना चाहते है। आप अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी प्रतिष्ठित कीजिये।

इसके साथ ही साथ संस्कृत जो कई भाषा की जननी कही जाती है उसके प्रचार के लिये रुपया तो दिखाने के लिये बढ़ा दिया गया है। लेकिन इतना ही कि जिससे बहका सकें और हमारे अधिकारी वर्ग थोड़ा सा पैसा दे देते हैं। वास्तव में आप उन्नति नहीं चाहते हैं। यदि आप चाहते हैं तो मेरा सुझाव यह है कि जो संस्कृत के अध्यापक रखे जायं वह व्याकरण के प्रथमा, मध्यमा या शास्त्री ही रखे जायें। यदि नहीं रखेंगे तो व्याकरण के द्वारा जिससे शब्द की रचना सिखायी जाय उस पद्धति से नहीं पढ़ा पायेंगे। वे केवल रट कर पढायेंगे और रटन्त विद्या के रूप में नाम मात्र के अक्षर ही सिखा पायेंगे। संस्कृत में सारे विश्व का ज्ञान भरा हुआ है। जिन बातों के लिये पहले कपोल कल्पित कहा जाता था उसको ही संसार के विज्ञान ने सच मान लिया है कि उस समय का विज्ञान उन्नति के बहुत उच्च शिखर पर था। इसलिए मेरा निवेदन है कि संस्कृत के लिए अधिक से अधिक अनुदान दिया जाय। 900 के लगभग जो संस्कृत पाठशालाएं हैं जो मान्यता प्राप्त हैं उनको अनुदान अन्य विद्यालयों की अपेक्षा अधिक दिया जाय। जो संस्कृत के विद्यार्थी हैं, जो मध्यमा हैं, जो आचार्य हैं या प्रथमा हैं उनको भी नौकरी में उतना ही स्थान दिया जाना चाहिये जैसी कि अन्य भाषाओं के विद्यार्थियों को सुविधाएं दी जाती हैं जिससे कि वह आगे बढ़ सकें।

शिक्षा विभाग में पहले भ्रष्टाचार नहीं था लेकिन इस 10 वर्ष के बीच में भष्टाचार घटने के बजाय, इस शिक्षा विभाग में अन्य विभागों की अपेक्षा बढ़ा है। आज अगर किसी अध्यापक का स्थानान्तरण करना है, तो वह बिना पैसे के नहीं हो सकता है। आज अध्यापकों की नियुक्तियां बगैर पैसे के नहीं हो सकती हैं। यदि बेसिक शिक्षा में सुधार करना है तो पुनः बेसिक शिक्षा को जिला परिषदों को दे दीजिए। इस बात को ध्यान में न रखें कि जिला-परिषदों में कांग्रेस के चेयरमैन बन गये हैं, कांग्रेस का बहुमत हो गया है या किसी पार्टी का का बहुमत हो गया है। मैं प्रार्थना करूंगा माननीय सदस्यों से कि इस बात का वे ध्यान न रखें। वे ऐसा सरकार पर दबाव डालें कि बेसिक शिक्षा पुनः जिला परिषदों में चली जाये। यह जो छुट्टियां वगैरह हैं वे ऐसे समय पर की जानी चाहिये जिसमें वह अपने घर पर जाकर अपने घर के कामों में हाथ बंटा सकें, अपने मां बाप के कामों में हाथ बंटा सकें। जब खेत काटने आदि का समय होता है, या खेत बोने का समय होता है, अगर उस समय उन बच्चों को छुट्टियां मिल जाती हैं, तो वे अपने मां बाप के कामों में हाथ बंटा सकते हैं। आजकल जो पुस्तकों का कोर्स है वह इतना अधिक है कि अगर बच्चा जो है, अगर एक दिन की किताब लेकर जाना चाहे तो लेकर नहीं चल सकता है। इस प्रकार से जो कोर्स है इतना अधिक बढ़ गया है। मैं आपके माध्यम से मंत्री जी जो हैं और मंत्री जी के जो गण हैं उनके अधिकारी आदि, उनका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि यह जो बोझ है उसको कम कर दें। इसके अलावा मैं और एक निवेदन कर दूं कि शिक्षा विभाग में अब कुछ थोड़े से वर्षों में ऐसा हो गया, मैं यह मानता था कि पहले शिक्षा विभाग में जैसा कि मेरा अनुभव था कि और महकमे के मुकाबिले कम से कम भ्रष्टाचार था लेकिन आज 10 वर्षों से शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार इतना आगे बढ़ गया कि वह और मोहकमों को पीछे छोड़ दिया।

[श्री ख्याली राम शास्त्री]

एक बात मैं और निवेदन कर देना चाहता हूं कि राष्ट्रीयकरण का जो सवाल है उसको अविलम्ब कर देना चाहिये । जब हम सारा खर्च उठाते हैं तो यह दुकानें क्यों चलती हैं? लोगों ने दुकानें चला रखी हैं, इनको बन्द करना चाहिये । हम देखते हैं जो लोग 10 या 15 परसेंट पैसा इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स के यहां पूज देते हैं उसको तो ग्रान्ट मिल जाती है और जो नहीं पूजता है उसको ग्रान्ट नहीं मिल पाती है । हम देखते हैं कि जो कमरा 10 हजार में बनता है उसको 40 हजार का दिखाया जाता है और फर्जी वाउचर लगा दिये जाते हैं । बहुत से विधायक भी हो सकते हैं और बहुत से नेता भी हो सकते हैं जो इस तरह के कार्य करते हैं। एग्रीकल्चर डिप्लोमा का एक स्कूल मेरठ में था वहां पर पहले प्रवेश के लिये एक हजार, डेढ़ हजार, दो हजार और ढाई हजार रुपये लिये जाते थे, लेकिन अब तीन हजार रुपया इस वर्ष लिया गया है । दूसरे जिले में भी एक इसी तरह की दूकान खोल ली गयी है । वहां पर भी यही चलता है । मैं चाहता हूं कि इस तरह के स्कूलों को सरकार द्वारा मान्यता न प्रदान की जाये ।

डाक्टर मलखान सिंह (जिला जालौन)---

मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि नम्बर तो आया। मैं माननीय ओम प्रकाश सिंह द्वारा प्रस्तुत कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। क्योंकि अनुदान की कटौती होनी चाहिए और कटौती इसीलिए नहीं किया, रुपया ज्यादा दिया गया है इनको रुपया दिया ही नहीं जाना चाहिये क्योंकि यह खर्च करना जानते ही नहीं हैं । इसीलिये मैं कटौती का समर्थन करता हूं ।

मान्यवर, झूठ तीन प्रकार का होता है---एक झूठ, दूसरा सफेद झूठ और तीसरा आंकड़ों का झूठ । हमारी सरकार की ओर से जो आंकड़े प्रस्तुत किये गये हैं वह वाइट लाइ ही नहीं बल्कि टोटल लाइ है । जो कहा गया कि 21 परसेंट शिक्षा है उत्तर प्रदेश में तो यह रजिस्टर में अंकित नम्बर है । जो पढ़े लिखे लोगों की संख्या है उसका एक चौथाई ही विद्यालयों में उपस्थित होते हैं । इसका माननीय मंत्री जी ने खयाल नहीं रखा है । इसीलिए मैं कहता हूं कि यह आंकड़ों का झूठ है और यह प्रदेश शिक्षा के माने में पिछड़ रहा है । माननीय मंत्री आये कि सिर मुड़ाते ओले पड़े । बेसिक शिक्षा जिला परिषद् को देने का विचार है । मुझे मालूम है कि जिला परिषद के अध्यक्षों का सम्मेलन हुआ था उसमें यह प्रस्ताव रखा गया था कि बेसिक शिक्षा उनके हाथ में सौंप दी जाये । माननीय बहुगुणा जी ने उस प्रस्ताव को राजनीतिक दबाव में आकर मान लिया । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि इसमें माननीय मंत्री जी की बदनामी होगी । जिला परिषद की कुव्यवस्था के कारण ही बेसिक शिक्षा परिषद् का गठन किया गया था, लेकिन राजनैतिक दबाव के कारण फिर जिला परिषद् को देनी पड़ी । बेसिक शिक्षा को आज फुटबाल बनाया जा रहा है । मान्यवर, शिक्षा प्रणाली इतनी पुरानी हो गयी है कि इसमें आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है । मैं समझता हूं कि माननीय मंत्री जी मेरे सुझाव को अवश्य मान लेंगे । आज शिक्षा जैसे लोगों को पैदा कर रही है, उसको हमारे मन्त्री जी जानते हैं और हमारा माननीय सदन भी अच्छी तरह से जानता है । इसका जो कारण है वह हमारी शिक्षा प्रणाली, इसलिये शिक्षा प्रणाली में आपको आमूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है । आज शिक्षा रोजगार दायक होनी चाहिये, ऐसी होनी चाहिये जो कि लोगों का सामाजिक विकास कर सके जो लोगों को अपना जीवन यापन के साधन उपलब्ध करा सके और इसकी मांग एक मत से विरोध पक्ष और शासन पक्ष दोनों ने की है । अत : इस सुझाव का माना जाना बहुत ही आवश्यक है ।

मेरा जिला जालौन बुन्देलखंड में पड़ता है । यों तो प्रदेश में बुन्देलखंड का सारा इलाका ही पिछड़ा हुआ है लेकिन जालौन उसमें भी सबसे पिछड़ा हुआ जिला है । बुन्देलखंड में जब एक विश्वविद्यालय खोलने की बात आई तो हमें बड़ी खुशी हुई थी कि वह हमारे जिले

जालौन में खुलेगा लेकिन उसे झांसी में खोल देने का निर्णय ले लिया गया और हम जहां के तहां ही खड़े रहे।

बेसिक शिक्षा का जहां तक सम्बन्ध है उसमें बड़ा भ्रष्टाचार है। उसमें पैसे के लिए एस0 डी0 आई0 स्थानान्तरण करते हैं। ए0 आई0 जी0 एस0 तथा एस0 डी0 आई0 और डी0 आई0 ग्रामीण अंचलों में मुआयना नहीं करने जाते हैं। और अगर जाते है तो वहां जाते हैं जहां उनका दस्तूर मिलता है, उनका हक मिलता है। और अगर नहीं मिलता है तो वहां के अध्यापकों को परेशान करते हैं। हमारे एस0 डी0 आई0 वहां जाते हैं और हर स्कूल से 50 रुपया मुआयने के हक के रूप में लेते हैं। ये शिकायतें मेरे पास अध्यापकों ने की हैं। हालांकि एस0 डी0 आई0 और डी0 आई0 के खिलाफ उनको शिकायत करने की हिम्मत नहीं होती लेकिन फिर भी उन्होंने परेशान होकर हम लोगों से लिखित रूप से शिकायत की है। ऐसे भ्रष्टाचार के दौर में हमारे जिले में तो एक ऐसे बेसिक शिक्षा अधिकारी को भेजा गया है जो प्रशासन के मामले में इतना वीक है कि बाबू लोगों की रबर स्टाम्प बन कर रह गया है। मैं ही नहीं हमारे यहां के उप निदेशक शिक्षा झांसी (डी0 डी0) झांसी ने भी शासन को लिखा है कि जालौन का बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रशासन के मामले में ठीक नहीं है उनको कहीं और पर प्रिंसिपल वगैरह बना दिया जाय लेकिन शासन ने कोई ध्यान नहीं दिया है। उन्हें न जनता की और न अपने अधिकारियों की परवाह है। उन्हें तो जो अपने मन से करना होता है, वे करते हैं।

हमारे जिले में एक ग्राम सभा सेई के नाम से है। वहां पर लोगों ने अपने पैसे से भवन बना लिया है, उन्होंने मांग की कि वहां पर एक अध्यापक लगा दिया जाय। मैंने भी माननीय मंत्री जी को एक पत्र लिखा और उन्होंने तुरन्त आदेश भी कर दिये कि वहां पर एक अध्यापक नियुक्त कर दिया जाय लेकिन उप-शिक्षा निदेशक (बेसिक) ने कहा है कि यह काम तो जिला परिषद् करेगी, हम नहीं कर सकते है। मैं नहीं समझता कि किस मुंह के हमारे शिक्षा मंत्री हैं, कि उनके आदेश को उनके ही अधिकारी नहीं मानते हैं। जहां विद्यालय है, विद्यार्थी हैं, भवन है, उसके लिए एक अध्यापक को ये नियुक्त नहीं करा सकते हैं। यह इनके बस का रोग नहीं है। हमारे माननीय मंत्री जी अभी नये मंत्री हैं। मुझे डर है कि कहीं ये भी अपने अधिकारियों की रबर स्टाम्प बन कर ही न रह जायं। मेरी प्रार्थना है कि अपने अधिकारों का ठीक ढंग से उपयोग करें ताकि प्रदेश में शिक्षा का विकास हो सके। 21 नवम्बर को मैंने एक ग्रामीण अंचल के स्कूल धौरपुर का निरीक्षण किया तो वहां पर एक हेड मास्टर को ही अनुपस्थित पाया। पचीपुरी में प्रधान अध्यापक को ट्रांसफर करके पुनः वहां पर नियुक्त कर दिया और उससे 200 रु0 बी0 एस0 ए0 ने ले लिया। 21 सितम्बर को हमने एक और स्कूल का मुआयना सलैया खुर्द में किया लेकिन वहां का प्रधान अध्यापक भी नहीं पहुंचा और उस अध्यापक के खिलाफ मैं रजिस्टर्ड पत्र से शिक्षा मंत्री जी को, बेसिक शिक्षा अधिकारी को लिखा कि उसके खिलाफ कार्यवाही की जाय। लेकिन क्या मजाल है कि कोई उसके खिलाफ कार्यवाही कर ले। सनैया सलैया खुर्द में मेरे जिले में एक वह स्कूल है। जहां पर दो ही अध्यापक हैं। प्रधान अध्यापक के खिलाफ क्षेत्रीय जनता की गम्भीर शिकायत है कि वह पार्टी पालिटिक्स में भाग लेता है और क्षेत्रीय सहकारी समिति नदीं गांव का वह मेम्बर है, उसी का कार्य किया करता है और स्कूल में नहीं आता है। मैंने उसके खिलाफ लिख कर दिया कि उसको वहां से दूर कर दिया जाय ताकि अपने विद्यालय पर ड्यूटी करने के लिये वह मजबूर हो जाय। उस अध्यापक ने मुख्य मंत्री जी को एक पत्र लिख कर भेजा कि एम0 एल0 ए0 साहब ने 500 रुपये मांगे थे, हमने नहीं दिये, इसलिये शिकायत की। लेकिन इनकी हिम्मत नहीं पड़ी कि वहां जा कर पता लगाते कि हमारी शिकायत सही है या उस अध्यापक की शिकायत सही है

श्री उपाध्यक्ष---

आपका समय समाप्त हो गया।

डाक्टर मलखान सिंह---

केवल एक बात कह लूं कि शिक्षा संस्थाओं और शिक्षा विभाग में जो नियुक्तियां हो रही हैं उसमें शेड्यूल कास्ट के शिक्षकों का कोई उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। माननीय मंत्री जी और शिक्षा निदेशक और यह माननीय सदन इस बात को जानते है कि शिक्षा विभाग में अनुसूचित जाति का उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। विगत दो-तीन वर्षों में शिक्षा विभाग में जो पदोन्नतियां की गयीं क्लास 1, क्लास 2 और क्लास 3 में उसमें अनुसूचित जाति का उचित प्रतिनिधित्व नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष---

अब आप बैठें।

श्री बालकृष्ण सनवाल (जिला नैनीताल)---

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर आपने मुझे दिया। मैं शिक्षा मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत मांगों के समर्थन में और कटौती के प्रस्ताव के विरोध में खड़ा हुआ हूं। हमारे प्रदेश में आज जो शिक्षा चल रही है वह कई हिस्सों में बंटी है---बेसिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, टेक्निकल शिक्षा, कहीं संस्कृत है, कहीं फारसी है। शिक्षा का उद्देश्य क्या है? आज इसके बारे में विचार करना आवश्यक है। सोद्देश्य शिक्षा हो या केवल पढ़े लिखे बेरोजगारों की संख्या बढ़ाने वाली शिक्षा हो, इन दो उद्देश्यों में से हमें एक को चुनना है। कई मंचो से, कई अधिकारियों और नेताओं से, जिनके हाथ में शक्ति है, यह बात सुनने में आती है कि हमको शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन करना चाहिये। परन्तु वह कब किया जायगा, उसके लिये कब समय आयेगा या केवल बातें ही रहेंगी या ठोस कदम भी उठाया जायगा। जहां तक मैं समझता हूं शिक्षा का उद्देश्य एक तो ज्ञान वृद्धि के लिये है, दूसरे बालक को आने वाले जीवन के लिये एक ऐसा नागरिक बनाने का है, जिसमें वह सम्मान के साथ जीवनयापन करते हुये समाज का एक अच्छा अंग बन सके। जहां हम शिक्षा की बातें करते है, स्कूलों की संख्या बढ़ी, बड़ी प्रसन्नता की बात है और खुशी की बात यह भी है कि तीन नये विश्वविद्यालय रुहेलखंड, फैजाबाद और झांसी के लिये प्रस्तावित हैं। इसके लिये मैं शिक्षा मंत्री और उत्तर प्रदेश के मंत्रिपरिषद् को बधाई देता हूं। आज जो यह नयी-नयी शिक्षा संस्थायें खुल रही हैं क्या इनसे आज की आवश्यकताओं की पूर्ति हो रही है? कदापि नहीं। जिला परिषद् तथा स्थानीय निकायों से बेसिक शिक्षा को लेकर बेसिक शिक्षा परिषद् के हाथों में जब से इसका इन्तजाम दिया गया है, तमाम कठिनाइयां सामने आयी हैं। आज छोटे-छोटे कामों के लिये भी बेसिक शिक्षा परिषद् का दरवाजा खटखटाना पड़ता है। इसके इन्तजाम में बहुत सी त्रुटियां हैं। बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में जनता के चुने हुये प्रतिनिधियों का भी किसी न किसी रूप में हाथ होना चाहिये। राष्ट्रीयकरण के नाम पर सरकारीकरण शिक्षा का कर देने से लाभ होने वाला नहीं है। उसमें जनता का पार्टिसिपेशन अत्यन्त आवश्यक है।

जहां तक ऊंची शिक्षा का प्रश्न है, आज उसकी कोई दिशा नहीं है। बेरोजगारों की आज फौज खड़ी हो गयी है और उनमें कुंठा की मनोवृत्ति जाग्रत होती जा रही है। साथ ही विश्वविद्यालयों में उप कुलपति के पद पर आई0 ए0 एस0 के लोगों की भर्ती उचित नहीं है। उनको प्रशासनिक अनुभव हो सकता है लेकिन उनका नैतिक प्रभाव जो छात्रों पर पड़ना चाहिये वह नहीं पड़ पाता। इसी कारण आये दिन वहां हड़तालें हुआ करती हैं। विरोध पक्ष भी इसका लाभ उठाता रहता है। ये लोग भी अपने राजनीतिक लाभ के लिये उनको भड़काया करते हैं।

प्रत्येक कमिश्नरी में एक विश्वविद्यालय खोलने के लिये जो कदम उठाये जा रहे हैं यह एक स्वस्थ परम्परा है। इसके साथ ही संतुलित विकास की दृष्टि से वहां डिग्री कालिज भी

खुलने चाहिये। मेरे क्षेत्र में एक डिग्री कालिज खुलने की मांग बहुत समय से चली आ रही है। रामनगर, जिला नैनीताल में एक डिग्री कालिज शीघ्र खुलना चाहिये। इसके खुलने से आस-पास के 3–4 जिलों के इन्टरमीडियेट कालिज उससे सम्बद्ध हो सकते हैं। नैनीताल में राजकीय हाई स्कूल की इमारत सरकार द्वारा बनाई जा रही थी, पर धनाभाव के कारण उसे रोक दिया गया। वह अत्यन्त आवश्यक है, उसे भी शीघ्र बनवाया जाय, यह अधूरी है।

आज हम देखते हैं कि हमारी परीक्षा प्रणाली में तमाम दोष हैं। आज की परीक्षा प्रणाली से यह पता नहीं चलता कि कौन विद्यार्थी पढ़ कर पास हुआ है, कौन नकल करके पास हुआ है। परीक्षा की पद्धति को बदलना बहुत आवश्यक है। एक बात यह भी देखने में आयी है कि जब कभी अध्यापकों द्वारा हड़ताल होती है उनका वेतन आदि तो बढ़ा दिया जाता है, मगर स्कूलों में साज-सज्जा बढ़ाने की ओर कतई ध्यान नहीं दिया जाता जो अत्यन्त आवश्यक है। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे राष्ट्र का हित हो सके। तभी प्रदेश प्रगति कर सकेगा। इन शब्दों के साथ मैं प्रस्तुत अनुदानों का समर्थन करता हूं और कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री राम प्यारे तिवारी (जिला वाराणसी)––

उपाध्यक्ष जी, आपकी आज्ञा से मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। आज देश में शिक्षा की जो दशा है उस पर तो रात दिन शिक्षाविद् लोग अपने विचार प्रकट करते रहते हैं। मुझे तो निवेदन करना है कि किसी भी देश की उन्नति, उसकी बहबूदी और उसके मजबूती का मूल आधार उस देश की शिक्षा ही होती है। जिस देश का शिक्षा स्तर जितना ही ऊंचा होता है उस देश में उतने ही अच्छे डाक्टर, उतने ही अच्छे इंजीनियर्स, उतने ही अच्छे वैज्ञानिक, उतने ही अच्छे प्रशासक, उतने ही अच्छे प्रोफेसर, उतने ही अच्छे वकील और उतने ही अच्छे बुद्धिजीवी पैदा होते हैं और जिस देश का शिक्षा स्तर गिर जाता है उस देश में न तो अच्छे डाक्टर पैदा होते है, न अच्छे वकील पैदा होते हैं, न अच्छे वैज्ञानिक पैदा होते है, न अच्छे इंजीनियर पैदा होते है, न अच्छे प्रशासक पैदा होते हैं, न अच्छे नेता पैदा होते हैं और न अच्छे बुद्धिजीवी पैदा होते हैं। हालत यह हो जाती है कि जिस देश का शिक्षा स्तर गिरा, वह देश लुंजपुंज होकर गिर जाता है और ध्वस्त हो जाता है। जिस देश का शिक्षा स्तर ऊंचा चला जाता है वह देश निश्चित रूप से उन्नतिशील हो जाता है। वह काफी खुलहाल, समृद्धिशाली और अपने आप में शक्तिशाली होता है। तो मेरा निवेदन है कि देश की शिक्षा का बहुत ही ध्यान रखना चाहिये ताकि शिक्षा का स्तर गिरने न पावे। लेकिन आज हमारे देश की शिक्षा का स्तर इतना गिर गया है कि आज की शिक्षा से जो विद्यार्थी निकलते हैं या शिक्षा पा रहे हैं, उनकी हालत बड़ी ही दयनीय हो गयी है और आज वे समाज के लिये, अपने अभिभावकों के लिये चिन्ता के कारण बन रहे हैं। इसलिये मेरा निवेदन है कि सरकार और विभागों की अपेक्षा शिक्षा पर अधिक ध्यान दें और शिक्षा के महत्व को समझे और उसके महत्व को बढ़ावे।

जहां तक शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की बात है, मैं तो राष्ट्रीयकरण के पूर्ण रूप से पक्ष में नहीं हूं, कुछ अंश में पक्ष में हूं। जहां तक प्राविधिक या मेडिकल साइंस की शिक्षा है इनका राष्ट्रीयकरण कुछ माने में ठीक है, लेकिन पूर्ण शिक्षा का राष्ट्रीयकरण हो जाय ठीक नहीं, राष्ट्रीयकरण का मतलब होता है सरकारीकरण, और हर चीज का सरकारीकरण यह देश के लिये और लोकतन्त्र के लिये बहुत ही भयावह स्थिति होगी। महात्मा गांधी से बढ़ कर इस देश में

(इस समय 3 बजकर 44 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

कोई लोकतंत्र के लिये विचारक नहीं हुआ। महात्मा गांधी हमेशा पूंजी का विकेन्द्रीकरण, सत्ता का वित्तकेन्द्रीकरण चाहते थे, वैसे ही शिक्षा में वे चाहते थे कि शिक्षा जो हो वह सरकारी तंत्र से, सरकारी नियंत्रण से पूर्णतः स्वतंत्र रहे और उसे विकसित होने के लिये स्वच्छन्द वातावरण मिले। वह शिक्षा जो हो, लोक शिक्षा हो, लोक मानस के द्वारा संचालित शिक्षा हो, ऐसी शिक्षा

[श्री राम प्यारे तिवारी---]

न हो जो सरकारीकरण के जरिये लोक मानस पर अपना अंकुश रखने की कोशिश करे शिक्षा के माध्यम से। जब शिक्षा का सरकारी करण होगा तो उस समय यदि सरकार में बैठे हुये लोगों की नीयत में खामी आ गयी तो वह ऐसा पाठ्यक्रम बनाना चाहेंगे और ऐसी शिक्षा को संचरित करना चाहेंगे जिस शिक्षा के माध्यम से लोकमत पर अंकुश लगाया जा सके। तो मेरा निवेदन है कि महात्मा गांधी से बढ़ कर हमारे इस देश में, जैसा कि सभी जानते हैं, कोई महापुरुष नहीं पैदा हुआ, लोक तंत्र के हित में, लोकमत के हित में। तो मेरा निवेदन है कि शिक्षा का पूर्णरूप से सरकारी करण करने की बात सरकार को न सोचनी चाहिये। प्राइवेट लोगों के हाथ में भी रहना चाहिये। जैसा अभी कहा गया कि प्राइवेट शिक्षा में खाऊ पीऊ लोग हैं। मैं इस बात को मानता हूं कि प्राइवेट संस्थाओं में कहीं-कहीं खाने-पीने वाले लोग हैं। लेकिन उसमें से ज्यादा तर लोग सरकार पक्ष के कृपापात्र हैं। इन पर सरकारी पक्ष का वरद हस्त है। इनको सरकारी पक्ष का संरक्षण प्राप्त है। मैं यह मानता नहीं हूं कि केवल प्राइवेट लोग ही लूट खसोट करते हैं। सरकार में बैठे लोग भी दूध के धोये नहीं हैं। रोज आप देखते हैं कि गबन, भ्रष्टाचार, बेईमानी, घोटाले के मामले रातदिन सरकारी मशीनरी में पकड़े जाते हैं और उनका हित रक्षण किया जाता है। मैं अच्छी तरह से जानता हूं। हमारे यहां एक संस्था है। उसके जो मैनेजर हैं उन्होंने घपला किया। उनको सरकारी लोगों का वरद हस्त प्राप्त है। आडिट हुआ और वह पकड़े गये। मामला सी० आई० डी० को दिया गया सी० आई० डी० ने उनके खिलाफ रिपोर्ट दी। लेकिन वह रिपोर्ट दबा दी गयी। तो मैं कहता हूं कि सरकार में सारे लोग दूध के धोये नहीं हैं। हर विभाग में भ्रष्टाचारी, चोरी करने वाले लोग हैं। गांधी जी कहा करते थे अच्छा शासक वह है जो कम से कम शासन करे ज्यादा से ज्यादा भार जनता के कंधों पर डाल दे। क्योंकि ज्यादा शासन करने से ज्यादा गड़बड़ी होगी। जनता पर भार होने से वह खुद काम करेगी। सारे काम सरकार ले ले और वह अच्छी तरह से उनको कर सके। ऐसी बात भी नहीं है। कहावत है:---

कर्त्ता गुरु न कर्त्ता चेला।

जो काम करता है, जिस काम को करता है उसको करते-करते उसका अनुभव उसको हो जाता है। जैसे यदि कोई फर्स्ट क्लास एल० एल० बी० हो और वह प्रैक्टिस न करे तो वह कभी अच्छा वकील नहीं बन सकता है। इसी तरह से अगर किसी ने थर्ड क्लास किया है और रोज कचेहरी में जाकर प्रैक्टिस करता है तो वह धीरे-धीरे अच्छा वकील बन जाता है।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)---

वह कचेहरी में जाकर गवाहों से गलत भगवान की सौगंध भी दिलाता है।

श्री राम प्यारे तिवारी---

चलो आज आपने भगवान का नाम तो लिया।

मैं इस संबंध में और अधिक बातें नहीं कहता। मैंने जो कुछ कहा है उस पर विचार करें। लेकिन मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं। मेरा यह सुझाव है कि शिक्षा से आज सदाचार और शिष्टाचार उठता जा रहा है। सदाचार और शिष्टाचार खत्म होता जा रहा है। हमारे पुराने पूर्वज जो हैं, शिक्षा के बारे में वह सदाचार और शिष्टाचार पर सबसे ज्यादा बल देते थे। आज ऐसी बात नहीं है। उसका परिणाम यह हो रहा है कि हमारे देश के अन्दर लोगों में सदाचार और शिष्टाचार का बड़ा अभाव होता चला जा रहा है। हमारे यहां कहा गया है:---

प्रात काल उठिके रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥

तो शिष्टाचार, सदाचार बहुत जरूरी है, शिक्षा के लिये। असली मानों में सदाचार से विनम्रता

आती है। विद्वान् विद्या का गुण विनय जो है और अगर उसमें विनम्रता नहीं है तो वह रावण के समान हो जायेगा और दुनियां को सतायेगा।

जब मैं पढ़ता था तो मालवीय जी ने रिलीजन का एक विषय रखा था। जो उसमें पास हो जाता था उसको वार्षिक परीक्षा में बैठने को मिलता था और जो फेल हो जाता था वह वार्षिक परीक्षा में बैठने नहीं पाता था। मेरा तो सुझाव है कि इसी तरह से सदाचार और शिष्टाचार का 100 नम्बर का एक परचा होना चाहिये। जो इसमें पास हो उसी को फाइनल में बैठने का अधिकार होना चाहिये। ऐसा यदि नहीं होगा तो आजकल जो हिप्पी कट और सिनेमा कट समाज बन रहा है उससे भारतीय संस्कृति और सभ्यता खत्म हो जायगी। अगर आप इस पर विचार नहीं करेंगे तो यह देश रसातल को चला जायगा। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

*श्री हुबराज (जिला फैजाबाद)--

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई देना चाहता हूं कि आपने शिक्षा के बजट पर मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया। मैं शिक्षा के बजट का हार्दिक रूप से समर्थन करता हूं। जहां तक प्रगति की बात है तो वह हर स्थान पर, हर एक विभाग में बढ़ती जा रही है तो यह नहीं कहा जा सकता है कि शिक्षा में प्रगति नहीं हुई है। शिक्षा में प्रगति काफी हुई है। विद्यालयों में प्रगति अधिक हुई है इसमें संदेह नहीं है।

श्री मुलायम सिंह यादव--

कितने परसेन्ट हुई है ?

श्री हुबराज--

परसेन्ट के आकड़े दिये हुये हैं, आप अपनी बात कहें। मैं अध्यक्ष महोदय, शिक्षा की प्राइवेट विद्यालयों की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जो प्राइवेट शिक्षा संस्थायें मान्यता प्राप्त कर लेती हैं उनको सरकार की तरफ से पूरी सुविधायें और पूरा खर्च दिया जाने लगता है। सरकार का यह सिद्धान्त है कि समाजवाद लाना, हरिजनों को आगे बढ़ाना, उनको आरक्षण देना और गरीबों को शिक्षा देना है। लेकिन प्राइवेट संस्थाओं में कुछ और ही हो रहा है। प्राईवेट संस्थाओं में एक परिवार के एक रिश्तेदार की एक मैनेजमेंट कमेटी तैयार हो जाती है और उसके द्वारा पहले तो भूमि का अधिग्रहण किया जाता है। वह इतनी भूमि कब्जे में लेते हैं कि शायद वह जमींदारी से बढ़कर हो। दूसरे उन विद्यालयों में अध्यापकों की भर्ती भाई-भतीजावाद को ध्यान में रख कर की जाती है। इसलिये वह कोई भी अच्छे अध्यापक नहीं पायेंगे कि जो पढ़े-लिखे हों। कोई भी हरिजन या पिछड़े वर्ग के अध्यापक भी ऐसे विद्यालयों में नहीं मिलेंगे। यदि आप देखना चाहते हैं तो हर विद्यालय की लिस्ट मंगवाकर देख सकते हैं। ठीक इसी प्रकार मान्यवर, उन विद्यालयों में जो स्टाफ वर्ग है चाहे वह क्लर्क हो या चपरासी उसमें भी एक संख्या में इस वर्ग का आदमी नहीं पायेंगे। प्रिंसिपल को तो छोड़ ही दीजिये। मान्यवर, होता क्या है कि उन हरिजनों की छात्रवृत्ति और फीस सब सुविधायें गवर्नमेंट देती है, लेकिन उसका इस कदर दुरुपयोग हो रहा है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसलिये मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यदि सरकार का भ्रष्टाचार मिटाने का संकल्प हो तो जो माननीय सदस्य बहुत से स्कूल खोल चुके हैं पहले अपने स्कूलों में इस कमी को दूर करें और सरकार इस कमी को दूर करे।

मान्यवर, एक तरफ शिक्षा पर बड़ा बल दिया जा रहा है और दूसरी तरफ गरीब बालक पेड़ के नीचे और धूप में बिना पानी के शिक्षा पा रहे हैं। इसके अलावा अमीर घराने के बालक

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री हुबराज]

दूसरी तरफ मांटेसरी स्कूल, विद्यामंदिर, सरस्वती विद्या मंदिर और कान्वेन्ट स्कूलों में शिक्षा पा रहे हैं। इस तरह आप अंदाजा लगा लें कि हमारी सरकार ने दो नीतियां अपनाई हैं। एक तरफ बड़े अफसरान के लिये ऐसे बड़े स्कूल और तथा क्लर्क वर्ग के लिये देहात के छोटे स्कूल--तो कैसे संतुलन लाया जा सकेगा शिक्षा जगत में ? (व्यवधान) समर्थन के साथ सुझाव दे रहा हूं। मेरा निवेदन है कि शिक्षा को आगे बढ़ाना है, अमीरी गरीबी के बीच की दूरी को खत्म करना है तो विद्या मंदिर, शिशु मन्दिर को न खोल कर गरीबों के लिये व अमीरों के लिये एक स्तर के स्कूल खोलने होंगे।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक--

शिशु मन्दिर तथा विद्या मन्दिर और अन्य ऐसे विद्यालय गरीबों के लिये भी हैं। 80 प्रतिशत स्कूल ऐसे हैं जो देहात में हैं, जो गरीब हैं और विद्यार्थी उनको चलाते हैं।

श्री हुबराज--

मैं निजी संस्थाओं के सम्बन्ध में कह रहा था। मान लीजिये कोई नियुक्ति हरिजन की अथवा पिछड़े वर्ग की संयोग से हो गयी, जिले के विद्यालय निरीक्षक के यहां से एप्रूवल भी हो जाता है तब भी उसे जगह नहीं दी जाती। फैजाबाद में इसका उदाहरण है।

मैं आपका ध्यान प्राइमरी पाठशालाओं की ओर ले जाना चाहता हूं जहां बच्चों की शिक्षा में विशेष सुधार होता है। होता वहां क्या है ? प्राइमरी स्कूलों में अध्यापक उसी गांव का होता है अथवा इर्द गिर्द का होता है और उसका काम है स्कूल में 11 बजे पहुंचना और 3 बजे तक पढ़ाना। लेकिन बजाय पढ़ाई के वह उस एरिया की राजनीति में दिलचस्पी लेता है, दंगे व लड़ाई में पार्ट लेता है। सरकार उनको हर तरह की सुख सुविधा देती है पर उसका वह दुरुपयोग करता है। मेरा निवेदन है कि कम से कम प्राइमरी स्कूलों के शिक्षक को उसके घर से उसे 20 मील की दूरी पर नियुक्त किया जाय।

मेरा यह भी निवेदन है कि महिलाओं की शिक्षा में बढ़ोत्तरी की जाय लेकिन होता यह है कि जितने बालिका विद्यालय हैं शहर में उनमें 10 लड़कियां हैं तो अध्यापिकायें 8, 10 अथवा 14 हैं। एक-एक कक्षा के लिये 5, 5 अध्यापिकायें हैं। वे सब शहर की रहने वाली हैं। मेरा अनुरोध है अगर वाकई महिला शिक्षा में बढ़ोत्तरी करना है, उनका उत्थान करना है तो इस प्रथा को खत्म किया जाय और तत्काल ऐसे विद्यालयों में अध्यापिकाओं को भेजा जाय जहां देहात की बलिकायें शिक्षा प्राप्त कर सकें। शहर के विद्यालय दिनों दिन वृद्धि कर रहे है, प्रगति कर रहे हैं लेकिन देहात के विद्यालय आज भी पेड़ के नीचे लगते हैं और जरा सी जहां मौसम की गड़बड़ी हुई वहां एक मिनट भी अध्यापिका और विद्यार्थी नहीं रुक सकता। इसलिये मेरा आखिरी अनुरोध है कि शिक्षा का तत्काल राष्ट्रीयकरण किया जाय, तत्काल सुधार किया जाय। धन्यवाद।

*श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)---

मान्यवर, मैं बड़ी देर से सत्ता दल के कुछ सदस्यों के भाषण सुन रहा हूं यह कहते हुए कि बड़ी प्रगति हो रही है शिक्षा में। मेरा कहना है कि चाहे विद्यालयों की संख्या कितनी ही बढ़ जाय, छात्रों की संख्या चाहे कितनी ही बढ़ जाय लेकिन अगर साक्षरता नहीं बढ़ती है, तो वह शिक्षा प्रणाली गलत है। उत्तर प्रदेश के लिये सबसे बड़ी कलंक की बात यह है कि पूरे देश में वह 18 वें नम्बर पर है। शिक्षा का जो बजट है और उसमें जो आंकड़े आपने दिये हैं अगर पूरे देश का सर्वे कराया जाय तो आप देखेंगे कि 20, 21 राज्य जो हैं उनमें उत्तर प्रदेश का स्थान किस नम्बर पर है ?

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मान्यवर, जहां केरल में साक्षरता 60.42 फीसदी है, महाराष्ट्र में 39.18 फीसदी है, गुजरात में 35.89 फीसदी है वहां उत्तर प्रदेश में 21.81 है। पिछड़े हुये और जो राज्य हैं राजस्थान, बिहार, जम्मू आदि हैं उनसे उत्तर प्रदेश का प्रतिशत कुछ ज्यादा अवश्य है। मैं इस बात को कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री इस बात की डींग न मारें कि उत्तर प्रदेश में शिक्षा की तरक्की हो रही है। आपके भी आंकड़े साबित करते हैं जो कि आपने सांख्यिकीय डायरी में दिये है, कि उत्तर प्रदेश का नम्बर अन्य राज्यों की तुलना में 18 वें नम्बर पर है। इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि आप शिक्षा नीति को बदलें। शिक्षा नीति को बदलने के लिये आपको सबसे पहले यह करना होगा कि दो तरह के स्कूल आपको नहीं चलाने होंगे।

आप पब्लिक स्कूलों को चलाते हैं। पब्लिक का मायने जनता के स्कूल से होता है एक तरफ तो मुफ्त में पढ़ाई होगी, बच्चे अपनी टाट-पट्टी लेकर स्कूल जायं और दूसरी तरफ वे स्कूल हैं जहां कि इंदिरा का राहुल पढ़ता है। मैं समझता हूं कि यदि उत्तर प्रदेश के मंत्रियों के लड़के भी टाट-पट्टी लेकर उन स्कूलों में जायं तो मैं निःसंदेह कह सकता हूं कि उत्तर प्रदेश में शिक्षा की काफी तरक्की हो जाय। मान्यवर, समय कम है, बहुत सी बातें कहनी हैं। पूरी शिक्षा नीति दोषपूर्ण होने के कारण सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में अशांति का वातावरण है। बेकारी की यहां पर समस्या बनी हुई है। यहां पर केवल किताबी शिक्षा ही है और बेकारी की समस्या को बढ़ाने वाली है। आपकी यह नीति है कि अधिक से अधिक बच्चों को फेल करो ताकि वह बेकारी के रजिस्टर में अपना नाम लिखा सकें और आप यह दिखा सकें कि यहां पर कोई बेकार नहीं है, और शिक्षा तरक्की कर रही है। इसलिये आप अधिक से अधिक बच्चों को फेल करते हैं। आपकी गलत नीति का ही यह परिणाम है और जानबूझ कर आप यह करते हैं। यही नहीं, उत्तर प्रदेश के अन्दर सारे स्कूल जुलाई में खुल जाते हैं किन्तु सरकार के पास कापी किताबें नहीं रहती हैं। जिसके फलस्वरूप एक-एक महीने तक स्कूलों को बन्द कर देना पड़ता है। कांग्रेस पार्टी के अन्दर भी कई लोग ऐसे हैं जो इस बात को जानते हैं और कहते हैं कि यहां के शिक्षा मंत्री इतने निकम्मे है कि उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिये जो कि जुलाई में कापी किताबों का इन्तजाम नहीं कर पाते हैं। विधान सभा में इसके बारे में प्रश्न उठाये गये तो कहा गया कि कापी किताबें जा रही हैं। बड़े लड़के को दो कापी और छोटे लड़के को एक कापी। यह है आपकी शिक्षा नीति।

कितना भ्रष्टाचार है, इसके बारे में मैं आपको आजमगढ़ के मऊनाथ भंजन के एक डी0 ए0 वी0 इन्टर कालेज की मिसाल देता हूं। वहां पर एक क्लर्क को प्रिंसिपल बनाया जाता है। उसके पहले जो प्रिंसिपल थे उनको मान्यता नहीं दी गई। आपके शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर ने दरख्वास्त को रिजेक्ट कर दिया। मऊ में एक शिविर लगा था, बहुत से लोग वहां गये थे, उत्तर प्रदेश के मंत्रीगण भी गये थे, चन्द्रजीत यादव भी गये थे, उस क्लर्क को प्रिंसिपल बनाने के समर्थन वाले लोग वहां गये थे। उन लोगों ने शिविर के लोगों को भोजन बना कर खिलाया, एक लाख रुपये का पाखाना बनाया और खुश होकर डाइरेक्टर ने एक प्रिंसिपल को प्रिंसिपल नहीं बनाया बल्कि एक क्लर्क को प्रिंसिपल बनाया। मैं पूंछना चाहता हूं कि इस स्थिति में देश कहां जायेगा। भैंस के आगे बीन बजाये, भैंस खड़ी पगुराय। आप कुछ कर ही नहीं सकते। मैं यह नहीं कहता हूं कि कांग्रेस के सभी लोग ऐसे हैं, कुछ लोग ऐसे हैं। कई बार यहां पर इस सम्बन्ध में चर्चा हुई। माननीय मंत्री जी इस समय यहां पर नहीं हैं, लेकिन जो भी मंत्री हों वे उन्हें बता दें कि विधान सभा के सामने गैर सरकारी प्राइमरी पाठशाला के अध्यापकों ने 17 दिसम्बर, 74 को अनशन किया। 18 दिसम्बर को सरकार ने आदेश निकाला कि जुलाई, 74 से उनके नये वेतन मान लागू कर दिये जायेंगे। माननीय मंत्री जी ने 25 मार्च, 75 को एक दूसरा आदेश निकाल दिया। यह नवीन वेतन क्रम जुलाई, 75 से लागू होगा। इसके साथ-साथ सरकार ने अन्दर ही अन्दर एक नियम निकाला है उसमें लिखा हुआ है कि 1 से 5 तक की कक्षाओं में पढ़ने वाले लड़कों को अगले साल 15 रुपया फीस

[श्री राम अधार]

देनी पड़ेगी। यह मान्यवर, आपके शिक्षा विभाग में जो ब्रजेश कुमार है उनका लिखा हुआ है। इसी तरह से विश्वविद्यालयों की भी फीस बढ़ेगी। एक तरफ इस सदन में मंत्री जी ने कहा, विधान परिषद् में भी कहा कि कक्षा 10 तक शिक्षा जो होगी वह फ्री होगी और दूसरी तरफ आप इस तरह के आदेश निकालते हैं। तो इस तरह की शिक्षा नीति बिल्कुल गलत है इससे इस देश और प्रदेश का विकास नहीं हो सकता है।

शिक्षा के बारे में मैं अपने क्षेत्र की बात कहता हूं जितने स्कूल घाघरा के किनारे हैं उनमें लड़कों के बैठने की जगह नहीं है, वहां पर मास्टरों की कोई वकत नहीं है। वहां पर जो अध्यापक है उनका ट्रांसफर नहीं होता है जो अपने घर से 100, 100 मील दूर हैं, बड़े-बड़े अफसरों का तो ट्रान्सफर हो जाता है लेकिन उनका नहीं होता है। अधिकारी उनसे घूस लेते हैं।

आज अनुदानों के अन्दर घोटाले हैं जब तक घूस नहीं दी जाती है तब तक मान्यता नहीं मिलती है जिसने घूस दे दी उसे मान्यता मिल गई तो शिक्षा पद्धति के अन्दर यह सबसे बड़ी कमजोरी है।

उर्दू के बारे में 1974 में चुनाव के समय में आपने प्राइमरी स्कूलों में उर्दू टीचर्स भर्ती करने की बात कह दी और उससे मुसलमानों का वोट ले लिया। लेकिन आप बतायें कि कितने आज उर्दू पढ़ने वाले हैं जिन्होंने दाखिला लिया है। वह क्यों इसे लेंगे क्योंकि उससे उनको नौकरी तो मिलेगी नहीं। हमारे सिंचाई मंत्री जी है वह हिन्दी पढ़ नहीं पाते हैं दूसरे मंत्री हैं जो लिख नहीं पाते हैं। मैं उर्दू के विरोध में नहीं हूं मैं चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश के अन्दर एक फैसला सरकार कर लें और उसके स्थान पर उर्दू को अनिवार्य कर दिया जाय। 8 वीं कक्षा तक उर्दू अनिवार्य कर दी जाय और नौकरी के लिये जो इंटरव्यू हों उसमें एक सवाल उर्दू का भी कंपलसरी हो। तो इससे प्रदेश में 8वीं कक्षा तक सभी लोग उसे पढ़ने लगेंगे। लेकिन आप तो वोट लेने के लिए मास्टरों की भर्ती करते हैं लेकिन वहां पर लड़के नदारत हैं। आप चाहते हैं कि प्रदेश में शिक्षा नीति न बदले, आप चाहते नहीं कि प्रदेश की शिक्षा नीति में तरक्की हो। सरकार बड़ी चतुर है वह जानती है कि अगर लोग पढ़े-लिखे हो जायेंगे तो उनको वोट नहीं मिलेगा और उनको वोट लेने की परम्परा टूट जायगी।

आखिर में एक बात और कहना चाहता हूं कि हमारे एक माननीय सदस्य ने कहा कि विधान सभा में दो सौ रुपया पर मिनट खर्च होता है। हम यहां पर 4 दिन से बोल रहे हैं उसका असर सरकार पर कोई नहीं होगा। यह नहीं जानते हैं कि अगर प्रदेश में लोग शिक्षित हो जायेंगे तो उनको टिकने नहीं देंगे। वह तो निरक्षरता के बल पर टिके हुए हैं उसका वह फायदा उठा रहे हैं। तो इन शब्दों के साथ मैं कहूंगा कि जो सुझाव हमने दिए हैं सरकार उनको मानेगी। अन्त में मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अध्यक्ष---

आपको एक सुझाव दूंगा, आपने कार्य सूची देखी होगी आज शुरू से आखिर तक शिक्षा पर ही चर्चा हो रही है। जो 30 हजार शिक्षकों के आन्दोलन की बात है वह भी शिक्षा के अन्तर्गत ही है और इसी तरह से बेसिक शिक्षाधिकारी, जौनपुर की बात है वह भी इसी के अन्दर आ जाती है तो इसलिए आप इन बातों को ध्यान में रखें।

*श्री गोविन्द प्रसाद गैरोला (जिला टिहरी गढ़वाल)---

शिक्षा के विषय में जो बजट यहां पर पेश किया गया है उसका समर्थन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। मान्यवर, इस पर चर्चा करते हुए दो बातों का ध्यान रखना चाहिए

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

एक तो क्वांटिटी का और दूसरा क्वालिटी का। जहां तक क्वांटिटी का प्रश्न है उसके बारे में मैं कहूंगा कि इस दिशा में सरकार ने काफी प्रगति की है।

मान्यवर, एक निगाह में हम देखें तो 1944-45 में एक वर्ष का हमारा शिक्षा बजट केवल 2 करोड़ 57 लाख का था जबकि यह 1974-75 में बढ़कर 1 अरब 74 करोड़ 58 लाख के करीब हो गया है यानी 87 गुना बजट शिक्षा के लिए बढ़ाया गया है। इसी तरह से आप स्कूलों की संख्या में देखें। 1944-45 में जहां 1,690 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय थे वहां 1973-74 में उनकी संख्या बढ़कर 9,776 हो गई है। ये मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थायें हैं। इसमें से 6,698 गांव में हैं। पहले 1,690 शिक्षा संस्थाओं में 798 ग्रामीण अंचलों में थीं और अब 9 हजार में करीब 7 हजार ग्रामीण क्षेत्र में हैं। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण इलाके की ओर भी हमारा ध्यान गया है, जो सरकार की नीति थी कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार हो। सरकार ने गांवों की तरफ सोचने की अवश्य कोशिश की है। यह अवश्य है कि शिक्षा की जो समस्यायें हैं, वे किसी भी बुद्धि-जीवी से छिपी नहीं हैं। किन्तु साथ ही हमें यह भी ध्यान में रखना है कि आज और जब हम लोग पढ़ते थे, इन दोनों समय में काफी अन्तर हो गया है। किन्तु हम इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं, शिक्षा पर जब हम सदन में चर्चा करते हैं तो एकतरफा चले जाते हैं। विपक्षी लोग निष्पक्षता के साथ इसका अध्ययन नहीं करते हैं। निष्पक्षता के साथ और बारीकी के साथ इसको देखें तो इसका उपचार किया जा सकता है। यदि सरकार चाहे तो एक-एक मंडल में एक-एक विश्वविद्यालय हो। हर जिले में एक कमेटी बना दे, जिसमें अधिकारी पब्लिक के लोग और शिक्षा शास्त्री रहें तथा प्रान्त के स्तर पर सेकेंडरी एजूकेशन के लिए भी आप एक कमेटी बना दें। इस प्रकार से शिक्षा का विकेन्द्रीकरण कर दिया जाय और शिक्षा में लोगों को जुटा दिया जाय। विद्वान लोगों को और रिटायर लोगों को इसमें लगा दिया जाय। इस तरह से हम शिक्षा को एक नयी दिशा दे सकते हैं।

मेरा यह भी विचार है कि शिक्षा को हम लोगों को राजनीति से मुक्त करना ही होगा। यह सरकार का दायित्व है, उसका कर्त्तव्य है कि वह राजनीतिज्ञों को शिक्षा संस्थाओं में घुसने न दें। राजनीतिज्ञों को शिक्षा संस्थाओं में जाने न दिया जाय, इसके लिए कड़ा प्रबन्ध हो। चाहे हमारी तरफ के हों या उधर के लोग हों, सबके लिए यह होना चाहिए कि पोलिटीशियन मस्ट नाट बि एन्टर्ड इन दि एजूकेशन इंस्टीट्यूशन्स। मैं सोच रहा था कि जब हम शिक्षा के विषय में इतनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं तो यह नहीं समझते हैं कि इस देश में 70 हजार बच्चे प्रति दिन जन्म लेते हैं। यदि इनमें से 10,000 मर भी जायें, तो शेष बचे 60,000 बच्चों के लिए एक दिन में 1,500 बेसिक पाठशालायें चाहिये, यदि प्रति विद्यालय 40 विद्यार्थी रखे जायें। दो टीचर्स प्रति विद्यालय के हिसाब से एक विद्यालय के लिए 600 रुपया टीचरों को तनखवाह के लिये चाहिए। इस तरह से एक दिन में 18 लाख रुपये वेतन की जरूरत होगी, अर्थात् एक माह में 5 करोड़, 40 लाख और एक वर्ष में 64 करोड़ 60 लाख रुपए की आवश्यकता होगी। अतः यदि हम अपने पूरे बच्चों को शिक्षा देना चाहते हैं तो एक वर्ष में हमें इतने धन की व्यवस्था करनी चाहिये। इस व्यय को वहन करने के लिए हमारे विरोधी भाइयों को भी तैयार रहना चाहिए। बिना साधन जुटाए हम शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति कैसे कर सकते हैं।

अब हमारे जिले की अपनी कुछ समस्यायें हैं, जिन्हें कहना चाहता हूं, हमारे यहां के विद्यार्थियों को कोई अनुदान नहीं दिया गया है। इसके अलावा हमारे निर्वाचन क्षेत्र में 4 ब्लाक्स हैं, इनमें से दो ब्लाकों में कोई इंटरमीडिएट कालेज नहीं है और दो में कोई साइन्स का कालेज नहीं है। मेरे जिले में, जिसकी जनसंख्या 4 लाख से अधिक है, उसमें केवल एक कन्या हाई स्कूल है, इसके अलावा न अन्य कोई प्राइवेट हाई स्कूल है और न इन्टर कालेज है। इसके अलावा वहां इस समय 14 हायर सेकेंड्री स्कूल हैं। जो 1950 से हैं। लेकिन एक का भी भवन नहीं बनाया गया है। पर्वतीय जिलों में टिहरी-गढ़वाल जिले में सबसे कम प्रतिशत है।

[श्री गोविन्द प्रसाद गैरोला]

मान्यवर, दूसरे कई विकास की बातों में उसी प्रकार मेरा जिला अन्य पर्वतीय जिलों से बहुत पीछे है। जब भी शिक्षा का बजट प्रस्तुत करते हैं, बजट का ब्रेक अप करते हैं, तब टेहरी गढ़वाल को सबसे पीछे रखते हैं। इससे असन्तुलन बढ़ता रहता है। जो लोग पीछे हैं, और पीछे चले जाते हैं, जो लोग आगे हैं और आगे बढ़ते चले जाते हैं। मुझे खुशी होगी अगर हमारे मन्त्री जी इस वर्ष यह कोशिश करेंगे कि जो लोग पिछड़े हैं उनको आगे बढ़ाया जाय और जो लोग आगे हैं उनको समान स्तर पर लाने की कोशिश करें।

श्री अध्यक्ष---

समाप्त करें।

श्री गोविन्द प्रसाद गैरोला---

एक छोटी-सी बात कहना चाहता था। चमोली में तपोवन में एक अध्यापक ने प्रोमोशन के लिए 276 ऐप्लीकेशन्स दी हैं लेकिन उनका सरकार के विभाग ने कोई जवाब नहीं दिया। पर्वतीय क्षेत्र के अध्यापकों की समस्याओं की ओर ध्यान दें और रिप्रेजेंटेशन्स को ठीक करने की कृपा करें। ताकि वहां शिक्षा का विकास हो सके। इन शब्दों के साथ मैं इस बजट का समर्थन करता हूं।

*श्री श्रीनारायण (जिला देवरिया)---

(माननीय सदस्य भोजपुरी में बोले की आवाजें) माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ओमप्रकाश जी के शिक्षा पर कटौती के प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। यह सरकार शिक्षा के सम्बन्ध में जितना उसका दुर्लक्ष्य करती है, शिक्षा पर एकदम ध्यान नहीं देती है। अब तक 26-27 वर्ष हो गये लेकिन शिक्षा की तरफ सरकार का ध्यान एकदम नहीं गया। प्रजातन्त्र में कैसी शिक्षा होनी चाहिए, इसपर अभी सरकार नहीं सोचती है। उस पक्ष और इस पक्ष के लोग भी इस मत के हैं लेकिन वही बात वे शिक्षा के प्रस्ताव के समर्थन में कहते हैं और हम कटौती के समर्थन में कहते हैं। आज तक सरकार ने कोई नियम नहीं बनाया है कि यह देश में व प्रदेश में कौन किस्म की शिक्षा दी जाय। इंग्लैन्ड में सबसे पहले, चर्चिल जिसके लिए कहा जाता है कि लड़ाई का बड़ा जानकार था, उसके समय में सबसे पहले शिक्षा का बजट पेश हुआ। शिक्षा के प्रस्ताव पर सबसे पहले बोलते हुए उन्होंने कहा--वी मस्ट एजूकेट आवर मासेज।

श्री अध्यक्ष---

आपको अंग्रेजी आती है क्या? मैं यही समझता था कि आप अंग्रेजी नहीं जानते हैं।

एक सदस्य---

माननीय सदस्य पोस्ट ग्रेजुएट हैं।

श्री अध्यक्ष---

तब तो आप से प्रार्थना है कि शुद्ध हिन्दी में बोलें। जो हमारे प्रतिवेदक हैं उनको लिखने में कठिनाई होती है।

श्री बांकेलाल (जिला देवरिया)---

यह अबल एम०ए० हैं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री श्रीनारायण---

जो लोग अपनी बोली में बोलते हैं वह अपने मन की भावनायें ठीक ढंग से रख सकत हैं। जो पिछड़ा क्षेत्र है, देवरिया जिला पूर्वी जिलों का इतना पिछड़ा है...

श्री अध्यक्ष---

वही बतिया बोली जो और लोग समझें।

श्री श्रीनारायण---

दस मील चौड़ी और तीस मील लम्बी पट्टी में, जो बाढ़ का क्षेत्र है।

श्री अध्यक्ष---

ऐसी भाषा बोलें जो सदन के सभी सदस्य समझ सकें।

श्री श्रीनारायण---

तीस मील लम्बे क्षेत्र में एक प्राइमरी पाठशाला है जहां पर अगर पढ़े लिखे लोग चले जाते हैं तो वहां पर लड़के भाग कर चले जाते हैं, कि पकड़ लेंगे। वह लोग इतने पिछड़े हैं। लेकिन सरकार ने अभी तक कोई इन्तजाम नहीं किया, घोर उपेक्षा किया है। यह सरकार की दुर्व्यवस्था है। वह क्षेत्र नेपाल की सीमा पर लगा है। वहां पर जो गंडक नदी है उस पर एक भी पुल नहीं है। लोग बड़ी सांसत में हैं।

हमारी सरकार ने माध्यमिक शिक्षा की उपेक्षा कर दी। संस्कृत की उपेक्षा कर दी। संस्कृत हमारे देश को एक कड़ी में जोड़ सकती थी उसकी उपेक्षा कर दी गयी। जहां हिन्दी अंग्रेजी का विरोध चलता था वहां संस्कृत से फैसला करा लेंते थे। उसी की उपेक्षा कर दी गई। सरकार की तरफ से आज पूरा ध्यान देने की जरूरत है। जब तक शिक्षा के ऊपर ध्यान नहीं दिया जायगा तब तक हमारे देश को कोई लाभ नहीं मिल पायेगा।

*श्री अजीत सिंह सेठी (जिला मेरठ)---

अध्यक्ष जी, शिक्षा दान, विद्यादान एक महान दान है। शिक्षा ही प्राणी को अन्धकार से निकाल कर पृथ्वी पर प्रकाश करके सुन्दर जीवन व्यतीत करने का मार्ग प्रदर्शित करती है। इस शिक्षा बजट का समर्थन करने के लिए आज मैं यहां पर खड़ा हुआ हूं। इंसान जन्म तो अपनी माता की गोद में लेता है और प्राथमिक शिक्षा देने वाले उसको शिक्षा देते हैं। इंसान बचपन में जो अनेक नक्श देखता है उनका असर उसके मस्तष्क पर पड़ता है और दस साल तक जो शिक्षा वह पा लेता है उसी के आधार पर समाज का निर्माण होता है। यह समाज जो आजादी के ऐलान के साथ शुरू हुआ और अब उसने अपना नया कदम नये समाज की रचना में रखा है। उसको समाजवादी ममाज कहते हैं। इस समाज में मानवता का, समानता का एक अनिवार्य गुण है।

अगर समाज में समानता न रहे, एक रूपता न रहे तो वह समाज खड़ा नहीं रह सकता है। लेकिन हम कानून के द्वारा समानता को लागू कर नहीं पा रहे हैं। लेकिन हम महसूस करते हैं कि अगर कोई चीज इसको लागू कर सकती है तो शिक्षा की वह नस्ल कर सकती है जिसने बचपन में समानता की शिक्षा दी हो। हम बहुत महसूस करते हैं कि आजादी के बाद जो हमें शिक्षा में परिवर्तन करना था और एक नये समाज को खड़ा करना था लेकिन 27 साल गुजर जाने के बाद भी वह उसी तरह से रह गया। यह बड़ी चिन्ताजनक चीज है। आजादी का जो सुन्दर जहाज हमें मिला था उसके ऊपर इसको हमें रखना था।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री अजीत सिंह सेठी]

हमारे सामने अशान्ति का रूप बच्चों में है, नौजवानों में है, वह नहीं होता। हमने जाना और जैसा कि माननीय सदस्य चिन्ता प्रगट कर रहे हैं कि शिक्षा की प्रणाली कैसी हो। कभी टीचर्स की कभी बच्चों की और कभी वाल्दन की चर्चा हो रही है। लेकिन जैसाकि मैंने शुरू में कहा था कि जो शिक्षा दस साल में प्राप्त होती है यदि उसको कन्ट्रोल कर लें तो कोई वजह नहीं है कि सारे देश में स्वर्ग न बन जाय। युग बदला है, माया का प्रसार हुआ है, गृहस्थ जीवन में तब्दीली हुई है, मियां बीबी कमाई की तरफ जाते हैं। पहले यह नहीं था इंसान कमाता था और बीबी गृहस्थी चलाती थी तो जब दोनों गृहस्थी जीवन इस तरह से व्यतीत करने लगें, उन्होंने अपने बच्चों की देख-रेख या अपने बच्चों की तालीम की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, जो माया के आधार पर तालीम होगी उसके अन्दर हमेशा बराबरी का, ऊंचे-नीचे का भेदभाव पैदा हो जाता है। हमें उस नुक्ते से खासतौर से देखना है कि वह चीज न पैदा हो। ज्यादातर माननीय सदस्यों ने राष्ट्रीयकरण पर जोर दिया, लेकिन राष्ट्रीयकरण करने से लाभ नहीं होगा इसको छोड़ने से भी हल नहीं होने वाला है। इसका एक ही आधार है कि 10 साल, 4 साल के बच्चों को अनिवार्य कन्ट्रोल में लें और एक बालक-घर खोलें, उसमें उनका पालन-पोषण भी करें और शिक्षा भी दें। उसमें जो पढ़ाई होगी, वह अच्छी पढ़ाई होगी। जो बालक उसमें से पढ़कर निकलेंगे वे अच्छे बालक बनेंगे। उसमें भी अगर दो प्रणाली बनेगी तब भी उन्नति में बाधक होगी। हमें वाकई इसे स्टेट कन्ट्रोल में लेना है। यह प्रणाली जहां पर लगेगी, उससे शिक्षा में मजबूती रहेगी।

श्री अध्यक्ष---

आपके दल के 4-5 बाकी हैं अगर इसी में सब बोलना चाहते हैं तो 10 मिनट में सब लोग बोल लें, नहीं तो 2-2 मिनट बोल लें।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक---

मान्यवर, 4---4 मिनट दे दीजिये।

श्री अध्यक्ष---

4---4 मिनट बोल लें।

श्री बांके लाल---

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बड़ी कृपा की जो हमको बोलने की इजाजत दी। यह जो शिक्षा का अनुदान पेश हुआ है, इसका विरोध करने के लिए मैं निश्चित रूप से खड़ा हुआ हूं। शिक्षा की जो नीति है उसमें बहुत ही दोष है क्योंकि शिक्षा में दो तरह की शिक्षा हो रही है। कहने को तो हमारे सभी मंत्रिगण और बहुगुणा जी भी कहते हैं कि मैं समाजवादी हूं और वजीरेआजम भी कहती हैं कि मैं समाजवादी हूं, लेकिन शिक्षा प्रणाली में जो दो तरह की शिक्षा है वह अच्छी नहीं है। एक तो बड़े धनवान लोगों के लिए ला-मार्टीनियर स्कूल, सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल हैं और उसमें खर्च भी बहुत ज्यादा है, जिस में साधारण गरीब वर्ग के बच्चे नहीं पढ़ सकते हैं और दूसरी तरफ आप देखें कि हमारे बच्चे को टाट-पट्टी भी बैठने को नहीं मिलती है। कलम-दावात की भी कोई इमदाद सरकार नहीं देते है। धूप में बैठकर, साया के नीचे बैठ कर बच्चे पढ़ते हैं। रुपया तो मन्त्री जी ने बहुत ज्यादा मांगा है शिक्षा पर खर्च करने के लिए लेकिन जो प्राइमरी एजूकेशन है, प्राइमरी स्कूल हैं, हायर सेकेंडरी स्कूल हैं, उनकी दशा क्या है? इस पर मन्त्री जी ने शायद कभी गौर नहीं किया। 28 वर्ष के शासनकाल में सरकार ने किया कि हमारे बच्चे पेड़ के नीचे पढ़ रहे हैं, उनको किसी प्रकार की इमदाद नहीं दी जा रही है। तो जो दो तरह की शिक्षा प्रणाली है, इसको समाप्त किया जाय। अगर आप समाजवादी हैं तो एक तरह की

शिक्षा प्रणाली को अपनावें। छोटे-छोटे जो बच्चे है उन पर इतना शिक्षा का बोझ लाद दिया गया है कि वे उससे दबे जा रहे हैं। उनके ऊपर विषयों का इतना बोझ लाद दिया गया है कि वह उनको पढ़ नहीं पाता है। मेरा निवेदन है कि आप विषयों को कम करें।

सरकार ने उर्दू की भी पढ़ाई शुरू कर दी है। प्राइमरी स्कूलों से शुरू करना चाहिये और इसको यूनिवर्सिटी तक पढ़ाया जाना चाहिए, लेकिन मैंने देखा कि मिडिल स्कूल तक ही उर्दू की शिक्षा दी जाती है और मिडिल तक ही उर्दू शिक्षक रखे जा रहे हैं और नहीं रखे जा रहे हैं। आप शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करें। जितने स्कूल खुल चुके हैं उनको सुदृढ़ बनाया जाय ताकि बच्चे इतमीनान से पढ़ सकें। दो तरह की शिक्षा को मिटा कर एक तरह की शिक्षा करें। इन शब्दों के साथ मैं जो कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है उसका समर्थन करता हूं और जो माननीय मन्त्री जी ने अनुदान पेश की है उसका सख्त विरोध करता हूं।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक––

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मान्यवर, शिक्षा बोझ परक न होकर बोध परक होनी चाहिए। जिस शिक्षा से जागृति आये और जो शिक्षा स्वावलम्बी बनाये वही शिक्षा, शिक्षा होती है।

महर्षि चरक ने कहा है कि––

यथा खरश्चन्दन भारवाही भारस्यवेत्ता न तु चन्दनस्य।
तथैव शास्त्राणि बहून्यधीत्य चार्थेषु मूढ़ा खरवद् वहन्ति।।

मान्यवर, आज भी जो उच्च शिक्षा के लोग हैं वह राजा राम मोहन राय को नहीं जानते हैं, वह बाल गंगाधर तिलक को नहीं जानते हैं लेकिन वे चार्ली चैपलिन और जानवाकर के विषय में अवश्य जानते हैं, सायराबानू और जया भादुड़ी के बारे में जानते हैं।

मैं मान्यवर, कहता हूं कि शिक्षा का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। यदि राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ तो देश पतन के गर्त में चला जायगा।

मान्यवर, दक्षिणी भारत की पद्धति को उत्तर भारत में भी अपनाना चाहिए। हमारे माननीय शिक्षा मन्त्री जी नवयुवक हैं हमें आशा है कि वह कुछ करेंगे। दक्षिण भारत में स्नातकोत्तर कक्षाओं तक शिक्षा मुफ्त कर दी गयी है। आप देखें कि उधर के ही लोग अधिकतर कम्पटीशन्स में आते हैं। केरल की मुख्य पैदावार नारियल है। वहां आर्थिक विपन्नता होने के साथ ही साथ वहां के लोग सबसे अधिक शिक्षित हैं। ऐसी शिक्षा होनी चाहिए जिससे विवेक उत्पन्न हो, लेकिन शिक्षा ऐसी है जिससे विवेक का पतन हो रहा है। आज शिक्षा जहरीली हो रही है। तमाम जांच रिपोर्ट्स में आया है कि आज के छात्र और छात्राओं में शराबखोरी की लत पड़ रही है। यह सब हमारी शिक्षा की देन है। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)––

मान्यवर, मैं शिक्षा के मद में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए, शिक्षा मन्त्री जी से चन्द बातें कहना चाहता हूं। शिक्षा एक बड़ी पवित्र संस्था थी जिसे मनुष्यता को विकसित करना होता था। किसी भी देश और समाज के लिए रीढ़ की हड्डी की तरह से है। यदि देश में शिक्षा की प्रगति न हो तो नर और नारी व्यर्थ हो जाते हैं। कोई प्रगति नहीं कर सकते हैं। इसी के ही जरिए उन्हें अच्छाई और बुराई की जानकारी होती

[श्री अब्दुल रऊफ लारी]

है। आज हमें शर्म लगती है कि इतनी पवित्र संस्था होने पर भी इसमें भ्रष्टाचार अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया है और उसका एक मात्र कारण यह है कि इसको भी सरकार द्वारा राजनीति के अन्दर घसीट लिया गया है। आज सारे काम राजनीति की दृष्टि से होते हैं कि कहां स्कूल बने, कैसे खुलें, कैसे भवन बने, और कैसे उनको अनुदान दिये जायें, कहां कौन अध्यापक रखा जाय। सब में राजनीति घुसी हुई है। जिसका नतीजा यह है कि जो शिक्षा का मूल उद्देश्य था, वह ही खत्म हो गया है। लोग इसको रोजगार बना लिए हैं, भ्रष्टाचार का बोलबाला है।

इसमें सबसे बड़ी खराबी जो आई है वह है प्रारम्भिक शिक्षा में विभिन्नता। गरीब लोगों के जो बच्चे होते हैं वे प्राइमरी स्कूलों में सुबह जाते हैं और शाम को लौटते हैं। जब वे घर लौटते हैं उनके सारे शरीर पर कालिख पुती होती है, उनकी मां उनको खाना देती है और कुछ बच्चे ऐसे लोगों के होते हैं जो घर से खा पीकर सूट और बूट पहन कर जाते हैं और साफ सुथरे घर लौटते हैं। उनके अन्दर जो गरीब के बच्चे हैं, आरम्भ से ही एक हीन भावना पैदा हो जाती है। नतीजा यह होता है कि गरीबी अमीरी की ज्वाला उनके मन में उठती है और वे ऊंचे क्लासेज में जब पहुंचते हैं वह ज्वाला धधकने लगती है और वे कहने लगते हैं कि जिसने हम को बिगाड़ा है, हम उनको बिगाड़ेंगे। आज जो मुल्क की हालत है, वह हमारे और आप सबके सामने है। और इसी का नतीजा है।

एलेक्शन के टाइम पर उर्दू के लिए कितना ढिंढोरा पीटा गया था जिससे मालूम होता था कि उर्दू से बढ़कर इस सरकार को किसी और चीज से प्रेम नहीं रह गया है। माननीया इंदिरा जी ने तो यहां तक कहा था कि यह देश उर्दू के बिना पनप नहीं सकता है। हमारे माननीय मुख्य मन्त्री जी ने भी अपने भाषणों में कहा है कि इसके बिना यह गुलशन आबाद नहीं हो सकता है। जहां पर बोलते भी हैं, वहां पर उर्दू के अल्फाज भी खूब बोलते हैं और अपने यहां पर बोर्ड भी उर्दू में लगवाया है। लेकिन प्रेक्टिकली कितना प्रेम उन्हें उर्दू से है। यह आज तक की हुई उर्दू की प्रगति से पता चलेगा।

मैं अपने यहां की एक मिसाल देता हूं। गोरखपुर आई0एफ0सी0 फर्टिलाइजर कारपोरेशन है। उस इलाके में काफी बच्चे हैं जो उर्दू पढ़ना चाहते हैं। वहां डी0आई0ओ0एस0 ने, और डिप्टी डायरेक्टर ने लिख भी दिया लेकिन आज तक भी वहां पर कोई कार्यवाही नहीं हुई और न शिक्षक रखे गये, न पढ़ाई शुरू हुई है।

मुझे एक बात और यह कहनी है कि शिक्षा विभाग से बच्चों को हरिजन कल्याण विभाग से कुछ वजीफा मिला करता था, कुछ मोमिन अन्सार को वजीफा की व्यवस्था थी, लेकिन इसको भी पिछड़ी जाति के छात्रवृत्ति के साथ जोड़ दिया गया जिसकी वजह से मोमिन अन्सार को कम कर दिया गया है। हरिजनों के बच्चों को जो वजीफा मिलता है, उसको स्कूल वाले और शिक्षा के अधिकारी लोग खा जाते हैं। अनुदान जो यहां से बंट रहा है, बिना इस बात को देखे कि पैसा कहां से आ रहा है, उसका सही इस्तेमाल होना चाहिये लेकिन आंख मूंद कर जो बाबू को आधी रकम दे देता है, उसको मिल जाता है। मैं, माननीय ईश्वरी सिंह जी ने जो कहा है, उसके बारे में माननीय मन्त्री जी से प्रार्थना करता हूं कि अगर उनका उनमें विश्वास है तो उन्हें मेरे साथ गोरखपुर भेज दें, लाखों रुपए के भ्रष्टाचार के मामले उनके सामने रख दूंगा। अगर विश्वास हो उनके मन्त्री जी का उनके ऊपर तो वह चलें और अपनी रिपोर्ट दें। मुझे बड़ी आशा हुई थी कि जब नौजवान मिनिस्टर के पद पर आये थे। मुझे आशा थी कि दौड़-धूप करके वह शिक्षा की बुराइयों को पकड़ेंगे। लेकिन अबके साल का अनुदान जो आपने बांटा है मुझे मालूम हुआ है कि 30–30, 40–40 हजार रुपया लोगों ने बांट लिये

हैं जो महज प्राइमरी स्कूल का नाम लगा दिया है इन्टर हाई स्कूलों में और बच्चा एक नहीं है। आजतक यह था कि हास्पिटल हैं, डाक्टर नहीं हैं। अगर हास्पिटल और डाक्टर हैं तो दवायें नहीं हैं। लेकिन आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि आज स्कूल है, मास्टर हैं, उस पर 4-6 स्टाफ का खर्चा है और छात्र एक नहीं है। बच्चे 20 हैं और 10 मास्टर वहां लगे हुए हैं। जैसे एक खैरात बंट रही है। मैंने पहले भी कहा था कि इस तरह से पैसे का दुरुपयोग करना, जो खून-पसीने की गाढ़ी कमाई का पैसा है तो यह भगवान नहीं बख्शेगा, जनता नहीं बख्शेगी। अब भी चेतकर इसका सही तरीके से इस्तेमाल किया जाय, इस पाप-कर्म से बचा जाय।

*श्री ओमप्रकाश सिंह--

मान्यवर, कल से जो कटौती का प्रस्ताव मैंने पेश किया और माननीय मन्त्री जी ने शिक्षा का अनुदान पेश किया, उस पर जिन सदस्यों ने मेरे कटौती के प्रस्ताव के पक्ष में बोला, अपने विचार प्रकट किये और कटौती का समर्थन किया उनका तो मैं आभारी हूं, धन्यवाद देता ही हूं, लेकिन साथ ही साथ मैं उनको भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने कि मन्त्री जी के प्रस्ताव का केवल प्रथम और अन्तिम शब्दों से समर्थन किया और मेरे कटौती के प्रस्ताव की भावनाओं का समर्थन किया। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं रहा जिसने कि मूल रूप से अपने पूरे भाषण में सरकार की शिक्षा नीतियों की प्रशंसा की हो, सराहना की हो। वैसे उधर का अनुशासन है, सदस्य हैं इसलिए कुछ न कुछ कहना पड़ता है मन्त्री जी के प्रस्ताव के समर्थन में। मैं समझता हूं कि उसी बन्धन के कारण सदस्यों ने कहा है कि प्रशंसा में और समर्थन में जो कुछ कहा उसमें सबसे बड़ी बात यह रही एक मात्र कि सरकार ने इतने स्कूल खोल दिये, इतने विश्वविद्यालय खोल दिये, इतने छात्रों को डिग्रियां बांट दीं, यह स्कालरशिप दे रहे हैं। कल मैंने भी स्वीकार किया था कि सरकार ने यह किया, लेकिन उसका उदाहरण इतना ही देना चाहता हूं कि अगर परिवार में बच्चे पैदा करना ही प्रगति का आधार होता, परिवार की प्रगति का तो परिवार नियोजन की आवश्यकता न पड़ती। आपने स्कूल खोले, कालेज खोले लेकिन शिक्षा के लक्ष्य को कितना प्राप्त किया। परिवार का सम्मान और इज्जत, उसका स्टेटस इससे आंका जाता है कि उसमें पैदा हुआ बच्चा समाज में क्या स्तर प्राप्त कर रहा है। इससे प्रतिष्ठा नहीं आंकी जाती कि बच्चे कितने पैदा हुए, इतना ही कहना चाहता हूं।

समय कल भी उपाध्यक्ष महोदय ने कटौती कर दिया। आज मैं कमिटेड हूं, इसलिए संक्षेप में कहूंगा। कल सारी बातें, बेसिक शिक्षा से लेकर डिग्री कालेज तक की मैंने आलोचना की और सुझाव भी दिये थे। मेरे सुझाव को किसी ने गलत नहीं कहा, इसलिए मैं उन बातों को पुनः नहीं दोहराऊंगा लेकिन जो नई परिस्थितियां हैं उनके बारे में कहूंगा। जो शिक्षा है, आज तक उसकी जो परम्परा रही उसका प्रसार, विश्वास और आस्था के माध्यम से हुआ है। गुरु के प्रति जब तक छात्र का विश्वास नहीं होगा, शासन के प्रति जब तक छात्र और शिक्षा का विश्वास नहीं होगा तब तक शिक्षा का प्रसार नहीं होगा। आज जिस भी रूप में शिक्षा का प्रसार हुआ है और वह आगे बढ़ी है उसमें यह बात रही है कि शासन, शिक्षक और छात्र का आपस में विश्वास रहा है। आज जितनी खलबली, अराजकता और असन्तोष बढ़ा है उसका एक ही कारण है कि छात्र, शिक्षक और शासन का एक दूसरे के प्रति अविश्वास है। छात्र और शिक्षक शासन पर अविश्वास करते हैं और शासन छात्र और शिक्षक पर अविश्वास करता है। कारण यह है कि आज जब छात्र विद्यालय में जाता है तो उसके अभिभावक

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री ओम प्रकाश सिंह]

एक लक्ष्य ले कर भेजते हैं कि शिक्षा प्राप्त कर के वह जीवन को उपयोगी बनायेगा लेकिन आज जो बेसिक शिक्षा शुरू होती है उसमें उसे नैतिकता की शिक्षा नहीं मिलती जिससे उस की जड़ें कमजोर हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त इस सरकार ने शिक्षा का जो उद्देश्य कायम किया है उसमें रोजगार को शिक्षा के साथ जोड़ा है इसलिये वह रोजगार के लिए लालायित रहता है।

दूसरा शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान। इसलिए वह ज्ञान के लिए लालायित होता है। परिणाम यह होता है कि वह रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता है और उसका भविष्य उज्जवल होने के बदले अन्धकारमय हो जाता है। वह देखता है कि उसने शिक्षा में जो पैसा और समय लगाया वह सब बर्बाद हुआ। इसके कारण उसमें असन्तोष पैदा होता है। उसका असन्तोष ही उसके अविश्वास का कारण है। एक कहावत है कि अराजकता और असन्तोष वहीं पैदा होता है जहां अविश्वास जन्म लेता है। इसी तरह से शिक्षक में भी असन्तोष है। शिक्षक का उद्देश्य कभी शिक्षार्थी की चिन्ता होती था लेकिन आज आपने उसको आर्थिक समस्याओं से इतना जकड़ दिया है कि वह मजबूर हो गया है अपनी व्यक्तिगत चिन्ता करने के लिए। यही कारण है कि आज शिक्षकों की मनोवृत्ति ट्रेड यूनियन की तरफ हो रही है। यही नहीं, आप शिक्षकों में फूट डालते हैं, राजनीति के साथ जोड़ते हैं। परिणाम यह होता है कि उनमें असन्तोष जन्म लेता है। यह प्रवृत्ति एक दिन में नहीं बनी है। यह प्रवृत्ति 27 वर्षों की दुरनीति के कारण बनी है। शिक्षा का कोई भी स्तर हो, बेसिक, माध्यमिक या उच्च शिक्षा, सभी जगहों में शासन अपना हस्तक्षेप बनाये हुए है जिसके कारण राजनीतिक स्वार्थ जन्म लेता है। बेसिक शिक्षा को इतनी बुरी स्थिति में डाल दिया। परिषदों और निगमों के हाथ में दे कर कि आज भी जब उनकी मीटिंग हुई तो उन्होंने यह मांग की कि शिक्षा हमें दी जाय। उन्होंने चिकित्सा या और विभाग नहीं मांगा।

यही नहीं, शासन किस तरह से विश्वविद्यालयों में राजनीति घुसेड़ रहा है कि एक्जीक्यूटिव में कौन-कौन सदस्य होंगे। यह उनका लक्ष्य होगा कि वाइस चांसलर किस तरह उनके विचारों के अनुरूप काम करें। परिणाम यह होता है कि वाइस चांसलर्स ने जब कांफेंस की तो यह मांग की कि हमें रचनात्मक कार्यों के लिए अधिकार दिये जायं। हम किसी छात्र या अध्यापक को निष्कासित नहीं कर सकते। उसका यह कारण नहीं है कि जानबूझ कर शिक्षा के स्तर को गिराया है बल्कि उसका कारण यह है कि शिक्षक और छात्र मांग कर रहे हैं कि हमें रचनात्मक कार्य दीजिये। यह सरकार देश की युवा शक्ति को राष्ट्र के निर्माण में नहीं लगा सकी है और उसको उसने दमन पूर्वक कुचलने का प्रयास किया है। अगर सरकार छात्रों को तथा शिक्षा सम्बन्धी अन्य समस्याओं पर विचार करे और उनके असन्तोष को दूर करने का प्रयास करे तो शिक्षा जगत में प्रगति हो सकती है। और असन्तोष दूर हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि आज छात्रों को रोजगार की गारन्टी दी जानी चाहिये। उनकी शिक्षा ऐसी होना चाहिये जिसमें उनके श्रम का महत्व समझाया जाय, उनका रुझान उद्योगों की ओर हो और वे शिक्षा प्राप्त करने के बाद कुछ कार्य कर सकें। शिक्षकों को अपनी सुविधायें तथा वेतन दिया जाना चाहिये जिससे कि बेस्ट माइन्ड जो आई०ए०एस० की तरफ जाता है, वह टीचिंग लाइन में आये। राजनीतिक हस्तक्षेप को बिलकुल समाप्त किया जाय। सरकारी हस्तक्षेप वहां तक हो जहां तक उसका सम्बन्ध अनुदान देने से है। जब यह होगा तभी सुधार हो सकता है। अब तक काफी विलम्ब हो चुका है। यह 1975 का वर्ष शिक्षा नीति का वर्ष है, आपको चाहिये कि आप शीघ्र एक विशेष शिक्षा सत्र बुलाये और शिक्षा सम्बन्धी सारी बातों पर विचार करके इसी वर्ष में एक निश्चित लक्ष्य तथा नीति निर्धारित करें वरना अराजकता जन्म लेगी और वह सफल होकर रहेगी। इन शब्दों के साथ मैं अनुरोध करूंगा सदन से कि मेरे कटौती के प्रस्ताव को स्वीकार करे।

श्री अध्यक्ष—

(मंत्री जी से) आप कितना समय लेंगे ?

माध्यमिक शिक्षा मन्त्री (श्री अम्मार रिजवी)—

10-15 मिनट ।

श्री अध्यक्ष —

मैं सदन का समय 15 मिनट के लिए बढ़ाता हूं ।

श्री अम्मार रिजवी—

मैं उन सभी माननीय सदस्यों का आभारी हूं जिन्होंने इस बहस में हिस्सा लिया और अपने सुझाव दिये । वाद-विवाद में बहुत सी चीजें सामने आयीं । अभी तक इस तरह का कोई सुझाव नहीं आया कि शिक्षा का कौन सा रूप होना चाहिये । सभी ने यह तो सुझाव दिया कि मौलिक परिवर्तन होना चाहिये, पर क्या होना चाहिये यह सुझाव नहीं आया ? परिवर्तन हमेशा ही शिक्षा में होता रहेगा, शिक्षा की यही पद्धति रही है । बहुत सी चीजें सामने आयी हैं कि शिक्षा का रूप क्या होना चाहिये ? परीक्षा को किस तरह से लागू किया जाना चाहिये, राष्ट्रीयकरण किस तरह होना चाहिये, आफिसरों के अधिकारों को किस प्रकार से नियंत्रित करना चाहिये, किस तरह से शिक्षा को ऐसा बनाया जाय ताकि पढ़ने के बाद जाब मिल सके, विश्वविद्यालयों में छात्रों को राजनीति दी जानी चाहिये या नहीं मान्यवर, यह तमाम सवाल ऐसे हैं जिन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है । इन सभी पर बहुत से माननीय सदस्यों ने यहां पर अपने विचार प्रकट किये हैं ।

जहां तक राष्ट्रीयकरण का प्रश्न है, दोनों ही पक्षों से उसके लिए मांग की गयी है और यह कहा गया है कि शिक्षा को ऐसे लेविल पर लाया जाय जहां कि शैक्षिक लोगों का शोषण न हो सके । जो छात्र हैं उनकी उसी तरीके से तालीम हो सके और वे लोग स्वतंत्रतापूर्वक शिक्षा दे सकें, शिक्षा के मामले में उनकी किसी प्रकार की रुकावट न हो । इस सिलसिले में एक कमेटी कायम की गई थी लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने फैसले को देखते हुए और संविधान में जो चीजें हैं उनको ध्यान में रखते हुए यह सम्भव नहीं हो सकता था कि शिक्षा का राष्ट्रीयकरण कर सकें । लेकिन साथ ही साथ सरकार का यह बराबर प्रयास रहा है कि मैनेजमेंट पर ऐसी रोक लगाई जाय जिससे वे शिक्षकों का शोषण न कर सकें । कल भी मैंने एक बात कही थी और आपने देखा होगा कि शिक्षकों के सस्पेंशन पर रोक लगा दी है । जिसको जब जी चाहा उसको इस तरह से वे लोग अब सस्पेंड नहीं कर सकेंगे या उनके कैरियर के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकेंगे । उनको समय पर बराबर तनख्वाह नहीं मिलती थी, उसकी जिम्मेदारी शासन ने अपने ऊपर ले ली । सिर्फ इन्टरमीडिएट कालेज के शिक्षकों की ही बात नहीं है, डिग्री कालेज के शिक्षकों के वेतन की जिम्मेदारी भी शासन ने ले ली । आपको मालूम है कि सरकार के सामने वित्तीय कठिनाइयां हैं, लेकिन उन वित्तीय कठिनाइयों को देखते हुए भी शासन ने यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और उनको ग्रेड दिये । ये तमाम चीजें उस तरफ इशारा करती हैं कि शासन की नीयत शिक्षा की तरफ बिलकुल साथ है और शिक्षा को उसके मंजिल तक ले जाना चाहता है जिससे उसका रूप निखर सके ।

पुराने जमाने में जब कि सारे संसार के लोग पशु की जिन्दगी बसर किया करते थे—जैसाकि कहा गया है, जिसके पास शिक्षा नहीं है वह पशु होता है, मान्यवर, यह कन्सेप्ट

[श्री अम्बार रिजवी]

भारतवर्ष में बहुत पुराना है और इसलिए प्राइमरी एजूकेशन पर बराबर जोर दिया गया है कि वह बहुत अच्छी हो। जो बजट आपके सामने प्रस्तुत किया गया है उसमें 53 प्रतिशत प्राइमरी एजूकेशन के लिए रखा गया है। एक एतराज यह किया गया कि सरकार सिर्फ आंकड़े और स्टेटिस्टिक्स दे देती है। बड़ा मुश्किल है, अगर सरकार वास्तविकता को बतलाती है कि इतने स्कूल या कालेज हैं और उनमें इतने बच्चे पढ़ रहे हैं तो कहा जाता है कि सरकार इन चीजों को सामने रखना चाहती है और जब उन चीजों को नहीं रखा जाता है तो कहा जाता है कि सरकार वास्तविकता को छिपाना चाहती है। मान्यवर, मैं आपका ध्यान दिलाऊं कि अभी कुछ लोगों ने कहा कि नये डिग्री कालेज खोले जाने पर रोक हटा लेनी चाहिये और कुछ लोगों की तरफ से आवाज आयी कि जिस तरह से ज्यादा बच्चे होने पर प्लानिंग की जाती है उसी तरह से शिक्षा की मान्यता पर भी प्लानिंग हो। कहा जाता है कि शिक्षा पर अंकुश रखने के लिए या उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए कायदे से रोक लगायी जाय। शिक्षा के लिए हमारी यह नीति रही है कि कितने अशिक्षित लोग हैं उनकी शिक्षा दी जाय, उनके बच्चे पढ़ाये जायं। इसके लिए बाल आहार की योजना का प्रारम्भ किया गया है। जो लोग पढ़ाई के मामले में काम करना चाहते हैं उनकी सहायता का भी प्राविधान है।

शिक्षा के मामले में सब का एक यूनीफार्म होना चाहिये और इसी बात को देख कर हमने स्काउटिंग शुरू की है लेकिन हमारे सामने सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इस सरकार की ओर से सब को यूनिफार्म नहीं दे पा रहे हैं। लेकिन उसके साथ-साथ हम कुछ और चीजें देने जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि नैतिक शिक्षा पर अधिक जोर हो, उस पर अधिक तवज्जह दी जाय। पूरा करिकुलम प्रोवाइड करके इसके अन्दर इस तरह की तमाम चीजें की जा रही हैं और शिक्षा की प्रगति का पूरा ध्यान दिया जा रहा है। यह भी कहा गया कि इधर कोई गोष्ठी नहीं हुई। एकेमेडिशियन्स की कोई बैठक नहीं हुई जिसमें वे सारी चीजों पर बहस होती। मैं बड़े अदब के साथ आपकी सेवा में अर्ज करना चाहता हूं कि बराबर एकेमेडिशियन्स की काफ्रेन्स हुई है। वाइस चांसलर्स की कांफ्रेन्स दिल्ली में हुई थी जिसमें यह सवाल उठा था कि शिक्षा में कौन रिफार्म्स होना चाहिये, ये सब चीजें हुयीं।

(व्यवधान)

श्री पुरूषोत्तम कौशिक---

मान्यवर, आज एक अप्रैल का महा मूर्ख दिवस है। शिक्षा के लिए महा मूर्ख दिवस कौन-सा आपने चुना है? इसके लिये मैं अपनी तरफ से तथा जिला स्तर की अपनी संस्था, जिसका मैं अध्यक्ष हूं, महामूर्ख सम्मेलन, उसकी तरफ से मैं शिक्षा मन्त्री जी को बधाई देता हूं।

श्री अध्यक्ष---

आपको पहली अप्रैल की याद बहुत है।

(सदन में व्यापक हंसी)

श्री अम्मार रिजवी---

मैं धन्यवाद अदा करता हूं कि उनको इस बारे में इतना तजुर्बा है।

मान्यवर, यह कहा गया है कि इक्जामिनेशन यह परीक्षायें जो हो रही हैं उनके सत्र को बदलना चाहिये। यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है। कुछ हमारे साथियों ने कहा कि लड़कों को किताबें ले जाने की इजाजत होनी चाहिये। आब्जेक्टिव एक्जामिनेशन होना

चाहिये। यह एक ऐसा सवाल है जिसके ऊपर बराबर एक्सपेरीमेंट किये जा रहे हैं। परीक्षाओं को किस तरह से लिया जाय जिससे बेईमानी न हो सके और सही निर्णय हो तो इस सम्बन्ध में केवल मैं इतना ही निवेदन करूंगा कि इस सम्बन्ध में क्वेश्चन बैंक बनाया जा रहा है। सेंट्रल वेल्यूयेशन, और स्लेबस में परिवर्तन किया जा रहा है। यह चीजें लायी गयी हैं। कुछ चीजें जैसे होम इक्जामिनेशन में अब 4 एक्जामिनेशन्स लिये जायं तो इस तरह से यह सब लाया जा रहा है जिससे जो वाकई में पढ़ने वाले हैं, जो मेहनत करते हैं, उनको बड़ा फायदा होगा, सही तरीके से वेल्यूयेशन होगा। इस ओर सरकार पूरा ध्यान दे रही है।

माननीय सदस्यों ने इशारा किया और यह बताया गया कि विश्वविद्यालयों में और कालेजों में जो विद्यार्थी हैं उनको राजनीति में हिस्सा लेना चाहिये। एक पक्ष की यह राय थी, मैं यह नहीं कहता। इधर की भी थी और उधर की भी थी। एक चीज में इस पर कहना चाहता हूं कि शिक्षा में सरकारी या गैर सरकारी राय का सवाल नहीं है इसमें सिर्फ नजरियों का इकतलाफ होता है। उन्होंने कहा कि राजनीति में भाग लेना चाहिये लेकिन मैंने कहा कि नहीं। मेरे विचार में सीमित स्तर तक राजनीति में हिस्सा लेने की इजाजत हो सकती है। लेकिन मैं फिर कहता हूं कि छात्रों का सक्रिय राजनीति में भाग लेना किसी प्रकार से ठीक नहीं है।

मान्यवर, मेरा निवेदन है कि उन लोगों से जो विश्वविद्यालयों में या शिक्षा संस्थाओं में, छात्रों में एक फीलिंग पैदा करना चाहते हैं। बजाय इसके कि वह पढ़ें, बजाय इसके कि उनका करेक्टर फारमेशन हो, वह उनको गलत राह पर ले जा रहे हैं। यह उचित नहीं है। वह यह नहीं जानते कि इन्हीं के कन्धों पर आने वाला चैलेंज आयेगा, देश की उन्नति का भार इन्हीं पर है। उनको कुछ लोग ऐसे कार्यों की तरफ ले जाना चाहते हैं, जिससे देश का नुकसान होगा। यह चीज प्रदेश के लिए ही नहीं बल्कि मुल्क के लिए ठीक नहीं है। आने वाली नस्लें जो हैं उनके लिए ठीक नहीं है। यह जो उनको बहकाया जा रहा है उससे देश का भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

श्री राम अधार---

मान्यवर, मैं शिक्षा मन्त्री जी से एक सवाल पूछना चाहता हूं। विधान भवन के सामने गैर सरकारी शिक्षक, जूनियर स्कूलों के अध्यापक 17 दिसम्बर, 74 से अनशन कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में क्या निर्णय लिया गया इसकी जानकारी चाहता हूं। मुझे पता चला है कि 25 मार्च, 1975 को निर्णय लिया गया है कि अग ले वर्ष में कक्षा 1 से 5 तक के छात्रों को 15 रुपए फीस देनी पड़ेगी। तो क्या सरकार ने यह जो शिक्षक हैं इनके बारे में कोई निर्णय लिया है।

श्री अम्मार रिजवी---

मान्यवर, यह सवाल काफी महत्व रखता है। हमारे सामने फीस का सवाल है। यह शासन के विचाराधीन है जिस वक्त निर्णय हो जायगा, सदन को बता दिया जायगा।

श्री अध्यक्ष---

इनको तो पहले से पता चल गया है।

श्री राम अधार---

मान्यवर, मुझे पता लगा है कि निर्णय हो गया है। उनके महामन्त्री ने मुझे लिखित रूप में दिया है।

श्री अम्मार रिजवी---

मान्यवर, कुछ चीजें जो बताई गई थीं प्राइमरी शिक्षा के सम्बन्ध में सम्मानित सदस्य श्री ओम प्रकाश शर्मा जी ने कहा कि कक्षा 8 पास अध्यापक न रख कर अच्छे योग्य अध्यापक रखे जायं ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

आप नाम याद कर लें। इनका नाम ओम प्रकाश सिंह है। ओम प्रकाश शर्मा विधान परिषद् के माननीय सदस्य हैं और माध्यमिक शिक्षा परिषद् गुट के नेता हैं।

श्री अम्मार रिजवी---

अध्यक्ष महोदय, सम्मानित सदस्य ने जो बात कही वह अच्छी है । जो पढ़ाने वाला है उसकी योग्यता ठीक नहीं होगी तो यह अच्छी बात नहीं है । हमको अच्छे टीचर देना चाहिये ।

इसी तरह से, मान्यवर, यह बताया गया कि शिक्षा व्यवसायीकरण और उद्देश्य विहीन है । तो शिक्षा को व्यवसायीकरण बनाने के लिये हम जोर दे रहे हैं । केन्द्र सरकार से इस सम्बन्ध में बराबर बातचीत चल रही है और 10 लाख रुपया इसके लिये रखा है । शीघ्र ही हम एक सेमीनार करने वाले हैं जिसमें सारे भारतवर्ष से लोग बुलाये जायेंगे जिससे उनके परामर्श से एक जाब ओरियेन्टेड स्कीम को हम लागू कर सकें ।

मान्यवर, यह भी कहा गया कि डिग्रियों की वैल्यू खत्म हो गयी है । तो सोचने वाली बात है कि शिक्षा की जो पुरानी पद्धति रही है वह ऐसी रही कि तालीम हासिल करके सरकारी नौकरी करना है । सैकड़ों वर्ष भारतवर्ष में यह बताया गया । यूनिवर्सिटियों में शिक्षा पाने के बाद जो यह सोचते है कि सरकारी नौकरी करना है तो वह उनके लिये डिस्क्रेजिंग बात है ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट जो पढ़ते हैं वह और बहुत से काम करें जैसे खेती और उद्योग करें । शिक्षा के ऊपर और तमाम बातें आयीं - तो उन सब का जवाब मैं नही दे सकता हूं क्योंकि समय थोड़ा है ।

श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी-गढ़वाल)---

मान्यवर, देश के पैमाने की बातें बुनियादी बातें बताकर कमेटी बना दी जाती है । तो मैं एक सूचना चाहता हूं कि पर्वतीय अंचल की जो समस्यायें विचाराधीन है कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह भी किसी कमेटी के सुपुर्द करने वाले हैं ?

श्री अम्मार रिजवी--

जो कमेटी द्वारा मामले तय होने जा रहे हैं उसमें आप भी तो मेम्बर हैं ।

श्री मोहन लाल कपूर---

मान्यवर, कल आन्दोलन हुआ और समाप्त हो गया । आज उस पर क्या हुआ इसको मंत्री जी बता दें ?

श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

मान्यवर, गतवर्ष शिक्षा के सम्बन्ध में भाषण हुआ था और उसमें कहा था कि उर्दू बोलने वालों की सुविधा के लिये सरकारी गजट का उर्दू में प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है । राजकीय मुद्रणालय में प्रबन्ध किया जा रहा है यह वित्त मंत्री ने कहा था । मैं जानना चाहता हूं कि सवा साल हो गया है तो क्या अग्रिम कार्यवाही की गयी है ?

श्री अम्मार रिजवी--

मान्यवर, दो सूचनायें देना है जो कि श्री मोहन लाल कपूर जी ने उठायी है । उन्होंने कहा कि स्पोर्ट्स स्टैडियम जो मेरठ में है उसको न हटाया जाय । तो इस प्रकार का मान्यवर

हमारा कोई ख्याल नहीं है । दूसरी हड़ताल की बात आयी तो दो बजे रात तक जो प्रतिनिधि और नेता थे उनसे बात हुई । बात के बाद जिस नतीजे पर पहुंचे उसका बयान आपके समक्ष रखा था । तो आप लोगों को आपत्ति उस पर हुई कि सदन को गुमराह किया गया है । मैंने निवेदन किया कि जबानी जवाब विधान सभा के बाहर नहीं जा सकता है । इसलिये उनसे कहा कि लिखित रूप से सूचना दें । उन्होंने लिखित रूप से इत्तिला दे दिया है कि उन्होंने हड़ताल वापिस ले लिया है ।

श्री मोहन लाल कपूर---

मान्यवर, क्या मुख्य मंत्री जी ने कुछ लिखकर दिया है ?

श्री अब्दुल बाकी (जिला आजमगढ़)---

मैं बस एक बात यह पूछना चाहता हूं कि जैसा आपने कहा कि राजनीति को यूनीवर्सिटी और कालेजेज में नहीं ले जाना चाहते जहां तक वह तबाही और तोड़फोड़ की बायस बने, फिर भी उत्तर प्रदेश में ऐसे बहुत से यूनीवर्सिटी और कालेजेज हैं जहां पर आर0एस0एस0 की परेड लगती है और मुसलिम मजलिस की मीटिंग होती है, तो क्या इस सिलसिले में आपको जानकारी है और इस बारे में क्या कर रहे हैं ?

श्री राम आधार---

कांग्रेस के फेडरेशन को भी जोड़ लीजिये ।

श्री ओमप्रकाश सिंह---

माननीय मंत्री जी यह भी बतला दें कि जो लोग बंदे मातरम् का विरोध करते है और उनके साथ गला मिलाये हुये हैं, उनका क्या किया जाय ?

मुख्य मंत्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)---

मान्यवर, एक बात यह पूछी गई कि क्या मुख्य मंत्री जी ने भी कुछ लिखकर दिया है, तो इस सम्बन्ध में निवेदन है कि अध्यापक के एक वर्ग के प्रतिनिधियों को जो कल अपने फालोअर्स को हड़ताल से हटाने के सम्बन्ध में आये हम उनकी बात को पूरा नहीं कर पाये थे, उनको सलाह दी और परामर्श दिया कि वह हड़ताल वापिस कर लें । एक छोटा सा फैसला, जिस फैसले को मैं आपसे इस सदन में शेयर कर रहा हूं, वह यह है कि एक छोटी सी हमारे स्तर पर एक एनामली थी कि हम साढ़े चार सौ तक वेतन पाने वाले अध्यापक और अध्यापिकाओं को जो उनके खास अपने बच्चे हैं, उनको जिस स्कूल में वह हैं या थे, तब तक नि:शुल्क शिक्षा देते थे और मान लीजिये जिस स्कूल में अध्यापक और अध्यापिका का कार्य वह कर रहे हैं और उनके बच्चे दूसरे स्कूल में पढ़ रहे हों- समान स्तर के स्कूल जो बोर्ड द्वारा स्वीकृत हैं और मान्यता प्राप्त हैं, तो वहां उस बच्चे को फीस देनी पड़ती है । तो हमने यह फैसला किया और दोनों वर्गों को बता दिया कि हमने यह फैसला किया है कि इस फीस वाली अनामली को हमने रिमूव कर दिया है । उन्होंने एक पत्र लिखा है कि आपकी और सरकार की जो अध्यापकों के प्रति पालिसी है और अध्यापकों के प्रति जो विश्वास है और प्रेम है, उसके प्रति हमारी आस्था है और हम अपनी हड़ताल वापिस करते हैं ।

श्री मोहन लाल कपूर---

पेंशन के बारे में भी कुछ बता दें ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

पेंशन के सम्बन्ध में जो हमने बताया है उसके बाहर न हमने कुछ कहा है और न कहना है ।

श्री अब्दुल बाकी--

मेरे सवाल के बारे में . . .

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

जो बुनियादी सवाल माननीय सदस्य ने उठाया है इस विषय में सरकार की यह निश्चित नीति है कि कोई भी जमात या संस्था धर्म की बीच घृणा का भाव पैदा करे, अलगाव के भाव पैदा करे, उसकी चर्चा विद्यार्थियों के बीच न हो तो बहुत अच्छा होगा । सरकार की यह भी स्पष्ट नीति है कि विद्यार्थियों वर्ग-भेद, वर्ण-भेद या जाति के आधार पर अलगाव करने वाले तत्वों की सरकार प्रबल विरोधी है, लेकिन हम सब जानते हैं, कि कुछ अनावश्यक तत्व ऐसे हैं जो मुसलसल विद्यार्थियों के बीच घुस जाते है और उनकी तरफ हरएक को-हमको और आपको सतर्क रहना चाहिये । खिड़कियों के दरवाजे खुले रहने चाहिये, लेकिन ऐसे तथ्यों के लिये नहीं जो घर को उजाड़ दें, घर बसाने के लिये आवें तो वाजिब है । एक बात मैं और आपसे कहना चाहता हूं कि सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि खेलकूद को कम्पलसरी कर दिया जाय स्काउटिंग को 6 और 8 के बीच में कम्पलसरी कर दिया है चाहे बरदी हो या न हो, लेकिन धीरे-धीरे उस वर्ग के ऊपर भी यह जरूरी है कि उनके खेलकूद के नम्बर जोड़े जायं । यह जरूरी नहीं है कि वह खेल क्रिकेट या हाकी हो, बल्कि खो-खो है, कबड्डी है, कुश्ती है और भी जो भारतीय खेलकूद हैं जिनके लिये बड़े मैदानों की जरूरत नहीं है। कुछ बातों को हमें सोचना पड़ेगा ताकि छोटी जगहों पर भारतीयों ने किस तरह से इसको अपनाया है और इन नम्बरों को जोड़ा जाय और उनका रिजल्ट बनाने में, पोजीशन बांटने में इन नम्बरों को भी काउंट किया जाय । मुझे आशा है कि सदन का सहयोग इसमें मिलेगा ।

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न यह है कि अनुदान संख्या 28--शिक्षा के अन्तर्गत सम्पूर्ण अनुदान के अधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और अस्वीकृत हुआ ।)

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न यह है कि 31 मार्च, 1976 को समाप्त होने वाले वर्ष में अनुदान संख्या 28--शिक्षा के अन्तर्गत होने वाले परिव्ययों को चुकाने के लिये आवश्यक धनराशि की पूर्ति के लिये लेखानुदान द्वारा स्वीकृत धनराशि के अतिरिक्त 1,89,07,02,800 रुपये से अनधिक धनराशि स्वीकृत की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।)

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न यह है कि अनुदान संख्या 87--ऋण और अग्रिम--शिक्षा के अन्तर्गत सम्पूर्ण अनुदान के अधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और अस्वीकृत हुआ ।)

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न यह है कि 31 मार्च, 1976 को समाप्त होने वाले वर्ष में अनुदान संख्या 87--ऋण और अग्रिम--शिक्षा के अन्तर्गत होने वाले परिव्ययों को चुकाने के लिये आवश्यक धनराशि की पूर्ति के लिये लेखानुदान द्वारा स्वीकृत धनराशि के अतिरिक्त 56,83,000 रुपये से अनधिक धनराशि स्वीकृत की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।)

नियम 51 के अन्तर्गत सूचनायें

श्री अध्यक्ष--

नियम 51 के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षकों के आन्दोलन के सम्बन्ध में तो कल वक्तव्य हो चुका है । अब कतिपय सूचनायें आई हैं । एक है अब्दुल रऊफ लारी साहब की है । जायस में कुछ साम्प्रदायिक दंगा हुआ इसके बारे में है । यह पहले स्वीकार हो चुका है ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--

पहले वाले से कोई मतलब नहीं है । इसका साम्प्रदायिकता से कोई ताल्लुक नहीं है। सरकार हमारे मजहबी मामलात में दखल देने लगी है इसके बारे में यह है ।

श्री अध्यक्ष--

जायस के बारे में तो तय हो चुका है ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी--

पूरी रायबरेली में लोग अनशन पर बैठे है...

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

केवल वक्तव्य के लिये यह आ जायगा ।

एक है सर्वश्री मोहम्मद असरार अहमद, पुरुषोत्तम कौशिक तथा शिव प्रसाद का । यह लखनऊ स्थित तिब्बिया कालेज के यूनानी चिकित्सा के छात्रों के साथ वहां के सचिव द्वारा अभद्र व्यवहार किये जाने से छात्रों में क्षोभ के सम्बन्ध में है । इस सम्बन्ध में इससे पहले नियाज हसन साहब का भी आया था जो अनियमित था । उस समय वह स्वीकार नहीं किया गया था । लेकिन यह वक्तव्य के लिये स्वीकार कर लिया जाता है ।

एक है सर्वश्री अब्दुल बाकी, जफर आजमी तथा गोविन्द सिंह नेगी का । यह आजमगढ़ के बारे में बारावफात के अवसर पर साम्प्रदायिक दंगे की दुर्घटना से उत्पन्न संकट के बारे में है पहले एक वक्तव्य के लिये स्वीकार किया जा चुका है उसमें ये नाम जोड़ दिये जायेंगे ।

शेष जो हैं जैसे श्री गोरे लाल शाक्य का । वह उस पर अल्पसूचित प्रश्न कर लें । श्री सत्य प्रकाश जी का बरेली के बारे में है । वह भी अल्पसूचित प्रश्न कर लें ।

श्री सत्य प्रकाश (जिला बरेली)--

17 दिन हो गये हड़ताल हुये । दियासलाई का अभाव बढ़ता जा रहा है । अभी तक उसमें कुछ नहीं किया गया है ।

श्री अध्यक्ष--

अब तक तीन हो गये हैं । आप फिर दे दीजियेगा तो देख लूंगा । शेष अल्पसूचित प्रश्न कर लें ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)--

मान्यवर, लखीमपुर खीरी में अवकाश प्राप्त आई० जी० ने आतंक फैलाया हुआ है। वहां पर सीलिंग कानून से बची भूमि को अवैध रूप से कब्जा किये जाने से संकट उत्पन्न हो गया है । वहां के जिलाधिकारी ने पी०ए०सी० की सहायता चाही किन्तु कोई मदद उन्हें नहीं दी गई...

श्री अध्यक्ष---

आप अल्पसूचित प्रश्न कर लें कि एक ऐसे आदमी के जरिये लखीमपुर खीरी में इस तरह का आतंक है, क्या सरकार को इसकी जानकारी है ? ऐसा प्रश्न कर लें ।

श्री राम प्रकाश यादव (जिला मथुरा)---

मैंने जो दिया है उसके बारे में आपने कहा था कि नियम 51 में स्वीकार कर लेंगे ।

श्री अध्यक्ष---

मथुरा के सादाबाद के थानाध्यक्ष द्वारा अग्रवाल सभा एवं परचून संघ के मंत्री एवं अन्य नागरिकों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में आपने दिया है तो यह अल्पसूचित प्रश्न का विषय है ।

श्री राम प्रकाश यादव---

51 में स्वीकार कर लें ।

श्री अध्यक्ष---

3 स्वीकार कर चुके हैं ।

श्री राम प्रकाश यादव---

वहां पर इससे हिन्दू मुस्लिम रायट्स होने की संभावना है । आपने स्वीकार करने के लिये कहा भी था ।

श्री अध्यक्ष---

मुझे याद नहीं है, मैं देख लूंगा ।

श्री गोरे लाल शाक्य (जिला इटावा)---

ग्राम मझिगवां सदक, थाना पुरवा, ज़िला उन्नाव के हरिजनों ने वहां के सवर्णों द्वारा एक मंदिर पर फाग गाते समय मारे पीटे जाने की दुर्घटना हुई है . . .

श्री अध्यक्ष---

अल्पसूचित प्रश्न कर लें ।

श्री राम प्रकाश यादव---

अध्यक्ष महोदय, इसका पतलब यह है कि जो ज्यादा चिल्लाये, उसी का आप स्वीकार करेंगे . . .

श्री अध्यक्ष---

आप कह रहे हैं कि मैंने स्वीकार करने के लिये कहा था, मैं उसे देखूंगा । वह तो कार्य-वाही में होगा ।

श्री राम प्रकाश यादव---

इसको आप स्वीकार कर लें ।

श्री अध्यक्ष---

कल फिर आप इसको दुहरा दें ।

बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर, द्वारा हरिजन छात्रों को कापियों का वितरण न करने तथा छात्रवृत्ति के दुरुपयोग आदि के संबंध में नियम 49 के अन्तर्गत चर्चा

श्री अध्यक्ष---

कार्यसूची के मद 9 पर कल वक्तव्य हो गया था । इसलिये अब हम कार्यसूची का मद 10 ले रहे हैं ।

*श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)--

मान्यवर, यह विषय जौनपुर के बेसिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय से सम्बन्धित है । यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है । सरकार की तरफ से हरिजनों, गरीब व्यक्तियों या पिछड़ी जाति के लोगों को सुविधा मिलती है । लगभग 5 हजार रुपये का सामान और कापी किताबें थीं जो कि मार्च, 1974 में बांटी जानी चाहिये थी । यह किताबें 72-73 के बजट से खरीदी गई थीं । जून, 1974 तक रखी रहीं जो वर्तमान बेसिक शिक्षा अधिकारी हैं उन्होंने जब दफ्तर वालों से पूछा तो पता चला कि वे बेच दी गई । तब उन्होंने फिर खरीद कर या वापस मंगाकर उन कापी किताबों को हरिजन छात्रों में बांटा । इस प्रकार जो जिम्मेदार लोग हैं, उन्होंने शासनादेश के बावजूद भी इन कापियों को नहीं बांटा, इसके लिये उन्हें कठोर से कठोर दंड मिलना चाहिये ।

दूसरी बात जांच में यह भी आयी कि कापियों को न बांटने के साथ ही साथ जो बेसिक शिक्षा अधिकारी थे उन्होंने कई ऐसे चपरासियों की नियुक्ति कर दी जिनका अनुमोदन शिक्षा विभाग से नहीं हुआ था ।

रिश्वत लेकर 25-30 चपरासियों को भर्ती किया । एक डुप्लीकेटिंग मशीन थी उसको बेच दिया गया जो बच्चों को 5-10 पैसे में कापी दी जानी थी उसके 20-25 पैसे वसूल किये गये । इस प्रकार जौनपुर के बेसिक शिक्षा अधिकारी का कार्यालय जो है चोर-बाजारी और भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ है । वहां पर उपविद्यालय निरीक्षक जो थे वह मिल कर पैसा खाते थे । तो इस सम्बन्ध में जब जांच हुई तो उनको दंड देना चाहिये जो इसके लिये जिम्मेदार हैं जिन्होंने अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह नहीं किया है और तमाम अनियमितायें की हैं और हजारों रुपये खा गये हैं । वहां पर बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जो गड़-बड़ी हुई है उसके लिये उनको कठोर दंड दिया जाना चाहिये तब जाकर के कार्यालय का संचालन ठीक तरह से हो सकेगा ।

श्री अध्यक्ष--

शिक्षा मंत्री जी आप अपना वक्तव्य संक्षेप में दे दें ।

श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)--

अध्यक्ष महोदय...

श्री अध्यक्ष--

पहले एक सदस्य ने रख दिया है उसके बाद संक्षेप में मंत्री उत्तर दे देंगे फिर आपको मौका मिलेगा, स्पष्टीकरण का ।

माध्यमिक शिक्षा मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)--

मान्यवर, यह कापियों का मामला जो है काफी गंभीर था । यह ऐसा हुआ कि इसमें 5022.75 पैसे की कापियां बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर द्वारा खरीदी गई उस समय बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री हरि किशोर लाल थे । यह कापियां हरिजन छात्रों को देनी थीं । ये कापियां खरीद कर दफ्तर में रख दी गईं । उनका पेमेंट दो तारीखों में किया गया । 8 फरवरी, 1974 और 16 दिसम्बर, 1974 को । इसी बीच श्री हरिकिशोर लाल, बेसिक शिक्षा अधिकारी रिटायर हो गये और श्री अच्युतानन्द आये । उन्होंने डिप्टी इन्सपेक्टर

---

*वक्ता ने भाषण का पनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री अम्मार रिजवी]

आफ स्कूल से कहा जब कापियों की गणना कराई जिसमें 351.03 पैसे को कापियां कम पाई गईं और बेसिक शिक्षा अधिकारी ने इस बारे में उप विद्यालय निरीक्षक को कोई उत्तर नहीं दिया और 22 दिसम्बर, 1974 तक 5 महीने गुजर गये और कापियों के वितरण अथवा कमी के बारे में कोई कार्यवाही नहीं की । इसके बाद जांच शुरू हुई और अनियमित रूप से स्वीकृति के बगैर कापियां खरीदने और हरिजन छात्रों में वितरित न करने की जिम्मेदारी श्री जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव व श्री त्रिपाठी पर पाई गई । इस सम्बन्ध में जब छानबीन शुरू हुई तो उसके लिये शिक्षा निदेशक को कहा गया कि जांच कराई जाय और उन्होंने उस समय जो संयुक्त शिक्षा निदेशक, श्री रामहित राम थे उनको यह कार्य दिया । उसमें पता चला कि इसमें यह दो अधिकारी श्री अच्युतानन्द वह हरिकिशोर दोषी हैं तो उनका तबादला वहां से कर दिया गया ।

*श्री माता प्रसाद (जिला जौनपुर)---

मान्यवर, वहां पर बेसिक शिक्षा अधिकारी और डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल में आपस में झगड़ा चल रहा है, दोनों में आपस में मुकदमेंबाजी हो रही है इसके बाद नवम्बर, 1974 में एक अधिकारी श्री गौड़ साहब, जो डिप्टी डाइरेक्टर थे, उन्होंने इन दोनों के बारे में जांच की और उन्होंने सिफारिश की कि इन दोनों अधिकारियों का यहां से ट्रांसफर कर दिया जाये । इस पर श्री शिवशंकर लाल का ट्रांसफर तो कर दिया गया, लेकिन जो बेसिक शिक्षा अधिकारी थे, उनका ट्रांसफर किसी न किसी कारण से नहीं किया जा सका । जैसा कि एक माननीय सदस्य कह रहे है, इनका ट्रांसफर दो बार हुआ था, लेकिन किसी न किसी कारण वह रोक दिया गया । इस बीच शिकायतें आती रहीं हरिजन बच्चों के बारे में तथा अन्य मामलों में । कापियों के न वितरण का मामला जिले में जोर पकड़ने लगा । उसके बाद श्री रामहित, जो पब्लिक सर्विस कमीशन के इस समय मेम्बर है, जो उस समय अतिरिक्त निदेशक थे, वह गये और उन्होंने उसकी विस्तारपूर्वक जांच की और उसके बाद रिपोर्ट आई । लेकिन आश्चर्य है कि मंत्री जी ने कहा कि ट्रांसफर कर दिया गया है, ट्रांसफर उनका हुआ भले हो, लेकिन वह अब भी लखनऊ में मौजूद हैं और प्रयास कर रहे हैं, किसी तरह राजनैतिक असर डलवाकर वह वहां पर हर कीमत पर रहना चाहते है । वह सब लोगों का इस हेतु इस्तेमाल कर रहे हैं । सभी फाइलों को उन्होंने छिपाकर रख दिया है, नये अधिकारी को उनके द्वारा चार्ज नहीं दिया जा रहा है । इससे जो वहां काम कर रहा है, उसको बड़ी परेशानी है । मार्च के बाद जिन स्कूलों को रुपया निकालना था या मान्यता प्राप्त करनी थी, उन सब मामलों की फाइलें वे अपने पास रोके हुये हैं अतः उनका ट्रांसफर तुरन्त किया जाय, वह बड़ी गड़बड़ी कर रहे हैं ।

*श्री राज किशोर तिवारी (जिला जौनपुर)---

मान्यवर, माननीय सदस्यों ने जो कुछ यहां पर कहा है, वह बहुत तोड़-मरोड़ कर आपके सम्मुख रखा है । मैं बड़े स्पष्ट रूप से आपके सामने सारी परिस्थितियों को बताना चाहता हूं और उन पर सदन के सम्मुख प्रकाश डालना चाहता हूं । इससे मेरा अपना भी सम्बन्ध रहा है । वह इस प्रकार है कि वहां पर डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल, श्री शिवशंकर लाल के खिलाफ जिला कांग्रेस कमेटी के एक सदस्य श्री आत्माराम ने दरख्वास्त दी थी कि इनकी जांच की जाय । (व्यवधान) इस तरह की बातें करके यह लोग अपराधी को छिपाना चाहते है, उसी दिन की तरह की कार्यवाही आज यह करना चाहते है । मैं निवेदन कर रहा था कि उनके खिलाफ लाखों रुपये के गोलमाल की शिकायतें थीं, वे बिलकुल सही पाई गईं । उस सम्बन्ध में मैंने माननीय मुख्य मंत्री जी और तत्कालीन शिक्षा मंत्री जी को लिखा था और उनसे बात की थी कि लाखों रुपये के गोलमाल के सम्बन्ध में सी0 आई0 डी0 या विभागीय अधिकारियों द्वारा शीघ्र जांच कराई जाय ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

जहां तक मेरी जानकारी है इन दोनों जरियों से जांच हुई और उसमें जांच के बीच में ही जैसी-साजिश आप देख रहे हैं, सब लोगों ने मिलकर सोचा कि वास्तविक अपराधी को कैसे बचाया जाय और इस तरह का प्रयास होने लगा कि सारे रिकार्ड और पत्रावलियों को किसी न किसी तरह से हटा दिया जाय, ताकि अपराधी को दंड मिलने से बचाया जा सके । इस सम्बन्ध में मैंने मुख्य मंत्री जी से स्पष्ट बात की, वहां की फाइलें छिपाने का प्रयास किया जा रहा है । (व्यवधान) वे लोग चाहते हैं कि वह वहां से हट जायें ताकि सारे कागजात हमारे हाथ में लग जायं ।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)--

आपका भी उनसे कुछ रिश्ता है मालूम पड़ता है ।

*श्री राज किशोर तिवारी--

जहां तक वहां के बेसिक शिक्षा अधिकारी के ट्रांसफर का सवाल है आप वह अवश्य कर दें, लेकिन वहां के रिकार्ड वगैरह पर आप किसी न किसी प्रकार अधिकार अपना अवश्य कर लें । मैं इस सम्बन्ध में यह भी सूचना देना चाहता हूं कि 2 अलमारियों को वहां पर जबरदस्ती तोड़ा गया है और जो उन लोगों के फंसने वाले कागजात थे, उनको जला दिया गया है । इस कांड की रिपोर्ट विभाग के अधिकारियों को और पुलिस अधिकारियों के पास कर दी गई है ।

श्री अध्यक्ष--

आप को सारी चीजें मालूम हैं । सूचना आप दे रहे है । आपको स्पष्टीकरण नहीं चाहिये ।

(व्यवधान)

श्री राज किशोर तिवारी--

मेरी रिश्तेदारी उनसे है और इनके रिश्तेदार शिवशंकर सिंह हैं ।

श्री अध्यक्ष--

माननीय ओम प्रकाश ।

श्री हरिकेवल (जिला देवरिया)--

श्रीमन्, मैं आपके सामने एक फोटो पेश करना चाहता हूं ।

(शोर)

श्री राजकिशोर तिवारी--

जो ताला तोड़ा गया वह किन परिस्थितियों में तोड़ा गया ?

एक सदस्य--

दो प्रश्न केवल पूछना चाहूंगा ।

श्री अध्यक्ष--

बाकी सूचना दी है । ताला तोड़ने का जवाब दे दें ।

एक सदस्य--

रिपोर्ट पूरी पढ़ दें । स्थिति अपने आप स्पष्ट हो जायेगी ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री हरिकेवल--

12 तारीख से 16 तारीख तक संयुक्त निदेशक ने जो जांच किया है उसकी रिपोट क्या है ?

श्री अम्मार रिजवी--

यह जांच रिपोर्ट है। श्री रामहेत द्वारा श्री अच्युतानन्दन त्रिपाठी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर के विरुद्ध की गयी शिकायतों के सम्बन्ध में जांच आख्या । मान्यता प्राप्त जूनियर हाई स्कूल, राजेपुर तथा माऊपुर को ग्रान्ट इन एड के मद में 1973--74 में बेसिक निधि से मार्च, 1974 में प्रत्येक को दो-दो हजार रुपया दे दिया गया । पुनः मई, 1974 में मिली 4,000 रु0 की ग्रान्ट के ड्राफ्ट जून, 1974 में भुना कर जुलाई, 1974 में वितरित दिखाकर श्री अच्युतानन्द त्रिपाठी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर खा गये । इन विद्यालयों को प्रति वर्ष दो-दो हजार रुपये की ग्रान्ट मिलती है । वर्ष 1973--74 में प्रत्येक को चार-चार हजार रुपया दिया हुआ दिखाया गया है । यह आरोप था । जांच आख्या--- "जिला निदेशालय के पत्र संख्या" नम्बर दिया हुआ है 'दिनांक 16 जनवरी, 1974 द्वारा निम्नलिखित दो विद्यालयों को अनावर्तक तदर्थ अनुदान स्वीकृत हुआ । यह सूचित किया गया कि अनुदान का बैंक ड्राफ्ट यथा समय भेजा जायेगा ।

1---शंकर विद्यालय, बरौत, जौनपुर,

2---बाबा ब्रह्मादास जूनियर हाई स्कूल, राजेपुर, जौनपुर।

रुपया 6,000 के बैंक ड्राफ्ट शिक्षा निदेशालय से पत्र संख्या अर्थ 1/3015 दस--ई--1/(6)/73--74 दिनांक 21 मई, 1974 द्वारा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जौनपुर को भेजे गये जो रुपया 2,000 की दर से निम्नलिखित तीन विद्यालयों के लिये था:

1---शंकर विद्यालय, बरौत, जौनपुर,

2---बाबा ब्रह्मादास जूनियर हाई स्कूल, राजेपुर, जौनपुर,

3---सरस्वती बाल मंदिर, उर्दू बाजार, जौनपुर।

परन्तु तत्कालीन बेसिक शिक्षा अधिकारी, श्री हरिकिशोर लाल ने बिना अधिकार पत्र के 4,000 रु0 की धनराशि बिल नम्बर 424, दिनांक 2 मार्च, 1974 द्वारा राजकोष से आहरित करके जूनियर हाई स्कूल, बरौत को 4 मार्च, 1974 को तथा राजेपुर को 5 मार्च, 1974 को भुगतान कर दिया ।

दूसरी ओर जब बैंक ड्राफ्ट प्राप्त हुआ तो वर्तमान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने उसे 11 जुलाई, 1974 को कैश करके 2,000 रु0 की धनराशि सरस्वती बाल मन्दिर को 11 जुलाई, 1974 को भुगतान किया । शेष 4,000 रु0 में से बाबा ब्रह्मादास जूनियर हाई स्कूल, राजेपुर को रु0 2,000 का भुगतान 29 जुलाई, 1974 को कर दिया। इस प्रकार जूनियर हाई स्कूल राजेपुर को दोहरा भुगतान हो गया । शेष 2,000 रु0 की धनराशि 12 जनवरी, 1975 (6 महीने) तक हाथ में रखने के बाद 13 जनवरी, 1975 को बेसिक निधि में जमा कर दी गयी।

इस प्रकार:---

(1) 4,000 रुपये की धनराशि तत्कालीन बेसिक शिक्षा अधिकारी, श्री हरकिशोर लाल ने बिना अधिकार-पत्र के राजकोष से आहरित की ।

(2) वर्तमान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने---

(अ) जूनियर हाई स्कूल, राजेपुर को 11 जुलाई, 1974 को 2,000 रुपया पुनः भुगतान कर दिया । 18 दिन धनराशि हाथ में रखी ।

(ब) 2,000 रुपये 6 महीने हाथ में नगद रखने के बाद बेसिक निधि में जमा कर दिया । इसे राजकोष में जमा होना था ।

(स) सम्बन्धित विद्यालयों की रोकड़ पंजिका मंगाई गई थीं । प्रधानाध्यापक/प्रबन्धक रोकड़ पंजिकाओं सहित जांच में नहीं आये ।

उत्तरदायी व्यक्ति

1--भूतपूर्व बेसिक शिक्षा अधिकारी, श्री हरकिशोर लाल,

2--वर्तमान बेसिक शिक्षा अधिकारी, श्री अच्युतानन्द त्रिपाठी,

3--प्रबन्धक जूनियर हाई स्कूल, राजेपुर, जौनपुर ।

हरिजन छात्रों को निःशुल्क वितरित--

श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव (जिला जौनपुर)--

मान्यवर, जब श्री अच्युतानन्द त्रिपाठी के पास रिपोर्ट आई कि कापियां कम हैं तो मैं जानना चाहूंगा कि क्या उन्होंने कोई एफ0आई0आर0 दर्ज कराई कि हमारे स्टोर रूम में चोरी हो गई है ? दूसरे श्री शिवशंकर सिंह, डी0आई0 जिन्होंने 24-25 आदमियों को नियुक्त कर लिया था जब कि सरकारी आदेश थे कि कोई नियुक्ति नहीं की जायेगी क्योंकि उन दिनों में पैसा लेकर नियुक्ति करने की शिकायतें थीं तो क्या इस सिलसिले में कोई जांच कराई है ? यदि हां, तो उसका क्या नतीजा है ?

श्री अम्मार रिजवी--

मान्यवर, जहां तक पहले प्रश्न का सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में कोई एफ0आई0आर0 नहीं दर्ज कराई गई । जहां तक दूसरे सवाल का ताल्लुक है, श्री शिवशंकर सिंह के खिलाफ बहुत से आरोप हैं और दोनों के ऊपर काफी आरोप ह ।

श्री अध्यक्ष--

आपने क्या कार्यवाही की, यह बताइये ?

श्री अम्मार रिजवी--

इसकी जांच कराई गई और दोनों को वहां से हटा दिया गया ।

श्री काशीनाथ मिश्र--

मैंने यही कहा कि जांच से मालूम होना चाहिये कि क्या दंड दिया गया ?

श्री अम्मार रिजवी--

उस दिन भी बहुत से तथ्यों की मैं सूचना देना चाहता था कि अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है कि किस का कितना उत्तरदायित्व कहां पर था । इसके अन्दर तीन लोग हैं ।

श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव--

मान्यवर, मंत्री जी अपने वक्तव्य के खिलाफ कह रहे हैं । उन्होंने निश्चित रूप से अधिकारियों का नाम लिया है । तीन आदमियों का अगर दोष साबित हो गया तो फिर उनको मुअत्तल करने में उनको क्या दिक्कत हो रही है ?

श्री अम्मार रिजवी--

उनको वहां से हटा दिया गया है । उनका स्वतंत्र चार्ज हटा लिया है ।

श्री काशीनाथ मिश्र---

एक जिले में बेचकर दूसरे जिले में जाकर बेचें इसलिये हटा दिया गया है ।

श्री राम शिरोमणि (जिला जौनपुर)---

मान्यवर, जैसा कि तिवारी जी ने कहा कि मंत्री जी से निवेदन किया था कि उनका तबादला कर दिया जाय । लेकिन सारे कागजात सील कर लिये जायं, वरना नष्ट हो जायेंगे । ऐसा मालूम हुआ है कि सारे कागजात नष्ट हुये हैं, क्या इसकी उनको जानकारी है ?

श्री अम्मार रिजवी---

जहां तक ताला तोड़ने का सवाल है, मेरी सूचना इस प्रकार की है कि तीन दिन का नोटिस दिया गया । जब उनको तबादले का पता चला, कैसे चला यह पता नहीं, तो वह तीन दिन की छट्टी पर चले आये और फिर नहीं गये । उनकी अनुपस्थिति में दूसरे को चार्ज दिलाया गया । जब कागजात की देखभाल होने लगी और मार्च का महीना था और उनकी जरूरत थी तो उनको तीन दिन का नोटिस फिर दिया गया ।

लेकिन उसके बाद 3-4 अधिकारी जो थे वहां पर मौजूद रहे और उनके सामने कागज निकाला गया ।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)---

क्या माननीय मंत्री जी बतायेंगे कि जब डिप्टी डायरेक्टर की इन्क्वायरी में यह तय हो गया कि दो हजार रुपये का उन्होंने घपला कर लिया और दो हजार रुपये अपने पास रख कर फिर जमा कर दिया । तो उनको मुअत्तल करने में और इस बात की रिपोर्ट करने में सरकार को क्या आपत्ति है ? ट्रांसफर तो कोई सजा नहीं है । यह तो लूट के लिये छूट है ।

श्री अम्मार रिजवी---

मैं, मान्यवर, आपके द्वारा माननीय सदस्यों को यह आश्वासन देना चाहूंगा कि जो डिसिप्लिनरी ऐक्शन है वह सिर्फ हो सकता है । जब कोई सरकारी अधिकारी को दंड दिया जाता है तो काफी छानबीन की जाती है । जो भी आदमी मुजरिम पाया जायगा उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जायेगी ।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक---

ऐसी लीपापोती मंत्री लोग करते हैं ।

श्री राम अधार---

मान्यवर, आरोप पत्र माननीय मंत्री जी ने पढ़ कर सुनाया और हमारे जौनपुर के जो माननीय सदस्य हैं उन्होंने कहा कि गबन किया है, लगता ऐसा है कि इनका दो-दो बार ट्रांसफर हुआ और सरकार के दबाव से रोक दिया गया, तो मान्यवर, मैं जानना चाहूंगा कि क्या मुअत्तल तो नहीं कर रहे हैं ? आप जौनपुर से उनको आजमगढ़ भेज रहे हैं, क्या आजमगढ़ ही चरागाह है ? आजमगढ़ के माननीय सदस्य बैठे हुये हैं, अगर आजमगढ़ में जायेंगे तो ऐसे भ्रष्ट अधिकारी को हम लोग वहां पर एक दिन भी नहीं रहने देंगे ।

श्रम मंत्री (श्री राज मंगल पाण्डेय)---

मान्यवर, टेम्पोरेरी मिसऐ प्रोप्रियेशन की बात जो कही जा रही है, सस्पेंशन किस ग्राउन्ड पर होता है उसमें एक बहुत बड़ा व्यवधान यह है कि जिस अधिकारी को हम सस्पेंड करें कि उसके डिस्मिसल के इतने चांसेज हों, तब तो सस्पेंड करें, इसलिये सस्पेंशन से कभी-कभी हमारे जो अधिकारी हैं वे हिचक जाते हैं, फिर भी माननीय सदस्यों की भावना के अनुसार मैं अपने सहयोगी से कहूंगा कि वह उसको देख लेंगे ।

बाबा राम नाथ (जिला मैनपुरी)--

माननीय शिक्षा मंत्री जी मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूं । जब डिप्टी डायरेक्टर की रिपोर्ट से यह साबित हो गया कि यह व्यक्ति दोषी है तो फिर क्यों नहीं पुलिस को दिया है ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया ।)

श्री उमानाथ (जिला जौनपुर)--

माननीय ओम प्रकाश जी ने एक पत्र माननीय मुख्य मंत्री जी को लिखा, एक चन्द्र प्रकाश, इन्सपेक्टर आफ स्कूल थे, उनके सहयोगी अच्युतानन्द हैं, गबन के आरोप उनके खिलाफ हैं दो बार इनका ट्रांसफर रोका जाता है, आज भी वह लखनऊ का चक्कर कर रहे हैं, वे हमसे भी मिले ।

श्री अध्यक्ष--

माननीय काशी नाथ मिश्र एक और सवाल कर लें ।

श्री हरिकेवल--

फोटो दिखाते हुये, माननीय अध्यक्ष महोदय.....

श्री अध्यक्ष--

हम यहां से कैसे फोटो देख सकते हैं ? इसको हमें पहिले दिखा देते ।

श्री हरिकेवल--

मैं इसको आपके पास कार्यवाही के लिये भेज देता हूं ।

श्री राम सुन्दर पाण्डेय (जिला आजमगढ़)--

आजमगढ़ और जौनपुर में तो कोई फर्क नहीं है । अगर तकलीफ देनी है तो कहीं दूर भेजिये ।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक--

आजमगढ़ के बजाय पिथौरागढ़ भेजिये ।

श्री काशीनाथ मिश्र--

इस बहस से यह पता चलता है कि जौनपुर के जो सदस्य हैं चाहे इधर के बैठने वाले हों या उधर के बैठने वाले, किसी न किसी से प्रभावित हैं और वे पक्ष ले रहे हैं । कुछ लोग..

श्री उमानाथ--

दोनों को मुअत्तल किया जाये ।

श्री काशीनाथ मिश्र--

कुछ लोग त्रिपाठी जी का पक्ष ले रहे हैं और कुछ दूसरे का, मेरे ऊपर ऐसा असर पड़ा है । पाण्डेय जी ने कहा कि सारी बात को जांच करके जिसकी जितनी गलती पाई जाये उसको दंड दिया जाये, तभी हम प्रदेश को स्वच्छ बना सकते हैं ।

श्री त्रिवेनी (जिला आजमगढ़)--

आजमगढ़ में न भेजकर कहीं पहाड़ी जिलें में भेजें, ससपेंड वगैरह बाद में करें । किसी पहाड़ी जिले में भेज दिया जाये ।

श्री अध्यक्ष--

अगर मंत्री जी को लेना ही है तो अपने दिल में क्यों नहीं ले लेते ।

(हंसी)

श्री अम्मार रिजवी--

उनके खिलाफ जो भी प्रोसीडिंग हो रही है, उसमें कोई भी अधिकारी कानून की गिरफ्त से बच नहीं सकता है । गलती मिलेगी तो उसको दन्ड दिया जायेगा ।

श्री अध्यक्ष--

अब हम उठते है कल 11 बजे फिर मिलेंगे ।

(इसके बाद सदन 5 बजकर 53 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ:
1 अप्रैल, 1975 ।

नत्थी 'क'

(देखिये तारांकित प्रश्न संख्या 2 का उत्तर पीछे पृष्ठ 85 पर)

त्वरित योजनाअन्तर्गत कठपरिया, पनियाली मोटर मार्ग पर 1 जनवरी, 1972 से अब तक कुल 2,01,575.86 रु0 व्यय हो चुका है । मदवार किया गया व्यय इस प्रकार है:—

	रु0
1—मिट्टी के कार्य पर	28,349.00
2—सोलिंग सामग्री का क्रय	39,144.96
3—इन्टर कोट सामग्री का क्रय	27,664.00
4—सोलिंग व इन्टर कोट सामग्री की कुटाई पर व्यय ..	14,821.89
5—कोल तार तथा पेन्टिंग पर व्यय	28,206.10
6—औजार तथा अन्य मदों पर व्यय	11,456.95
7—पुलिया निर्माण एवं पक्के कार्य पर व्यय	51,932.96
योग .	2,01,575.86

नत्थी 'ख'

(देखिये अतारांकित प्रश्न संख्या 11 का उत्तर पीछे 38 पृष्ठ पर ।)

संलग्नक

चिकित्सालय	चिकित्सालयों की संख्या	चिकित्सक विहीन चिकित्सालय की संख्या	अभ्युक्ति
1—एलोपैथिक	1,416	84	इनमें से 72 डाक्टरों की नियुक्ति सम्बन्धी आदेश प्रसारित कर दिये गये हैं तथा शेष 12 में नियुक्ति हेतु कार्यवाही की जा रही है ।
2—इन्टीग्रेटेड	230	30	इनमें डाक्टरों की नियुक्ति सम्बन्धी कार्यवाही की जा रही है ।
3—आयुर्वेदिक	816	129	इन चिकित्सालयों में चिकित्सकों की नियुक्ति की कार्यवाही की जा रही है । अभ्यर्थियों का चयन कर लिया गया है ।
4—यूनानी	101	8	
5—होम्योपैथिक	सूचना एकत्र की जा रही है ।		

पी० एस० यू० पी०—ए० पी०—55 वि० सभा (4460)—1975—840 (प्रो०) ।